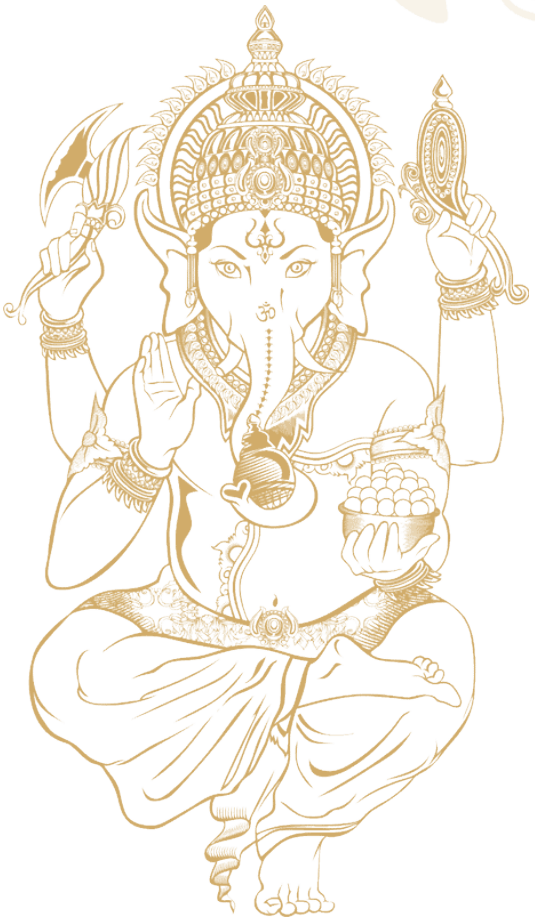

Mr.

17 Jul 1963

09:55 AM

Mhow

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120093001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**17/07/1963**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**09:55:00 घंटे**
इष्ट	10:08:24 घटी
स्थान	**Mhow**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	22:32:00 उत्तर
रेखांश	75:49:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:26:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	09:28:16 घंटे
वेलान्तर	-00:05:58 घंटे
साम्पातिक काल	05:05:24 घंटे
सूर्योदय	05:51:38 घंटे
सूर्यास्त	19:13:40 घंटे
दिनमान	13:22:02 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	00:32:51 कर्क
लग्न के अंश	24:03:45 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**रोहिणी - 1**
नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
योग	गण्ड
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ओ-ओमप्रकाश
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1885	आषाढ़	26
पंजाबी	संवत : 2020	श्रावण	2
बंगाली	सन् : 1370	श्रावण	1
तमिल	संवत : 2020	आदी	1
केरल	कोल्लम : 1138	कर्कदम	1
नेपाली	संवत : 2020	श्रावण	2
चैत्रादि	संवत : 2020	श्रावण	कृष्ण 11
कार्तिकादि	संवत : 2020	आषाढ़	कृष्ण 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 11
तिथि समाप्ति काल _____: 10:50:54
जन्म तिथि _____: 11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: कृतिका
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 06:31:55 घंटे
जन्म योग _____: रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग _____: गण्ड
योग समाप्ति काल _____: 11:06:22 घंटे
जन्म योग _____: गण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 10:50:54 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 08:27:41
भभोग _____: 55:44:48
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 8 वर्ष 5 मा 23 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सर्प
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

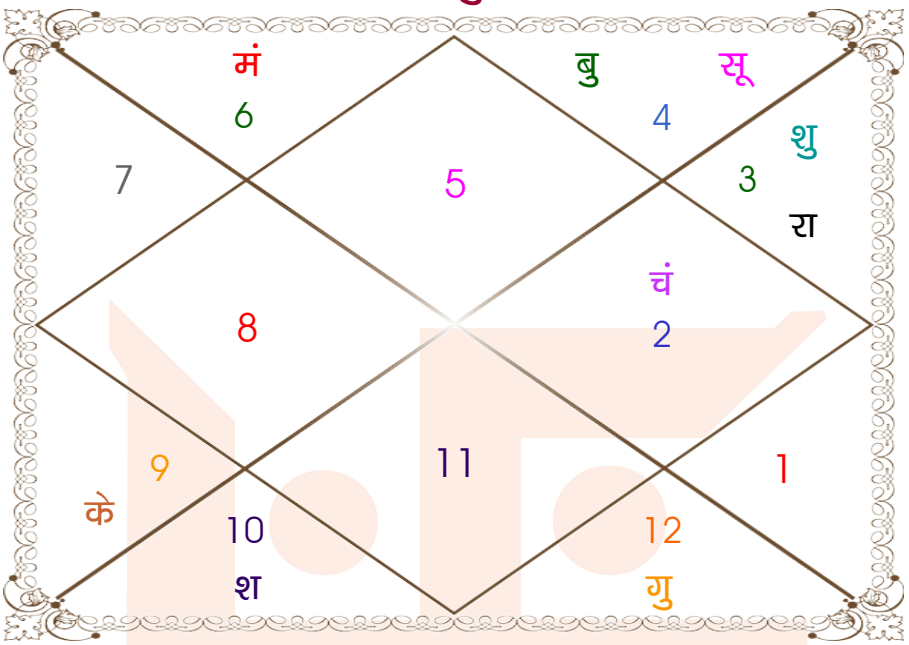

चन्द्र कुंडली

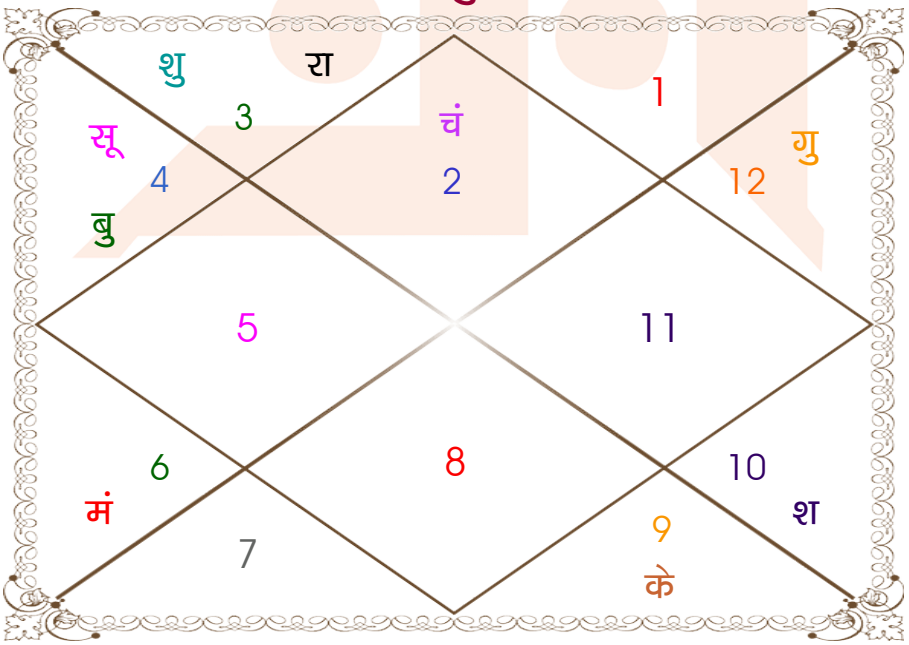

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

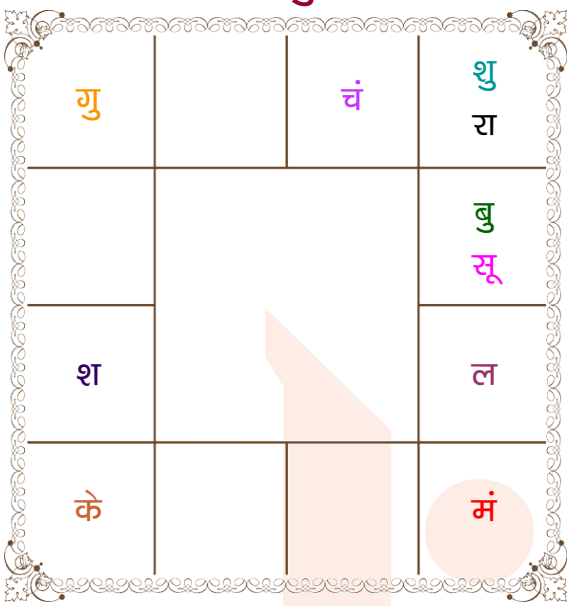

लग्न कुंडली

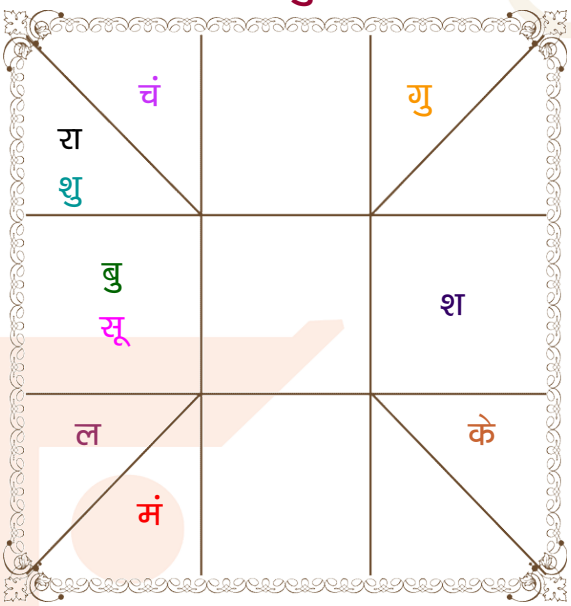

विंशोत्तरी
चन्द्र 8वर्ष 5मा 23दि

चन्द्र

17/07/1963

08/01/2082

चन्द्र	08/01/1972
मंगल	08/01/1979
राहु	07/01/1997
गुरु	07/01/2013
शनि	08/01/2032
बुध	07/01/2049
केतु	08/01/2056
शुक्र	08/01/2076
सूर्य	08/01/2082

योगिनी
सिद्धा 5वर्ष 11मा 7दि

भद्रिका

24/06/2023

23/06/2028

भद्रिका	03/03/2024
उल्का	02/01/2025
सिद्धा	23/12/2025
संकटा	01/02/2027
मंगला	24/03/2027
पिंगला	04/07/2027
धान्या	03/12/2027
भ्रामरी	23/06/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	24:03:45	331:59:48	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	---
सूर्य			कर्क	00:32:51	00:57:15	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			वृष	12:01:36	14:22:06	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	मूलत्रिकोण
मंगल			कन्या	00:42:11	00:35:16	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
बुध		अ	कर्क	04:24:12	02:05:57	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	शत्रु राशि
गुरु			मीन	25:15:11	00:04:27	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	स्वराशि
शुक्र			मिथु	18:32:12	01:13:30	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	मित्र राशि
शनि	व		मक	28:19:04	00:03:41	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	स्वराशि
राहु			मिथु	27:05:47	00:00:22	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	उच्च राशि
केतु			धनु	27:05:47	00:00:22	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	सूर्य	उच्च राशि
हर्ष			सिंह	09:45:09	00:03:06	मघा	3	10	सूर्य	केतु	शनि	---
नेप	व		तुला	19:33:54	00:00:16	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	---
प्लूटो			सिंह	16:58:13	00:01:33	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			वृष	24:05:33	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	मंगल	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:20:36

लग्न-चलित

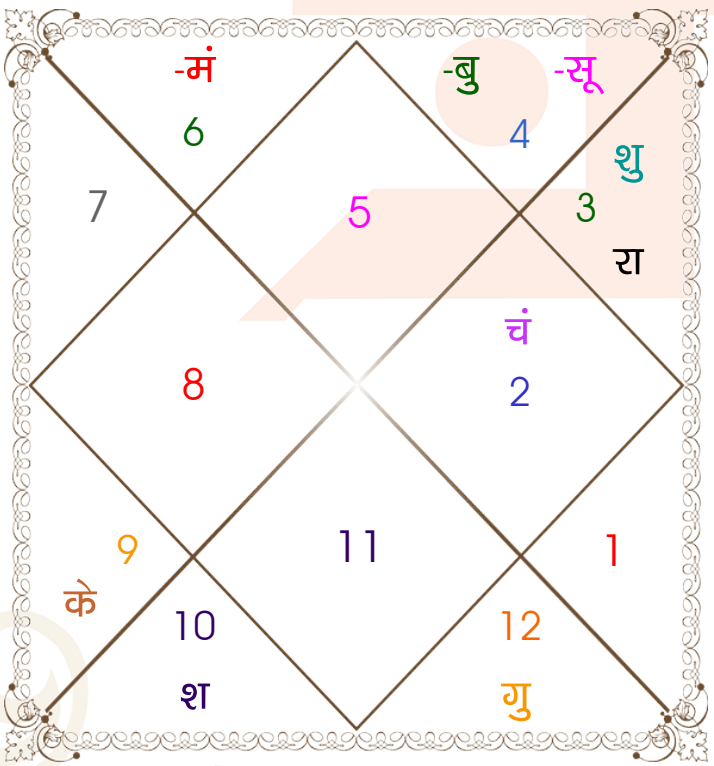

चन्द्र कुंडली

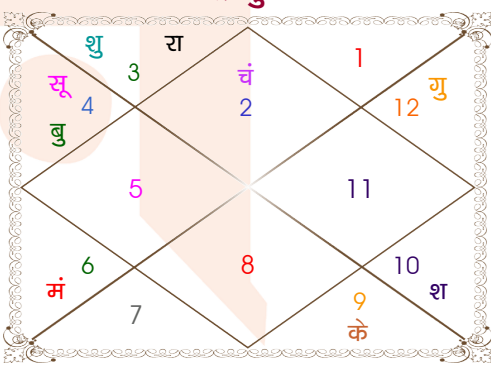

नवमांश कुंडली

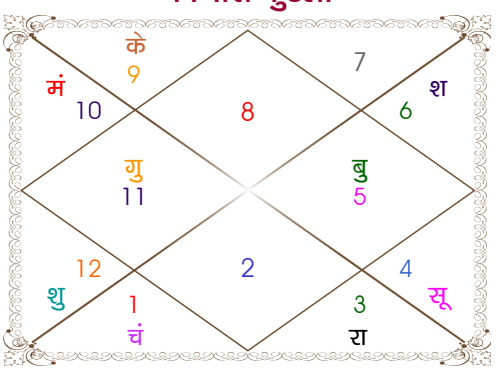

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	09:04:03	सिंह	24:03:45
2	कन्या	09:04:03	कन्या	24:04:21
3	तुला	09:04:39	तुला	24:04:57
4	वृश्चिक	09:05:15	वृश्चिक	24:05:33
5	धनु	09:05:15	धनु	24:04:57
6	मकर	09:04:39	मकर	24:04:21
7	कुम्भ	09:04:03	कुम्भ	24:03:45
8	मीन	09:04:03	मीन	24:04:21
9	मेष	09:04:39	मेष	24:04:57
10	वृष	09:05:15	वृष	24:05:33
11	मिथुन	09:05:15	मिथुन	24:04:57
12	कर्क	09:04:39	कर्क	24:04:21

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	24:03:45
2	कन्या	22:31:10
3	तुला	23:04:44
4	वृश्चिक	24:05:33
5	धनु	24:44:50
6	मकर	24:55:37
7	कुम्भ	24:03:45
8	मीन	22:31:10
9	मेष	23:04:44
10	वृष	24:05:33
11	मिथुन	24:44:50
12	कर्क	24:55:37

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

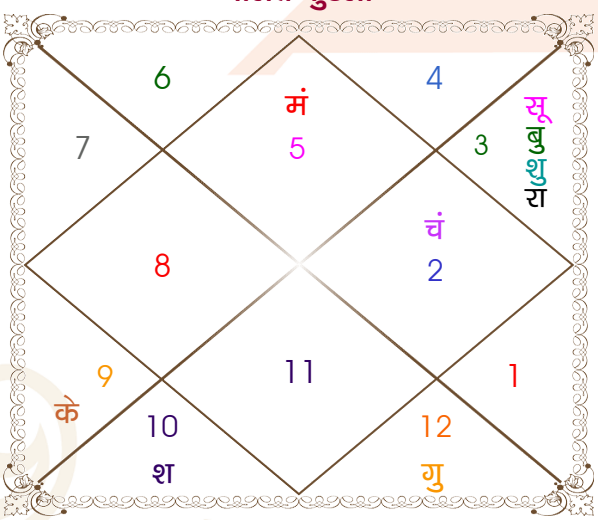

भाव कुंडली

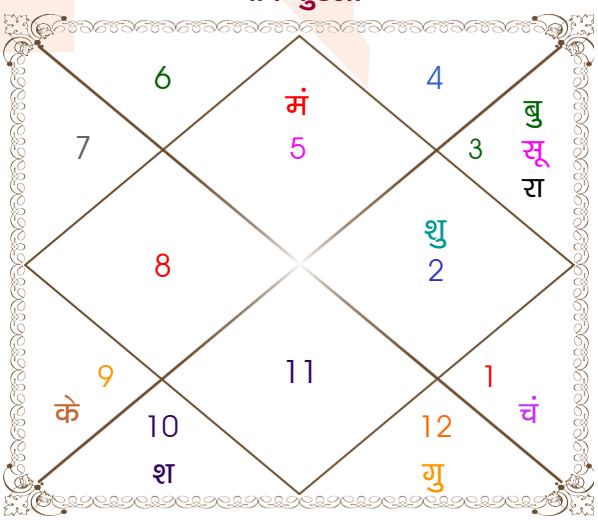

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत	मुदित	उपवेशन	7.37	64 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	नेत्रपाणि	17.10	69 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	मृत	खल	सभा	0.91	38 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	मृत	विकल	कौतुक	0.00	47 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	स्वस्थ	सभा	4.68	68 %
शुक्र	भ्रातृ	कलत्र	वृद्ध	मुदित	सभा	5.83	39 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	स्वस्थ	प्रकाश	3.40	48 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	दीप्त	सभा	0.00	79 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	दीप्त	प्रकाश	0.00	79 %
कुल						39.29	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली

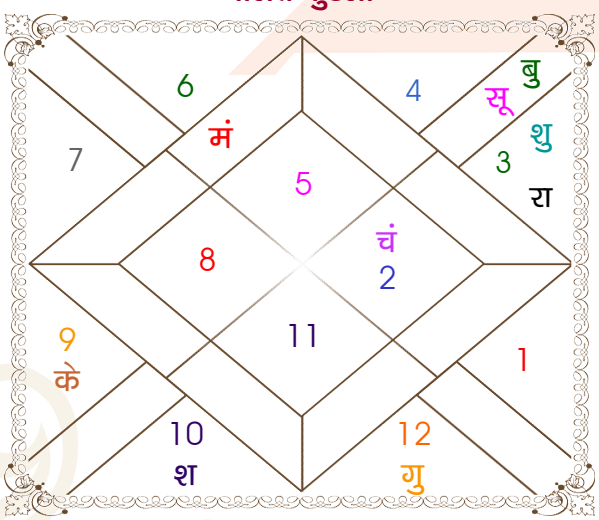

लग्न-चलित

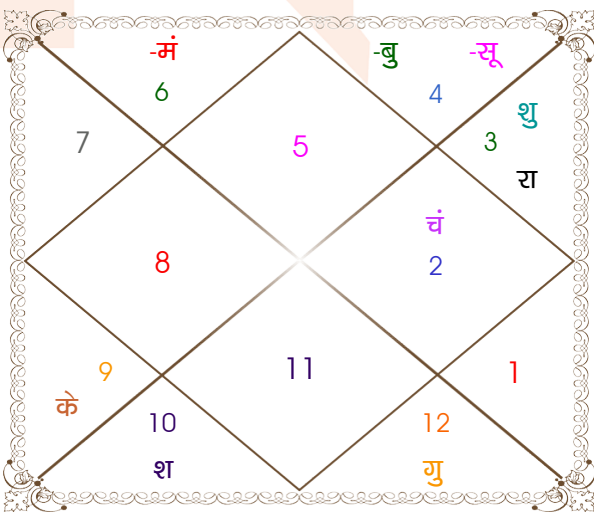

सुदर्शन चक्र

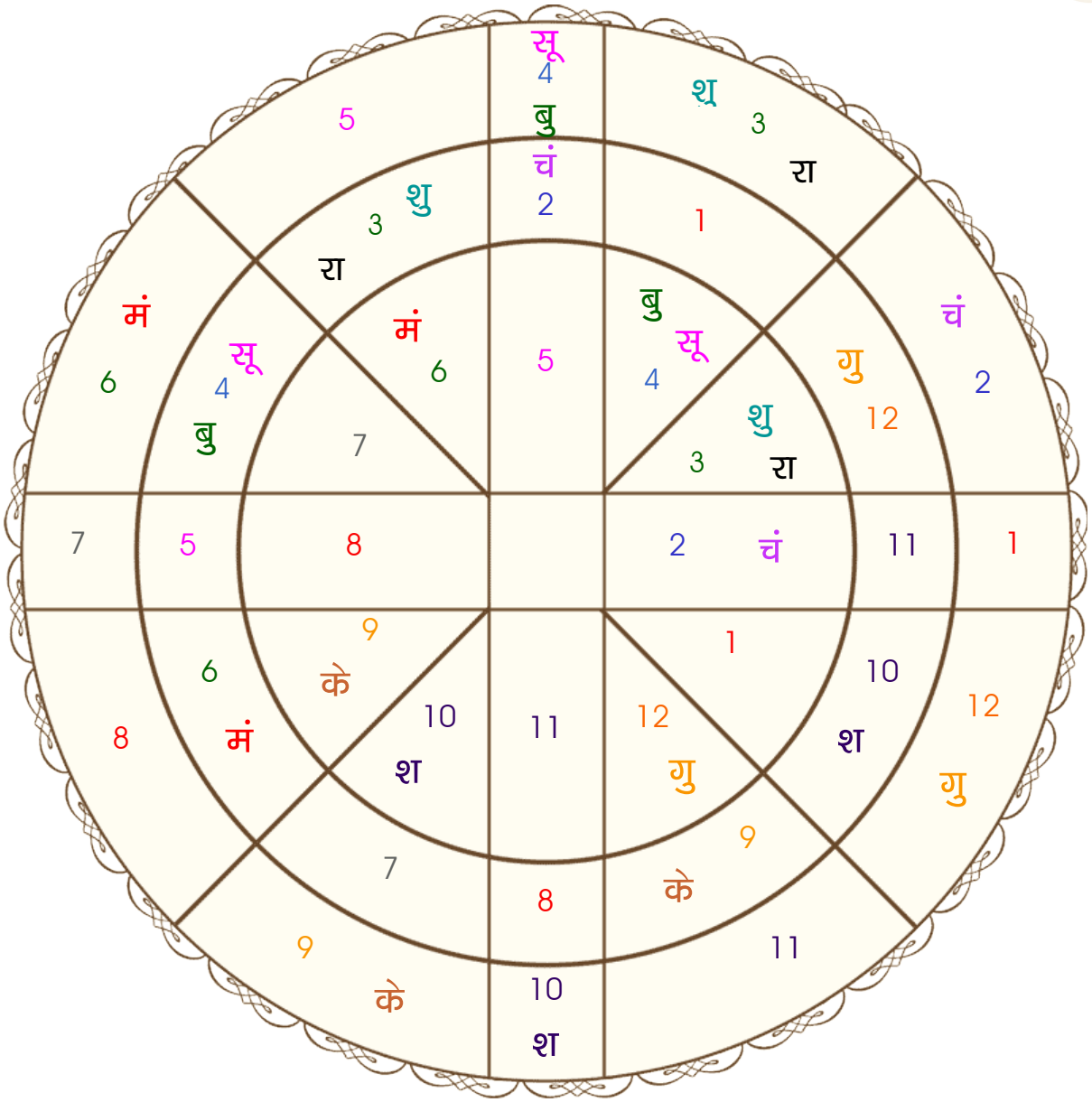

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : चन्द्र 8 वर्ष 4 मास 26 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	00:38:40	चंद्र	गुरु	मंगल	राहु
चंद्र		वृष	12:07:25	शुक्र	चंद्र	राहु	राहु
मंगल		कन्या	00:48:01	बुध	सूर्य	राहु	शुक्र
बुध		कर्क	04:30:01	चंद्र	शनि	शनि	सूर्य
गुरु		मीन	25:21:00	गुरु	बुध	राहु	केतु
शुक्र		मिथु	18:38:02	बुध	राहु	चंद्र	शनि
शनि	व	मक	28:24:53	शनि	मंगल	शनि	बुध
राहु		मिथु	27:11:36	बुध	गुरु	शुक्र	चंद्र
केतु		धनु	27:11:36	गुरु	सूर्य	सूर्य	केतु
हर्ष		सिंह	09:50:58	सूर्य	केतु	शनि	बुध
नेप	व	तुला	19:39:43	शुक्र	राहु	मंगल	बुध
प्लूटो		सिंह	17:04:03	सूर्य	शुक्र	चंद्र	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	24:09:35	सूर्य	शुक्र	बुध	बुध
2	कन्या	22:36:59	बुध	चंद्र	शुक्र	केतु
3	तुला	23:10:34	शुक्र	गुरु	शनि	मंगल
4	वृश्चि	24:11:23	मंगल	बुध	राहु	राहु
5	धनु	24:50:39	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्र
6	मक	25:01:26	शनि	मंगल	राहु	बुध
7	कुंभ	24:09:35	शनि	गुरु	बुध	केतु
8	मीन	22:36:59	गुरु	बुध	चंद्र	गुरु
9	मेष	23:10:34	मंगल	शुक्र	शनि	चंद्र
10	वृष	24:11:23	शुक्र	मंगल	राहु	राहु
11	मिथु	24:50:39	बुध	गुरु	बुध	मंगल
12	कर्क	25:01:26	चंद्र	बुध	राहु	बुध

के.पी. अयनांश : 23:14:47

फॉरच्युना : कर्क 05:38:20

लग्न कुंडली

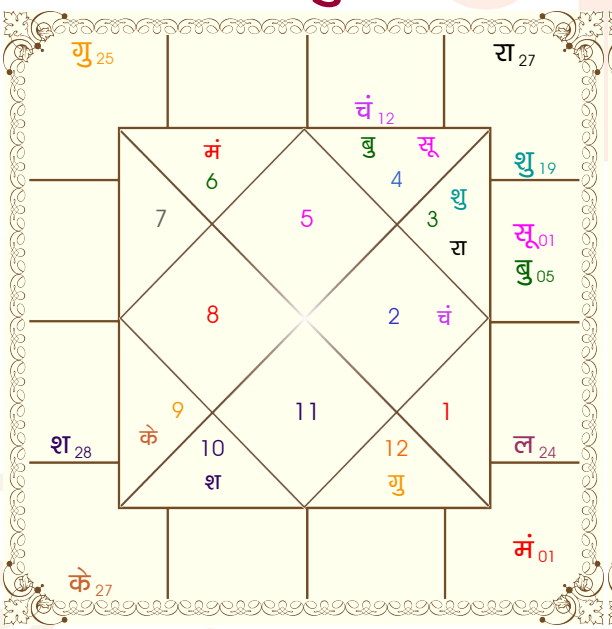

भाव कुंडली

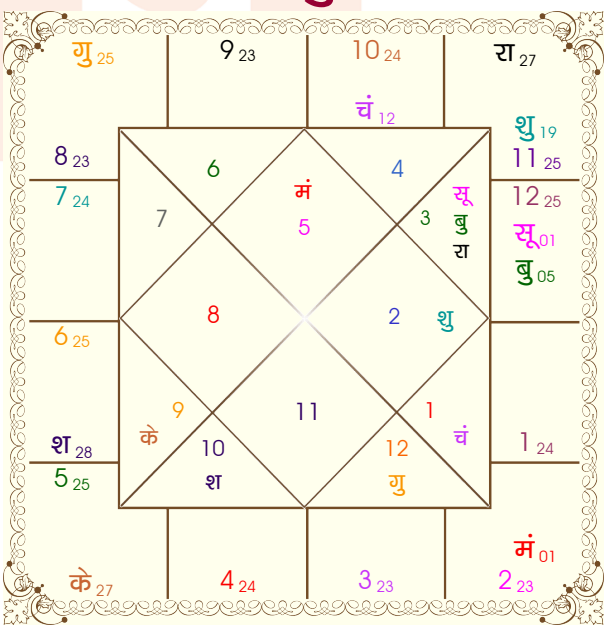

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- मंगल+ शनि, केतु-
2	बुध- गुरु-
3	शुक्र-
4	मंगल- शनि-
5	सूर्य- गुरु- राहु- केतु,
6	बुध+ शनि,
7	बुध- शनि-
8	सूर्य+ गुरु, राहु+
9	चंद्र+ मंगल- शनि-
10	शुक्र,
11	सूर्य, मंगल, बुध, गुरु+ शुक्र, राहु, केतु,
12	चंद्र,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 5- 8+ 11,
चंद्र	9+ 12,
मंगल	1+ 4- 9- 11,
बुध	2- 6+ 7- 11,
गुरु	2- 5- 8, 11+
शुक्र	3- 10, 11,
शनि	1, 4- 6, 7- 9-
राहु	5- 8+ 11,
केतु	1- 5, 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	श	मं	मं के	सू
2	--	--	गु	बु
3	--	--	--	शु
4	--	--	श	मं
5	--	के	सू रा	गु
6	बु	श	बु	श
7	--	--	बु	श
8	सू रा	गु	सू रा	गु
9	चं	चं	श	मं
10	--	शु	--	शु
11	मं गु शु के	सू बु रा	गु	बु
12	--	--	चं	चं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	1	---	कर्क	11
चंद्र	12	2	वृष	9
मंगल	4,9	6,10	कन्या	1
बुध	2,11	4,8,12	कर्क	11
गुरु	5,8	3,7,11	मीन	8
शुक्र	3,10	1,5,9	मिथुन	10
शनि	6,7	---	मकर	6
राहु	---	---	मिथुन	11
केतु	---	---	धनु	5

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	5,8	3,7,11	8	4,9	6,10	1
चंद्र	12	2	9	---	---	11
मंगल	1	---	11	---	---	11
बुध	6,7	---	6	6,7	---	6
गुरु	2,11	4,8,12	11	---	---	11
शुक्र	---	---	11	12	2	9
शनि	4,9	6,10	1	6,7	---	6
राहु	5,8	3,7,11	8	3,10	1,5,9	10
केतु	1	---	11	1	---	11

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	90.55	42.03	150.70	94.40	355.25	78.54	298.32	87.10	267.10	129.75	199.56	136.97
सूर्य	--	--	तृती	युति	--	युति	--	युति	सप्त	नवां	--	--
90.55	0.00	0.00	3.00	9.20	0.00	3.08	0.00	9.35	9.35	0.32	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	अष्ट	--	चतु	--	चतु
42.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.99	0.00	2.48	0.00	0.82
मंगल	--	--	--	--	8वां	--	--	--	पंच	--	--	युति
150.70	0.00	0.00	0.00	0.00	8.42	0.00	0.00	0.00	1.76	0.00	0.00	1.32
बुध	युति	--	तृती	--	--	--	--	युति	सप्त	--	--	--
94.40	9.20	0.00	1.70	0.00	0.00	0.00	0.00	7.21	7.21	0.00	0.00	0.00
गुरु	चतु	--	--	--	--	--	--	चतु	--	5वां	--	--
355.25	0.55	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.66	0.00	0.52	0.00	0.00
शुक्र	युति	--	पंचा	--	--	--	--	युति	सप्त	--	पंच	तृती
78.54	3.08	0.00	0.97	0.00	0.00	0.00	0.00	6.24	6.24	0.00	2.89	2.75
शनि	--	--	--	--	3रा	--	--	--	--	सप्त	10वा	--
298.32	0.00	0.00	0.00	0.00	9.49	0.00	0.00	0.00	0.00	3.65	6.09	0.00
राहु	युति	--	तृती	युति	--	युति	--	--	सप्त	--	--	--
87.10	9.35	0.00	1.76	7.21	0.00	6.24	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	अष्टां	--	सप्त	चतु	सप्त	--	सप्त	--	--	--	--
267.10	9.35	0.99	0.00	7.21	2.66	6.24	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	युति
129.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.65	0.00	0.00	0.00	0.00	7.28
नेप	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
199.56	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	युति	तृती	--
136.97	0.00	0.00	1.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.28	2.33	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	144.06	174.07	204.08	234.09	264.08	294.07	324.06	354.07	24.08	54.09	84.08	114.07
सूर्य	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
90.55	0.00	0.00	0.00	0.00	7.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.79	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा
42.03	0.00	0.00	0.00	3.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.02	0.00	1.00
मंगल	युति	--	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--	--
150.70	7.68	0.00	0.00	7.70	0.00	0.00	7.68	7.68	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
94.40	0.00	0.00	0.00	0.00	4.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.71	0.00
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
355.25	0.00	9.92	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	9.92	0.00	2.86	2.86	9.92
शुक्र	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
78.54	0.37	0.36	0.36	0.00	8.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.36	0.00
शनि	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	सप्त
298.32	0.00	0.00	9.03	0.00	0.00	9.03	0.00	9.03	1.34	1.34	0.00	9.03
राहु	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
87.10	2.10	2.11	2.11	0.00	9.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.51	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
267.10	0.00	0.00	0.00	0.00	9.51	0.00	2.10	2.11	0.00	0.00	9.51	0.00
हर्ष	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--	--	--
129.75	0.72	0.48	0.00	0.00	0.50	0.00	0.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
199.56	0.00	0.00	8.90	0.00	1.14	1.14	1.15	0.00	8.90	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
136.97	7.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	144.06	172.52	203.08	234.09	264.75	294.93	324.06	352.52	23.08	54.09	84.75	114.93
सूर्य	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
90.55	0.00	0.00	0.00	0.00	8.21	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.21	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	पंचा
42.03	0.00	0.00	0.00	3.02	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.02	0.00	0.16
मंगल	युति	--	--	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--
150.70	7.68	0.00	0.00	7.70	0.03	0.00	7.68	6.55	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
94.40	0.00	0.00	0.00	0.00	5.31	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.31	0.00
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
355.25	0.00	9.59	0.00	9.93	0.00	0.00	0.00	9.59	0.00	2.86	2.97	9.99
शुक्र	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
78.54	0.37	1.51	1.12	0.00	7.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.96	0.00
शनि	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	चतु	पंच	--	सप्त
298.32	0.00	0.00	8.53	0.00	0.00	9.38	0.00	8.21	0.59	1.34	0.00	9.38
राहु	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
87.10	2.10	1.09	1.49	0.00	9.70	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.70	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
267.10	0.00	0.00	0.00	0.00	9.70	0.00	2.10	1.09	0.00	0.00	9.70	0.00
हर्ष	युति	--	--	--	अष्टां	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति
129.75	0.72	0.00	0.00	0.00	1.00	0.18	0.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.18
नेप	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
199.56	0.00	0.00	9.33	0.00	0.64	0.50	1.15	0.00	9.33	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
136.97	7.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

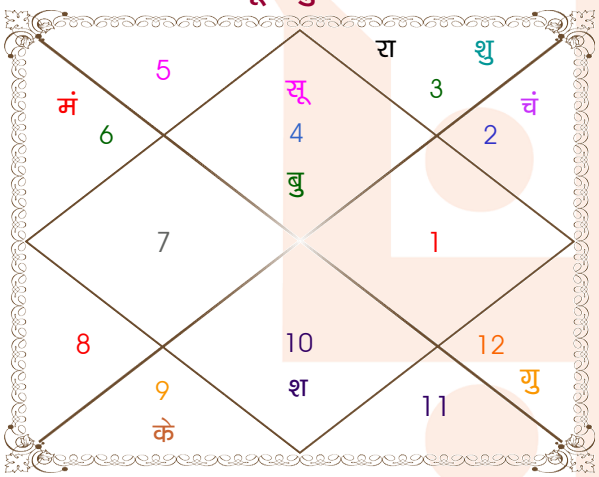

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

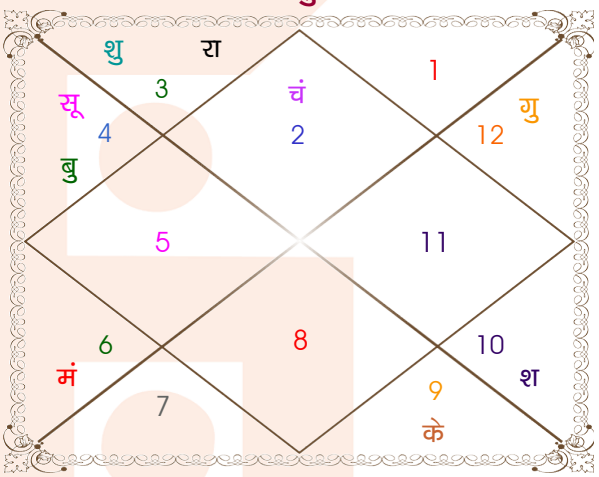

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

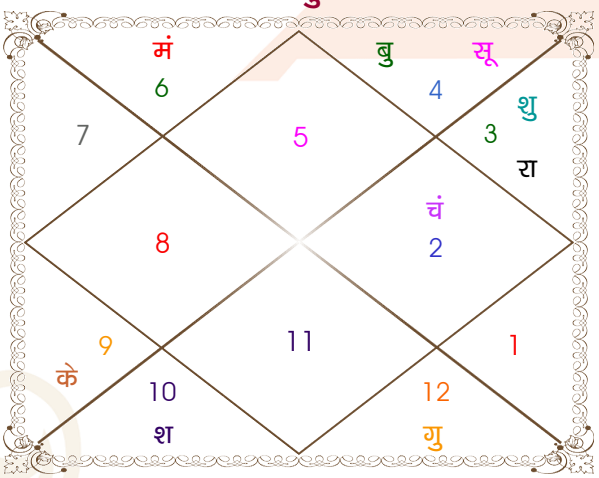

देह विचारः

होरा कुंडली

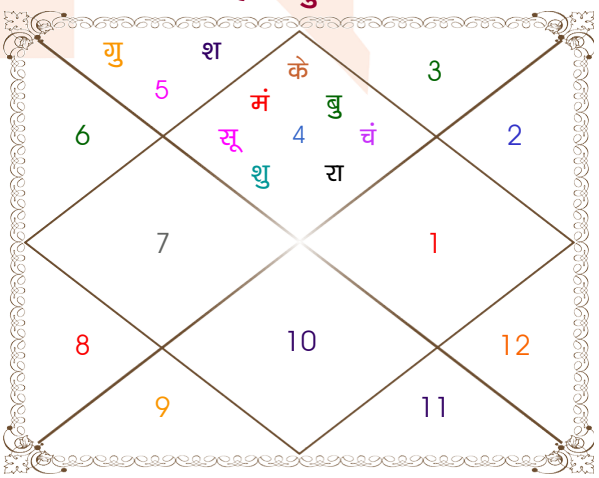

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

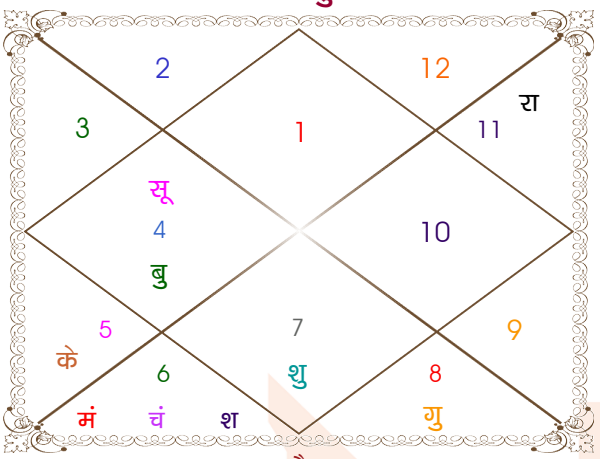

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

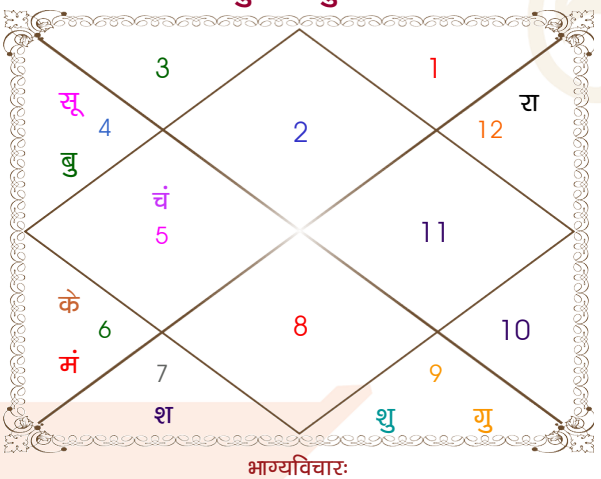

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

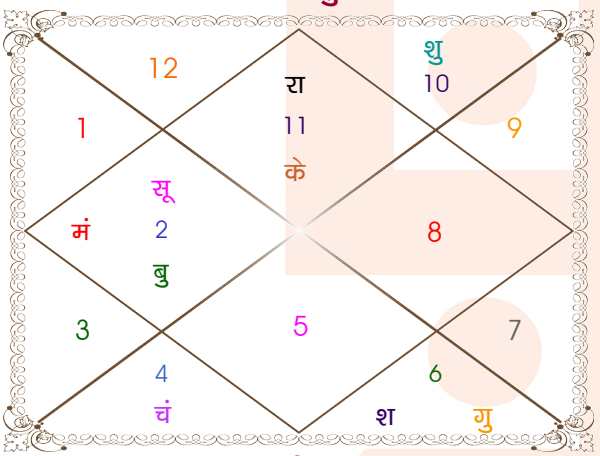

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

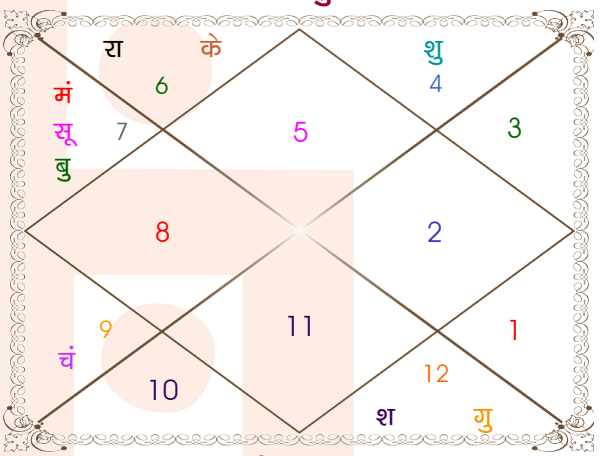

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

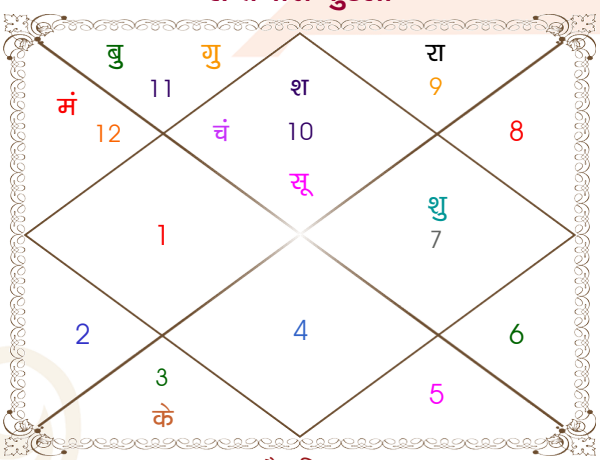

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

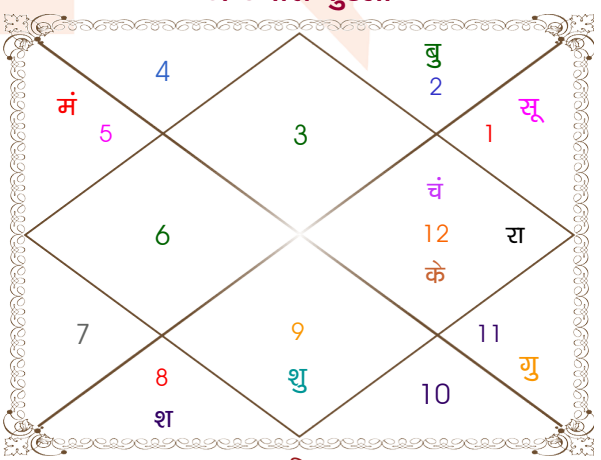

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

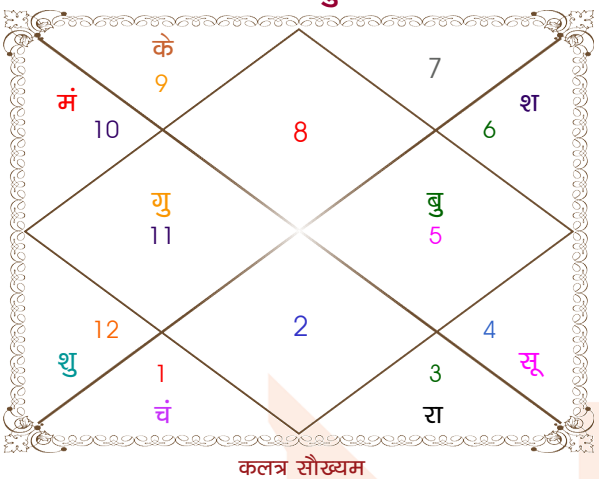

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

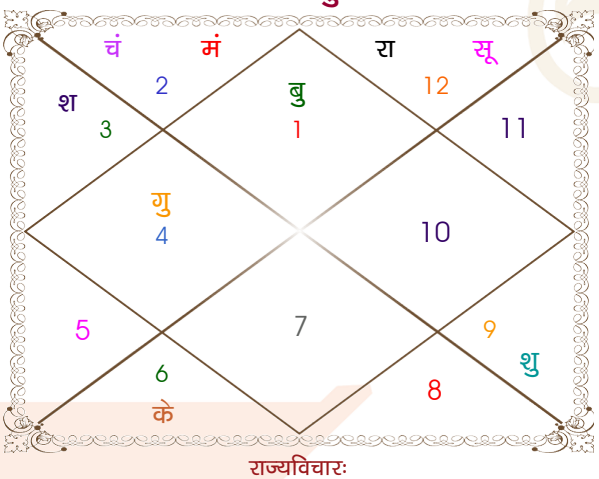

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

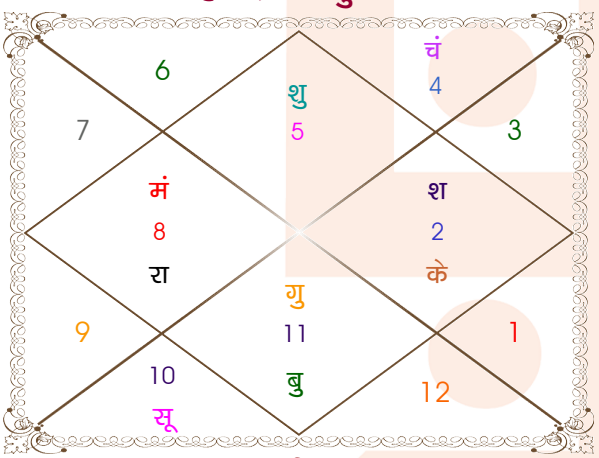

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

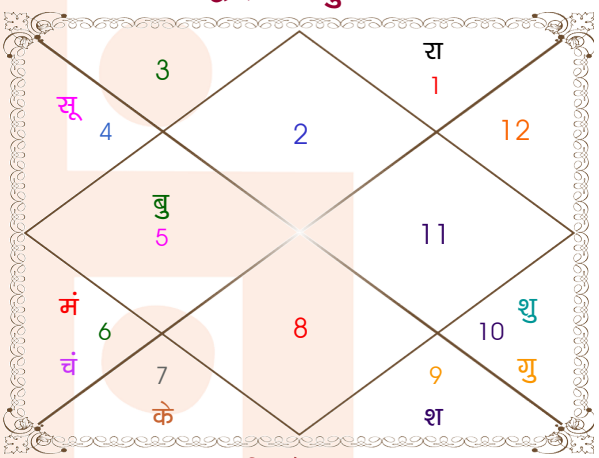

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

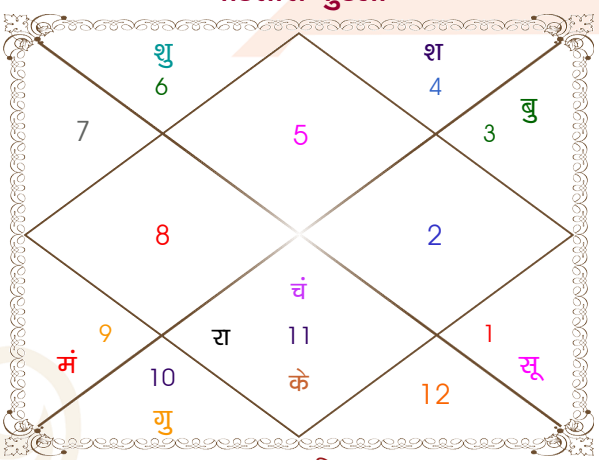

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

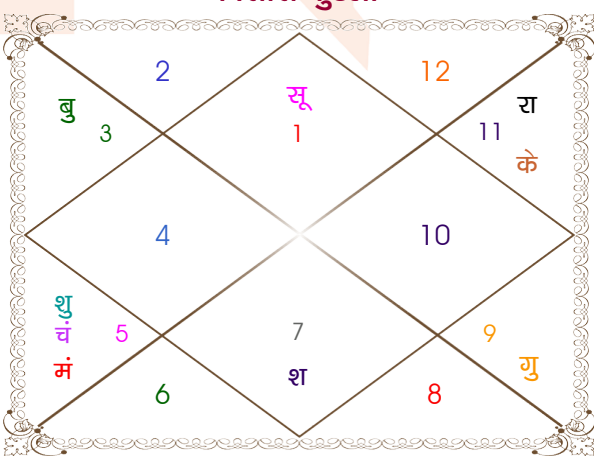

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

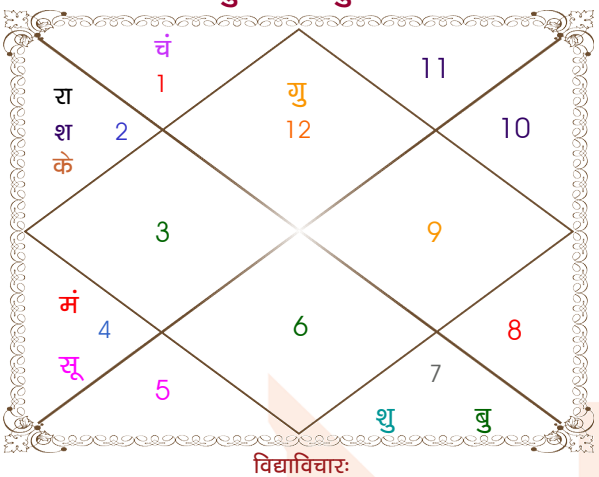

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

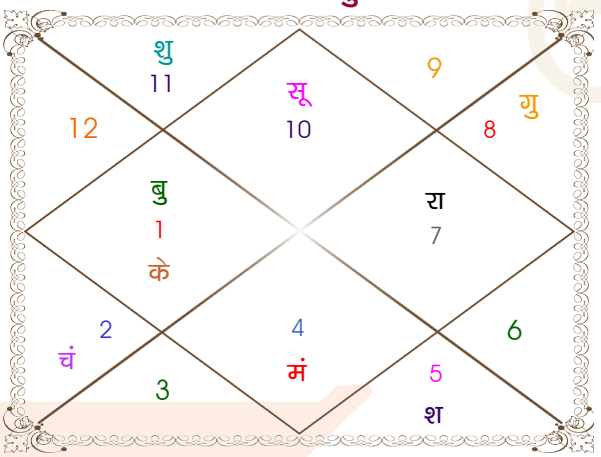

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

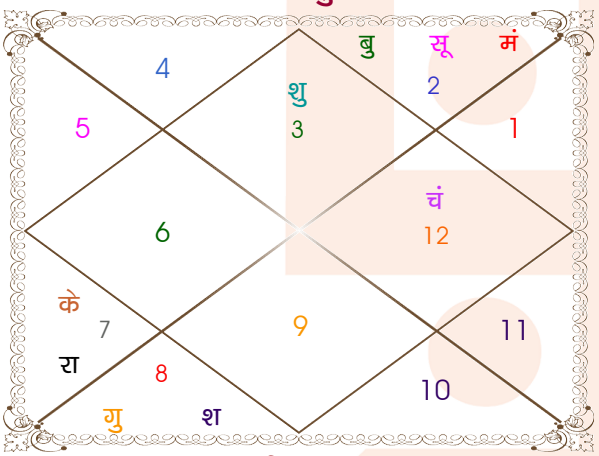

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

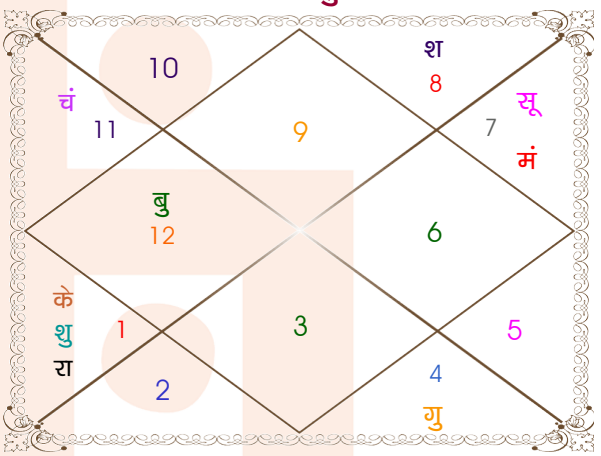

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

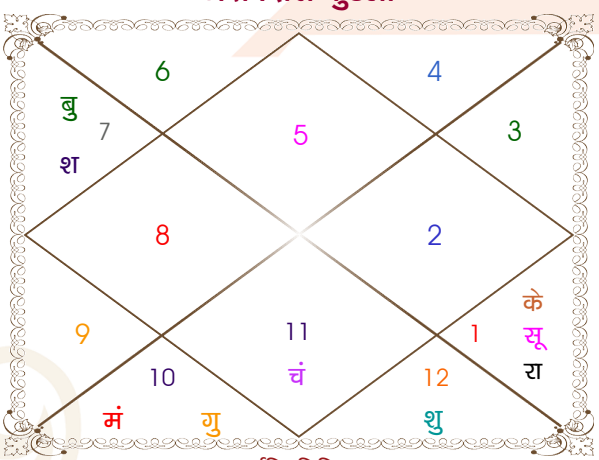

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

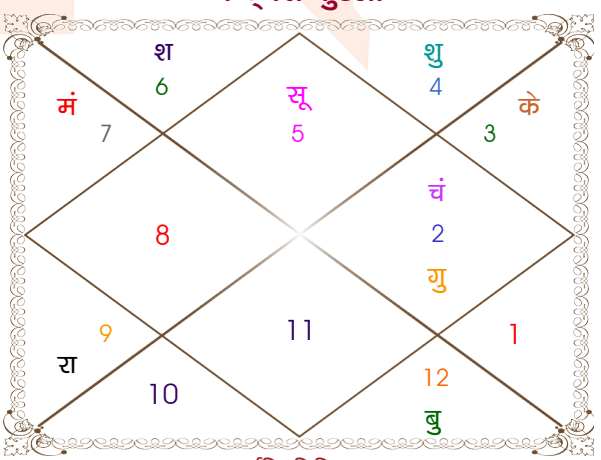

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	कर्क	वृष	कन्या	कर्क	मीन	मिथु	मक	मिथु	धनु
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मेष	कर्क	कन्या	कन्या	कर्क	वृश्चि	तुला	कन्या	कुंभ	सिंह
चतुर्थांश	वृष	कर्क	सिंह	कन्या	कर्क	धनु	धनु	तुला	मीन	कन्या
सप्तमांश	मक	मक	मक	मीन	कुंभ	कुंभ	तुला	मक	धनु	मिथु
नवमांश	वृश्चि	कर्क	मेष	मक	सिंह	कुंभ	मीन	कन्या	मिथु	धनु
दशमांश	मेष	मीन	वृष	वृष	मेष	कर्क	धनु	मिथु	मीन	कन्या
द्वादशांश	वृष	कर्क	कन्या	कन्या	सिंह	मक	मक	धनु	मेष	तुला
षोडशांश	सिंह	मेष	कुंभ	धनु	मिथु	मक	कन्या	कर्क	कुंभ	कुंभ
विंशांश	मेष	मेष	सिंह	सिंह	मिथु	धनु	सिंह	तुला	कुंभ	कुंभ
चतुर्विंशांश	मीन	कर्क	मेष	कर्क	तुला	मीन	तुला	वृष	वृष	वृष
सप्तविंशांश	मक	मक	वृष	कर्क	मेष	वृश्चि	कुंभ	सिंह	तुला	मेष
त्रिंशांश	मिथु	वृष	मीन	वृष	वृष	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	तुला	तुला
खवेदांश	धनु	तुला	कुंभ	तुला	मीन	कर्क	मेष	वृश्चि	मेष	मेष
अक्षवेदांश	सिंह	मेष	कुंभ	मक	तुला	मक	मीन	तुला	मेष	मेष
षष्ट्यंश	सिंह	सिंह	वृष	तुला	मीन	वृष	कर्क	कन्या	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	6 केरल
शुक्र	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
शनि	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	17.60	14.40	9.50	10.40	14.75	16.05	12.75	12.75	11.25
सप्तवर्ग	15.98	13.45	9.58	10.03	14.75	16.28	13.50	13.00	10.75
दशवर्ग	16.33	14.03	11.78	10.75	13.60	14.65	11.50	13.13	9.18
षोडशवर्ग	16.95	12.83	11.18	11.55	14.53	14.85	10.88	13.00	10.90

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---	सम	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	33	57	11	36	27	33	27
सप्तवर्गज बल	122	143	56	64	98	135	94
ओजयुग्मक बल	0	15	0	15	15	15	0
केन्द्र बल	15	60	30	15	30	30	15
द्रेष्काण बल	15	0	15	0	0	0	0
कुल स्थान बल	185	274	112	130	169	213	136
कुल दिग्बल	48	4	28	43	10	8	51
नतोन्नत बल	47	13	13	60	47	47	13
पक्ष बल	44	88	44	44	16	16	44
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	115	3	33	57	40	59	49
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	206	134	150	265	178	122	106
कुल चेष्टाबल	0	0	27	4	34	7	51
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	7	-14	-17	4	-22	5	-20
कुल षट्बल	506	450	316	473	404	398	333
रूप षट्बल	8.4	7.5	5.3	7.9	6.7	6.6	5.5
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.7	1.2	1.1	1.1	1.0	1.2	1.1
संबंधित पद	1	2	6	4	7	3	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	41.53	30.36	17.03	11.69	30.01	14.84	37.27
कष्ट फल	14.62	11.48	40.50	36.38	29.59	38.06	17.16

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	506	473	398	316	404	333	333	404	316	398	473	450
भावदिग्बल	30	50	40	30	10	40	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	22	81	65	7	66	42	20	3	-29	2	40	12
कुल भाव बल	557	603	503	354	479	415	353	427	337	460	553	482
रूप भाव बल	9.3	10.1	8.4	5.9	8.0	6.9	5.9	7.1	5.6	7.7	9.2	8.0
संबंधित पद	2	1	4	10	6	9	11	8	12	7	3	5

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

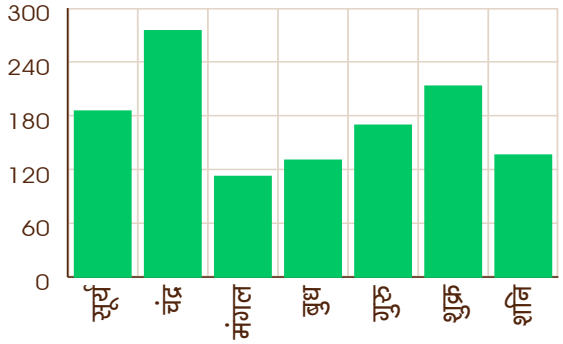

दिग्बल

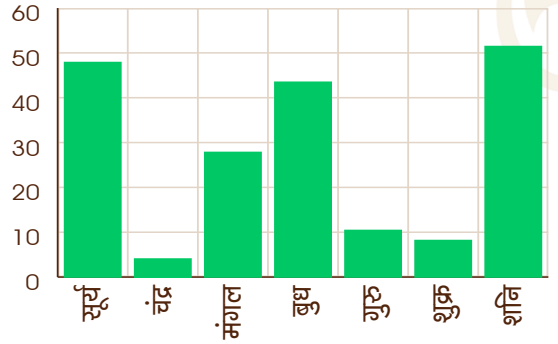

कालबल

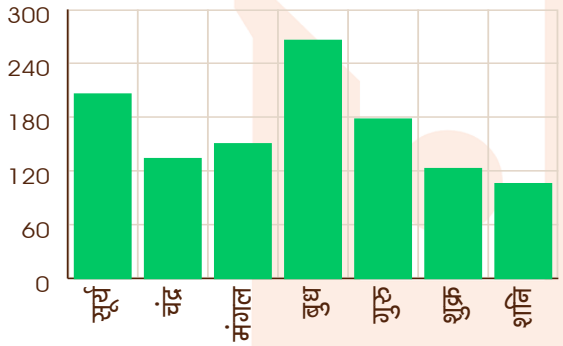

चेष्टाबल

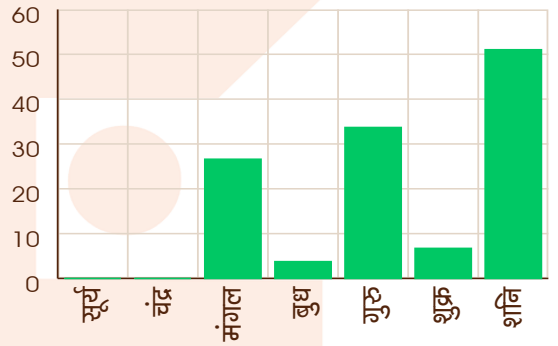

नैसर्गिक बल

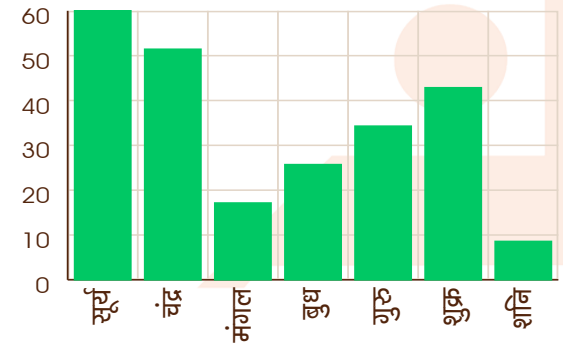

दृग्बल

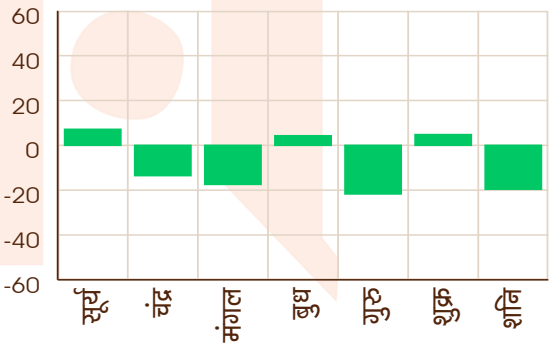

रूप षट्बल

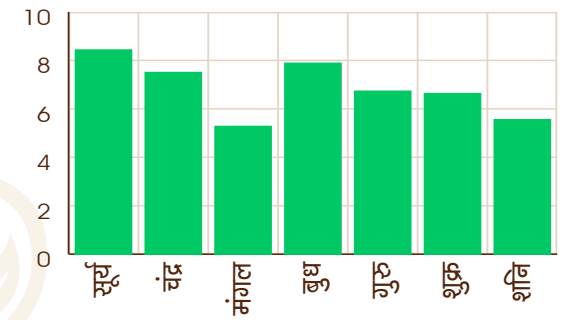

न्यूनतम षट्बल

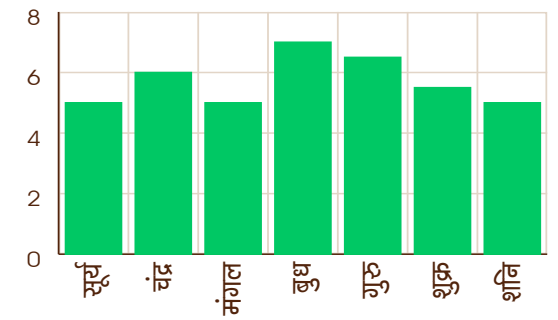

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

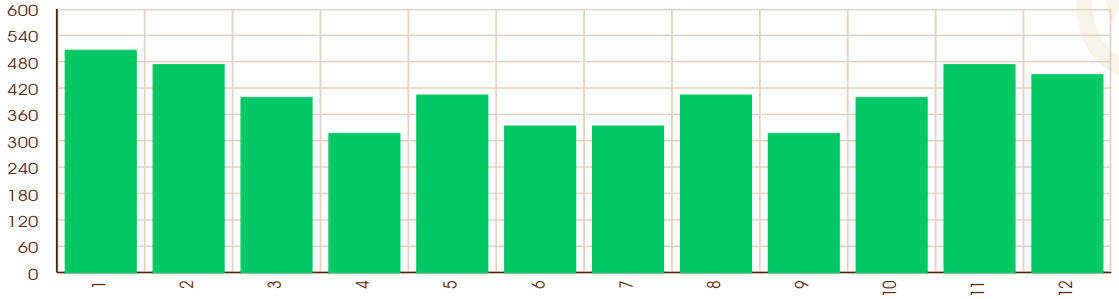

भावदिग्बल

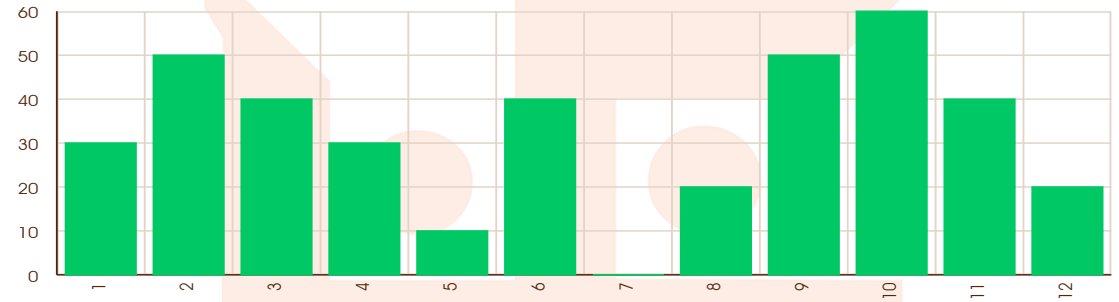

भावदृष्टि बल

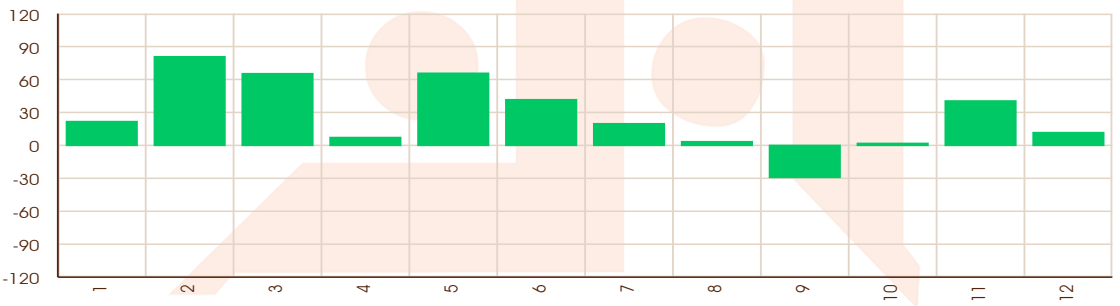

भाव बल

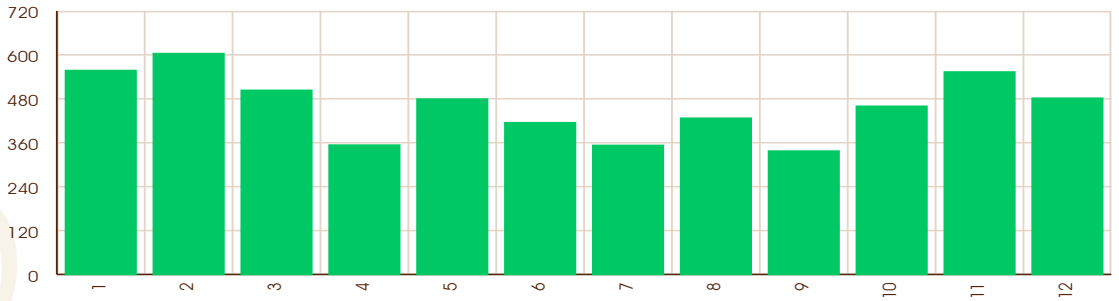

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

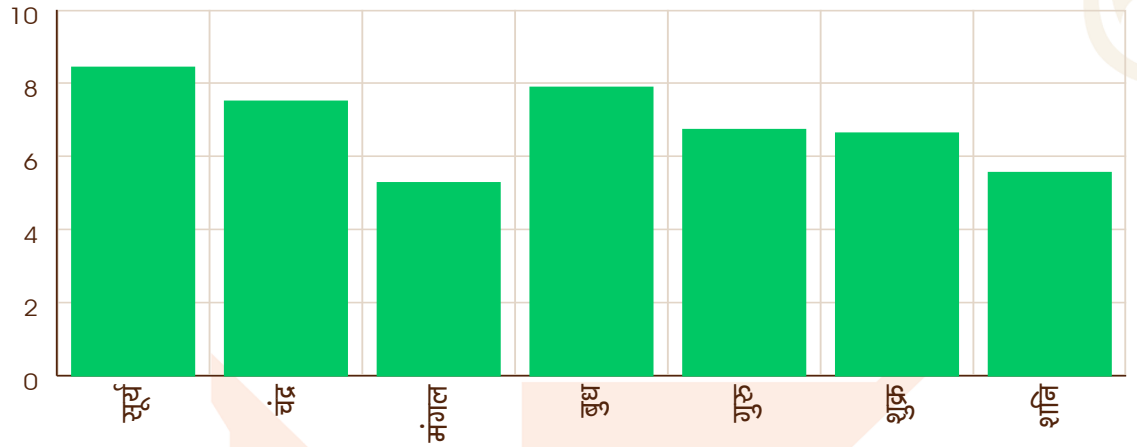

इष्ट - कष्ट फल

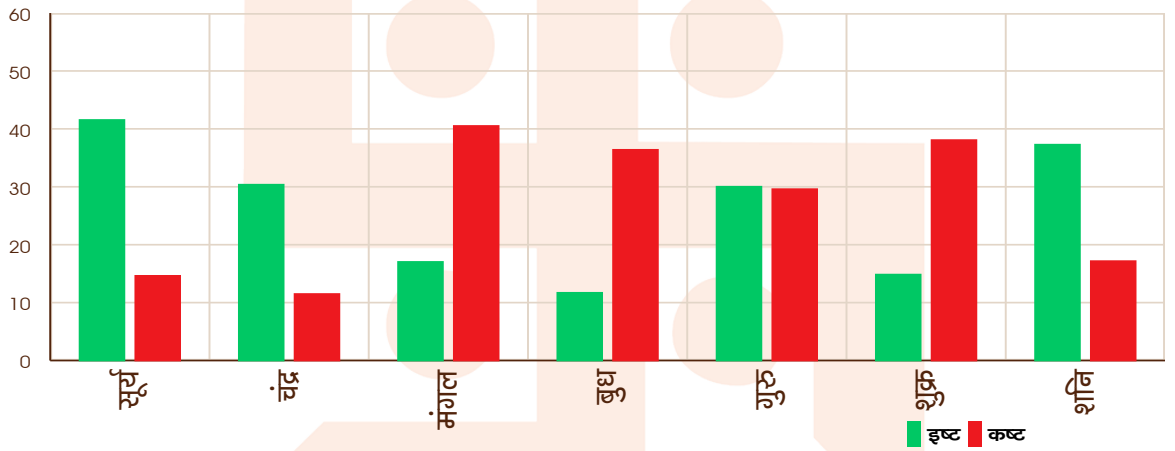

रूप भाव बल

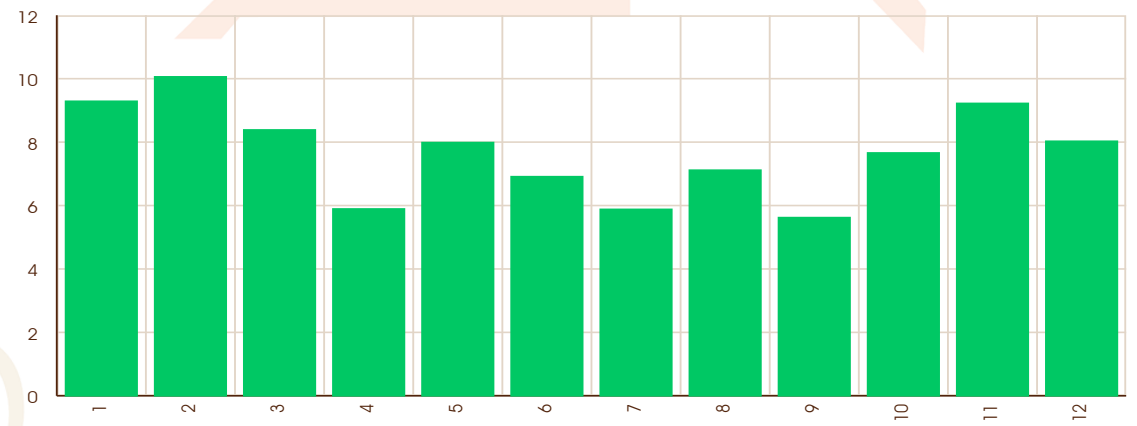

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	24:03:45	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
गुलिक	गु	तुला	00:39:14	--	--	चित्रा	3	14
काल	का	तुला	23:11:04	--	--	विशाखा	1	16
मृत्यु	मृ	धनु	07:28:44	--	--	मूल	3	19
यमघंटक	यम	सिंह	14:13:21	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कर्क	21:52:11	--	--	आश्लेषा	2	9
धूम	धू	वृश्चि	13:52:51	--	--	अनुराधा	4	17
व्यतिपात	व्य	सिंह	16:07:09	--	--	पू०फाल्गुनी	1	11
परिवेश	परि	कुंभ	16:07:09	--	--	शतभिषा	3	24
इन्द्रचाप	इ	वृष	13:52:51	--	--	रोहिणी	2	4
उपकेतु	उप	मिथु	00:32:51	--	--	मृगशिरा	3	5

प्राणपद	:	वृश्चि	17:20:40	कारकाँश लग्न	:	कन्या	14:51:33
भाव लग्न	:	कन्या	01:23:14	होरा लग्न	:	वृश्चि	02:13:38
घटी लग्न	:	वृष	04:44:48	वर्णद लग्न	:	मेष	03:42:37

उपग्रह कुंडली

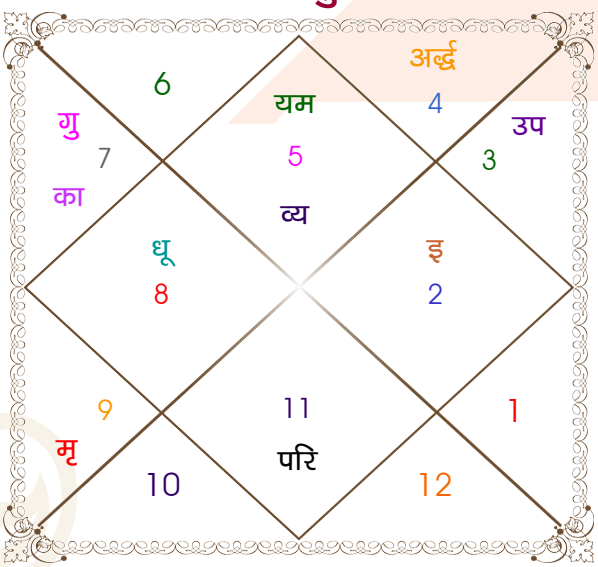

आरूढ़ कुंडली

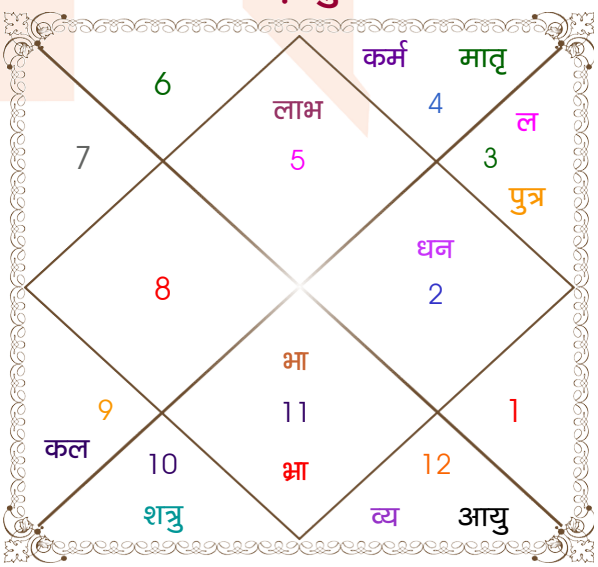

षन्नाडी चक्र

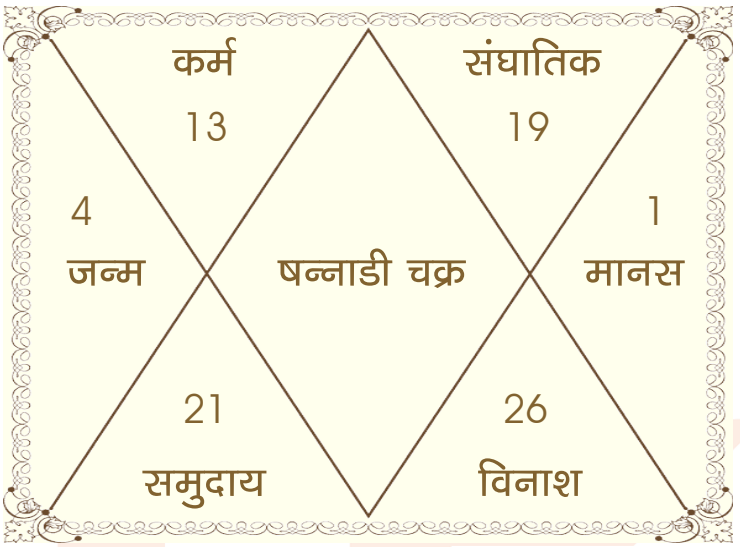

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	6	3	3	5	5	3	4	3	4	4	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	6
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	5	4	3	1	4	6	4	3	6	5	4	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	4	4	4	4	4	1	2	4	4	2	3	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	4	5	5	5	4	4	4	4	5	4	4	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	8
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	7	6	5	5	4	3	5	5	4	5	4	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	4	4	5	5	4	5	5	3	3	5	4	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
कुल	4	4	3	3	5	4	4	4	0	3	4	1	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	4	6	3	3	4	4	3	5	3	6	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	5	4	4	4	0	3	4	1	4	4	3	39
गुरु	6	5	5	4	3	5	5	4	5	4	3	7	56
मंगल	4	4	2	3	3	4	4	4	4	4	1	2	39
सूर्य	4	5	3	6	3	3	5	5	3	4	3	4	48
शुक्र	4	5	4	4	5	5	4	5	5	3	3	5	52
बुध	4	4	6	4	5	5	5	4	4	4	4	5	54
चंद्र	4	5	4	3	1	4	6	4	3	6	5	4	49
बिन्दु	29	33	28	28	24	26	32	30	25	29	23	30	337
रेखा	27	23	28	28	32	30	24	26	31	27	33	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	5	1	1	3	0	0	1	0	4	1	0	18
गुरु	3	1	2	0	0	1	2	0	2	0	0	3	14
मंगल	1	0	1	1	0	0	3	2	1	0	0	0	9
सूर्य	1	2	0	2	0	0	2	1	0	1	0	0	9
शुक्र	0	2	1	0	1	2	1	1	1	0	0	1	10
बुध	0	0	2	0	1	1	1	0	0	0	0	1	6
चंद्र	3	1	0	0	0	0	2	1	2	2	1	1	13
रेखा	10	11	7	4	5	4	11	6	6	7	2	6	79

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	5	1	1	3	0	0	1	0	4	0	0	16
गुरु	3	1	2	0	0	1	1	0	0	0	0	3	11
मंगल	1	0	1	1	0	0	3	1	1	0	0	0	8
सूर्य	0	2	0	2	0	0	0	0	0	1	0	0	5
शुक्र	0	2	1	0	1	2	0	1	0	0	0	1	8
बुध	0	0	2	0	1	1	1	0	0	0	0	1	6
चंद्र	2	1	0	0	0	0	1	1	1	2	0	1	9
रेखा	7	11	7	4	5	4	6	4	2	7	0	6	63

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	33	70	57	50	95	68	127
ग्रह पिंड	35	25	17	32	57	43	62
शोध्य पिंड	68	95	74	82	152	111	189

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

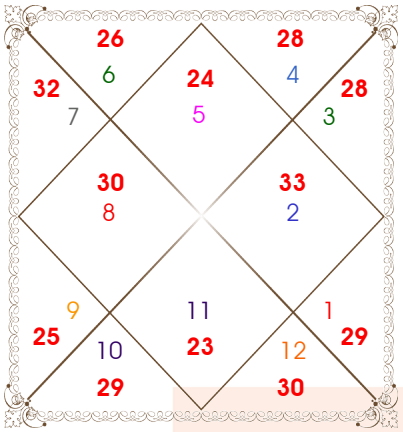

सूर्य का अष्टकवर्ग

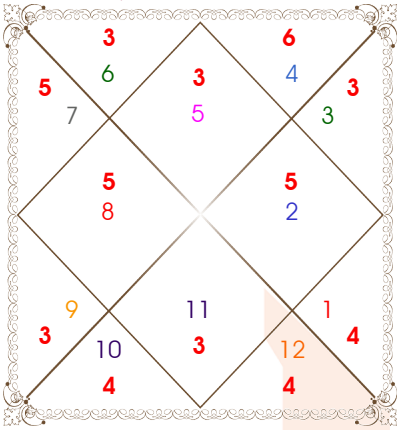

चंद्र का अष्टकवर्ग

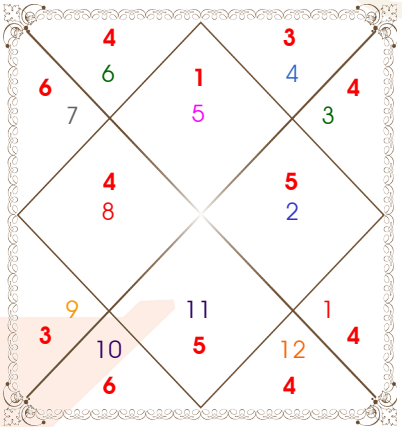

मंगल का अष्टकवर्ग

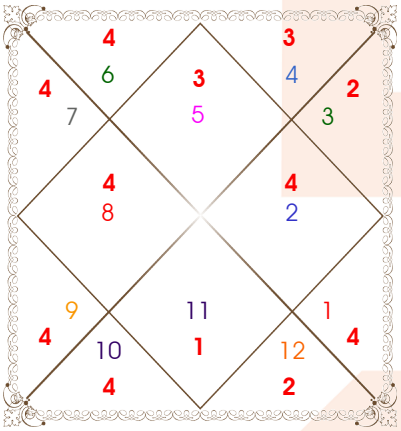

बुध का अष्टकवर्ग

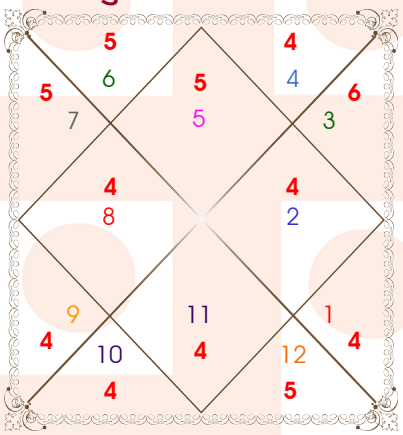

गुरू का अष्टकवर्ग

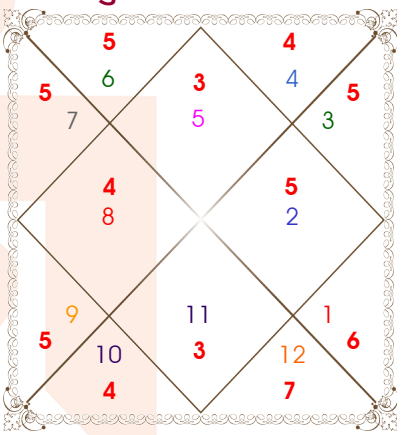

शुक्र का अष्टकवर्ग

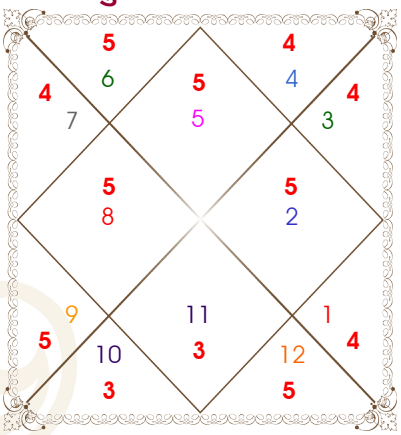

शनि का अष्टकवर्ग

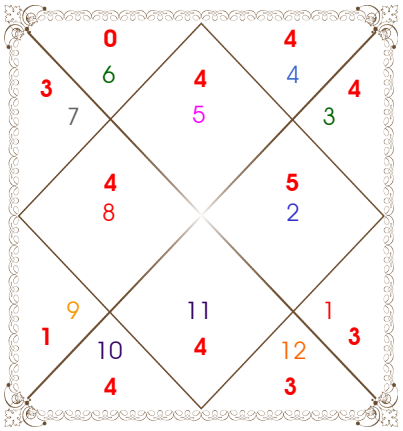

लग्न का अष्टकवर्ग

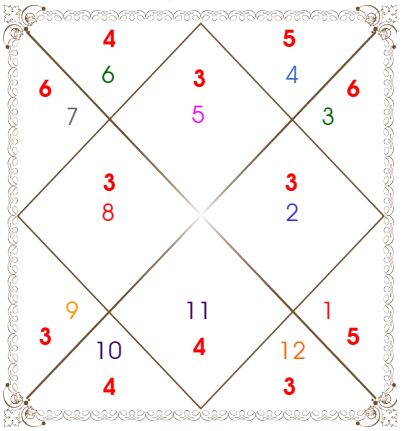

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

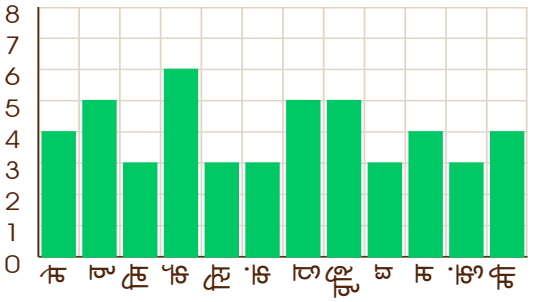

चन्द्र

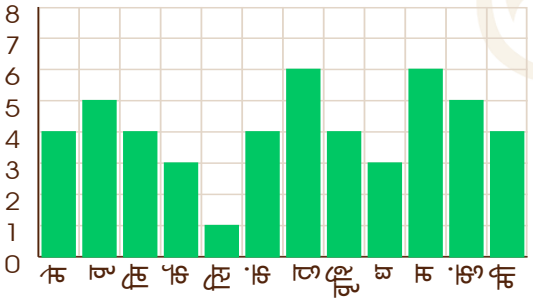

मंगल

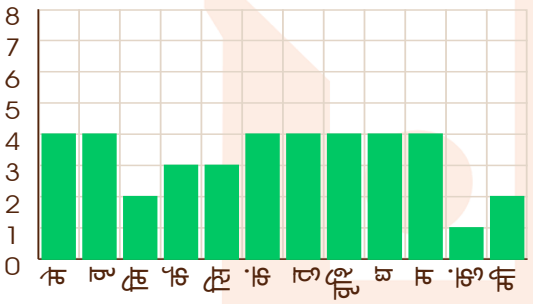

बुध

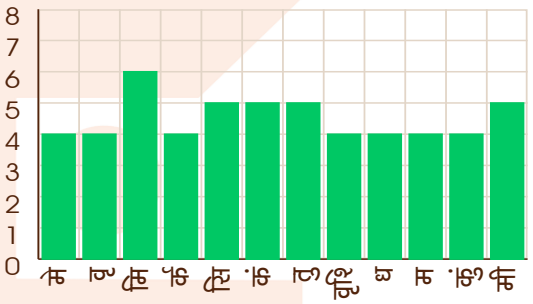

गुरु

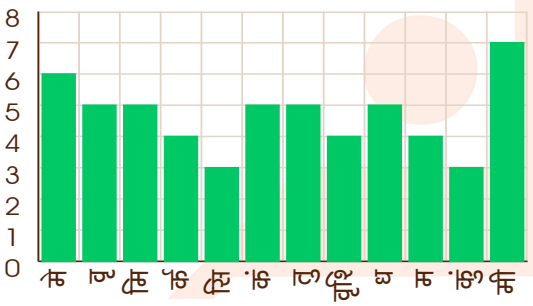

शुक्र

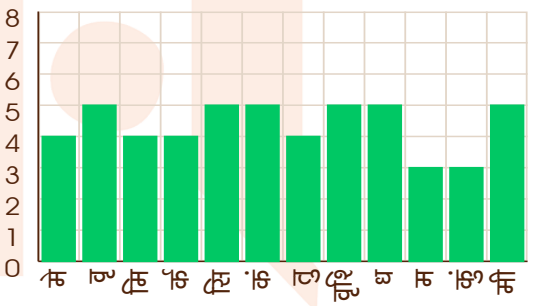

शनि

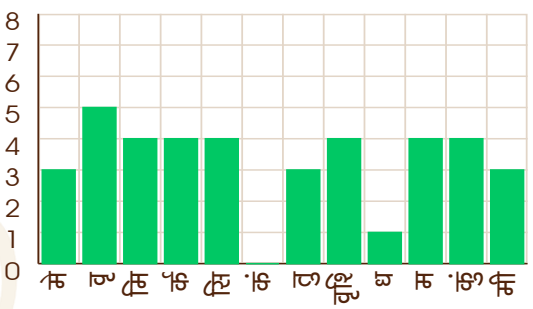

लग्न

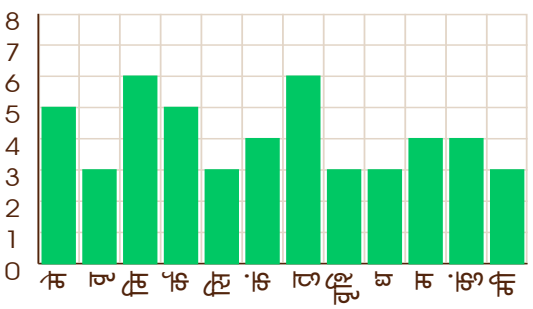

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

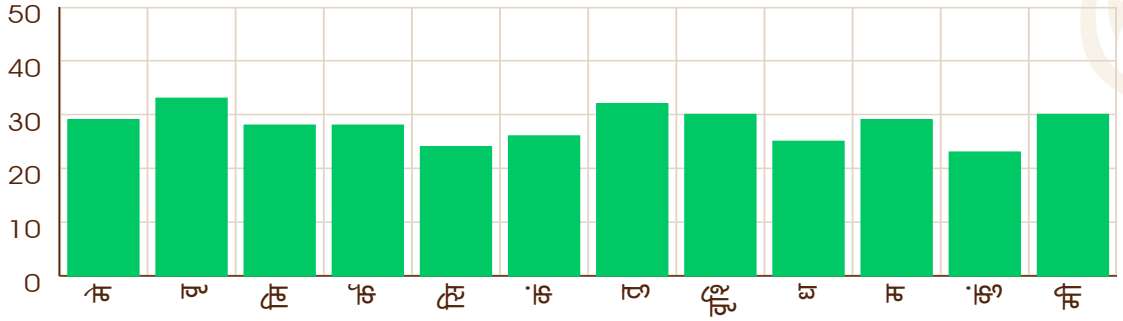

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

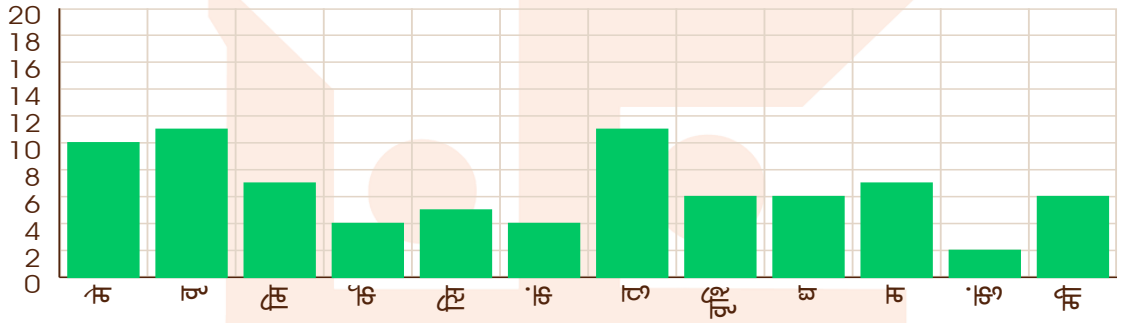

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

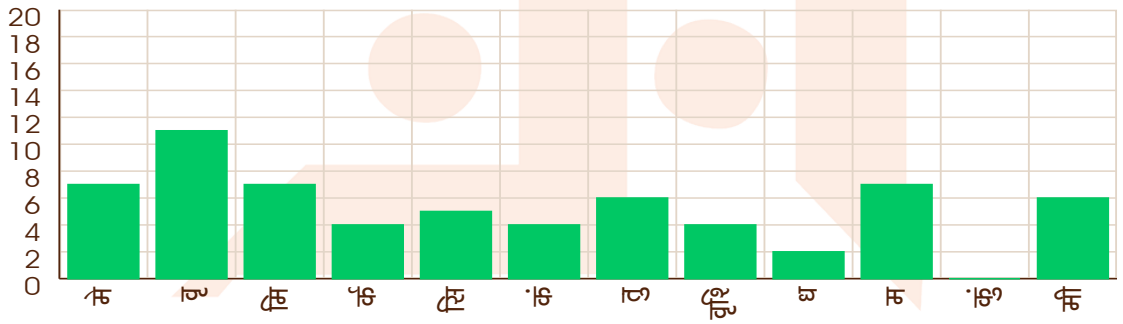

शोध्य पिंड

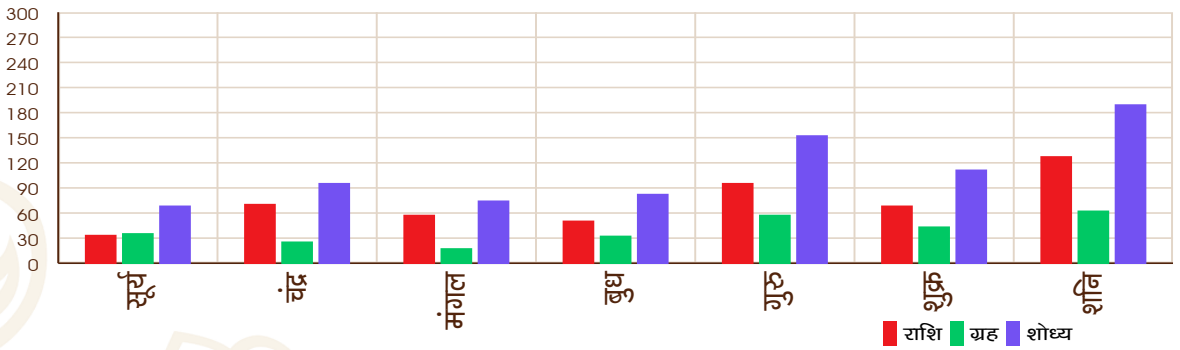

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 8 वर्ष 5 मास 23 दिन

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
17/07/1963		08/01/1972		08/01/1979		07/01/1997		07/01/2013	
08/01/1972		08/01/1979		07/01/1997		07/01/2013		08/01/2032	
	00/00/0000	मंगल	05/06/1972	राहु	20/09/1981	गुरु	26/02/1999	शनि	11/01/2016
	17/07/1963	राहु	24/06/1973	गुरु	14/02/1984	शनि	08/09/2001	बुध	20/09/2018
राहु	08/12/1964	गुरु	31/05/1974	शनि	21/12/1986	बुध	15/12/2003	केतु	30/10/2019
गुरु	09/04/1966	शनि	10/07/1975	बुध	09/07/1989	केतु	20/11/2004	शुक्र	30/12/2022
शनि	08/11/1967	बुध	06/07/1976	केतु	28/07/1990	शुक्र	22/07/2007	सूर्य	12/12/2023
बुध	09/04/1969	केतु	02/12/1976	शुक्र	27/07/1993	सूर्य	09/05/2008	चंद्र	12/07/2025
केतु	08/11/1969	शुक्र	01/02/1978	सूर्य	21/06/1994	चंद्र	08/09/2009	मंगल	21/08/2026
शुक्र	10/07/1971	सूर्य	09/06/1978	चंद्र	21/12/1995	मंगल	15/08/2010	राहु	27/06/2029
सूर्य	08/01/1972	चंद्र	08/01/1979	मंगल	07/01/1997	राहु	07/01/2013	गुरु	08/01/2032

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
08/01/2032		07/01/2049		08/01/2056		08/01/2076		08/01/2082	
07/01/2049		08/01/2056		08/01/2076		08/01/2082		00/00/0000	
बुध	06/06/2034	केतु	06/06/2049	शुक्र	10/05/2059	सूर्य	27/04/2076	चंद्र	08/11/2082
केतु	03/06/2035	शुक्र	06/08/2050	सूर्य	09/05/2060	चंद्र	26/10/2076	मंगल	09/06/2083
शुक्र	03/04/2038	सूर्य	12/12/2050	चंद्र	08/01/2062	मंगल	03/03/2077	राहु	17/07/2083
सूर्य	07/02/2039	चंद्र	13/07/2051	मंगल	10/03/2063	राहु	26/01/2078		00/00/0000
चंद्र	09/07/2040	मंगल	09/12/2051	राहु	10/03/2066	गुरु	14/11/2078		00/00/0000
मंगल	06/07/2041	राहु	26/12/2052	गुरु	08/11/2068	शनि	27/10/2079		00/00/0000
राहु	23/01/2044	गुरु	02/12/2053	शनि	08/01/2072	बुध	02/09/2080		00/00/0000
गुरु	30/04/2046	शनि	11/01/2055	बुध	08/11/2074	केतु	07/01/2081		00/00/0000
शनि	07/01/2049	बुध	08/01/2056	केतु	08/01/2076	शुक्र	08/01/2082		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 8 वर्ष 5 मा 24 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
17/07/1963		08/12/1964		09/04/1966		08/11/1967		09/04/1969	
08/12/1964		09/04/1966		08/11/1967		09/04/1969		08/11/1969	
राहु	30/08/1963	गुरु	11/02/1965	शनि	10/07/1966	बुध	21/01/1968	केतु	21/04/1969
गुरु	11/11/1963	शनि	29/04/1965	बुध	30/09/1966	केतु	20/02/1968	शुक्र	27/05/1969
शनि	06/02/1964	बुध	07/07/1965	केतु	02/11/1966	शुक्र	16/05/1968	सूर्य	06/06/1969
बुध	24/04/1964	केतु	04/08/1965	शुक्र	07/02/1967	सूर्य	11/06/1968	चंद्र	24/06/1969
केतु	26/05/1964	शुक्र	25/10/1965	सूर्य	08/03/1967	चंद्र	24/07/1968	मंगल	07/07/1969
शुक्र	25/08/1964	सूर्य	18/11/1965	चंद्र	25/04/1967	मंगल	23/08/1968	राहु	08/08/1969
सूर्य	21/09/1964	चंद्र	29/12/1965	मंगल	28/05/1967	राहु	09/11/1968	गुरु	05/09/1969
चंद्र	06/11/1964	मंगल	26/01/1966	राहु	23/08/1967	गुरु	17/01/1969	शनि	09/10/1969
मंगल	08/12/1964	राहु	09/04/1966	गुरु	08/11/1967	शनि	09/04/1969	बुध	08/11/1969

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
08/11/1969		10/07/1971		08/01/1972		05/06/1972		24/06/1973	
10/07/1971		08/01/1972		05/06/1972		24/06/1973		31/05/1974	
शुक्र	17/02/1970	सूर्य	19/07/1971	मंगल	17/01/1972	राहु	02/08/1972	गुरु	08/08/1973
सूर्य	20/03/1970	चंद्र	03/08/1971	राहु	08/02/1972	गुरु	22/09/1972	शनि	01/10/1973
चंद्र	09/05/1970	मंगल	14/08/1971	गुरु	28/02/1972	शनि	22/11/1972	बुध	19/11/1973
मंगल	14/06/1970	राहु	10/09/1971	शनि	23/03/1972	बुध	15/01/1973	केतु	08/12/1973
राहु	13/09/1970	गुरु	04/10/1971	बुध	13/04/1972	केतु	06/02/1973	शुक्र	03/02/1974
गुरु	03/12/1970	शनि	02/11/1971	केतु	22/04/1972	शुक्र	11/04/1973	सूर्य	20/02/1974
शनि	10/03/1971	बुध	28/11/1971	शुक्र	16/05/1972	सूर्य	01/05/1973	चंद्र	21/03/1974
बुध	04/06/1971	केतु	09/12/1971	सूर्य	24/05/1972	चंद्र	02/06/1973	मंगल	10/04/1974
केतु	10/07/1971	शुक्र	08/01/1972	चंद्र	05/06/1972	मंगल	24/06/1973	राहु	31/05/1974

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
31/05/1974		10/07/1975		06/07/1976		02/12/1976		01/02/1978	
10/07/1975		06/07/1976		02/12/1976		01/02/1978		09/06/1978	
शनि	03/08/1974	बुध	30/08/1975	केतु	15/07/1976	शुक्र	11/02/1977	सूर्य	07/02/1978
बुध	29/09/1974	केतु	20/09/1975	शुक्र	08/08/1976	सूर्य	04/03/1977	चंद्र	18/02/1978
केतु	23/10/1974	शुक्र	19/11/1975	सूर्य	16/08/1976	चंद्र	09/04/1977	मंगल	26/02/1978
शुक्र	29/12/1974	सूर्य	08/12/1975	चंद्र	28/08/1976	मंगल	04/05/1977	राहु	17/03/1978
सूर्य	19/01/1975	चंद्र	07/01/1976	मंगल	06/09/1976	राहु	07/07/1977	गुरु	03/04/1978
चंद्र	21/02/1975	मंगल	28/01/1976	राहु	28/09/1976	गुरु	01/09/1977	शनि	23/04/1978
मंगल	17/03/1975	राहु	22/03/1976	गुरु	18/10/1976	शनि	08/11/1977	बुध	11/05/1978
राहु	17/05/1975	गुरु	09/05/1976	शनि	11/11/1976	बुध	07/01/1978	केतु	19/05/1978
गुरु	10/07/1975	शनि	06/07/1976	बुध	02/12/1976	केतु	01/02/1978	शुक्र	09/06/1978

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र	
09/06/1978	
08/01/1979	
चंद्र	27/06/1978
मंगल	09/07/1978
राहु	10/08/1978
गुरु	07/09/1978
शनि	11/10/1978
बुध	10/11/1978
केतु	23/11/1978
शुक्र	28/12/1978
सूर्य	08/01/1979

राहु - राहु	
08/01/1979	
20/09/1981	
राहु	05/06/1979
गुरु	14/10/1979
शनि	19/03/1980
बुध	05/08/1980
केतु	02/10/1980
शुक्र	15/03/1981
सूर्य	03/05/1981
चंद्र	25/07/1981
मंगल	20/09/1981

राहु - गुरु	
20/09/1981	
14/02/1984	
गुरु	15/01/1982
शनि	03/06/1982
बुध	05/10/1982
केतु	25/11/1982
शुक्र	20/04/1983
सूर्य	03/06/1983
चंद्र	15/08/1983
मंगल	05/10/1983
राहु	14/02/1984

राहु - शनि	
14/02/1984	
21/12/1986	
शनि	28/07/1984
बुध	22/12/1984
केतु	21/02/1985
शुक्र	13/08/1985
सूर्य	04/10/1985
चंद्र	30/12/1985
मंगल	01/03/1986
राहु	04/08/1986
गुरु	21/12/1986

राहु - बुध	
21/12/1986	
09/07/1989	
बुध	02/05/1987
केतु	25/06/1987
शुक्र	27/11/1987
सूर्य	13/01/1988
चंद्र	30/03/1988
मंगल	24/05/1988
राहु	10/10/1988
गुरु	12/02/1989
शनि	09/07/1989

राहु - केतु	
09/07/1989	
28/07/1990	
केतु	31/07/1989
शुक्र	03/10/1989
सूर्य	23/10/1989
चंद्र	24/11/1989
मंगल	16/12/1989
राहु	11/02/1990
गुरु	04/04/1990
शनि	03/06/1990
बुध	28/07/1990

राहु - शुक्र	
28/07/1990	
27/07/1993	
शुक्र	26/01/1991
सूर्य	22/03/1991
चंद्र	21/06/1991
मंगल	24/08/1991
राहु	05/02/1992
गुरु	30/06/1992
शनि	20/12/1992
बुध	24/05/1993
केतु	27/07/1993

राहु - सूर्य	
27/07/1993	
21/06/1994	
सूर्य	13/08/1993
चंद्र	09/09/1993
मंगल	28/09/1993
राहु	17/11/1993
गुरु	31/12/1993
शनि	21/02/1994
बुध	08/04/1994
केतु	27/04/1994
शुक्र	21/06/1994

राहु - चंद्र	
21/06/1994	
21/12/1995	
चंद्र	06/08/1994
मंगल	07/09/1994
राहु	28/11/1994
गुरु	09/02/1995
शनि	07/05/1995
बुध	23/07/1995
केतु	24/08/1995
शुक्र	24/11/1995
सूर्य	21/12/1995

राहु - मंगल	
21/12/1995	
07/01/1997	
मंगल	12/01/1996
राहु	10/03/1996
गुरु	30/04/1996
शनि	30/06/1996
बुध	23/08/1996
केतु	14/09/1996
शुक्र	17/11/1996
सूर्य	07/12/1996
चंद्र	07/01/1997

गुरु - गुरु	
07/01/1997	
26/02/1999	
गुरु	21/04/1997
शनि	23/08/1997
बुध	11/12/1997
केतु	26/01/1998
शुक्र	04/06/1998
सूर्य	13/07/1998
चंद्र	16/09/1998
मंगल	01/11/1998
राहु	26/02/1999

गुरु - शनि	
26/02/1999	
08/09/2001	
शनि	22/07/1999
बुध	30/11/1999
केतु	23/01/2000
शुक्र	25/06/2000
सूर्य	11/08/2000
चंद्र	27/10/2000
मंगल	20/12/2000
राहु	08/05/2001
गुरु	08/09/2001

गुरु - बुध	
08/09/2001	
15/12/2003	
बुध	03/01/2002
केतु	21/02/2002
शुक्र	09/07/2002
सूर्य	19/08/2002
चंद्र	27/10/2002
मंगल	14/12/2002
राहु	17/04/2003
गुरु	06/08/2003
शनि	15/12/2003

गुरु - केतु	
15/12/2003	
20/11/2004	
केतु	04/01/2004
शुक्र	01/03/2004
सूर्य	18/03/2004
चंद्र	15/04/2004
मंगल	05/05/2004
राहु	25/06/2004
गुरु	10/08/2004
शनि	02/10/2004
बुध	20/11/2004

गुरु - शुक्र	
20/11/2004	
22/07/2007	
शुक्र	01/05/2005
सूर्य	19/06/2005
चंद्र	08/09/2005
मंगल	04/11/2005
राहु	30/03/2006
गुरु	07/08/2006
शनि	08/01/2007
बुध	26/05/2007
केतु	22/07/2007

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
22/07/2007		09/05/2008		08/09/2009		15/08/2010		07/01/2013	
09/05/2008		08/09/2009		15/08/2010		07/01/2013		11/01/2016	
सूर्य	05/08/2007	चंद्र	19/06/2008	मंगल	28/09/2009	राहु	24/12/2010	शनि	30/06/2013
चंद्र	30/08/2007	मंगल	17/07/2008	राहु	18/11/2009	गुरु	20/04/2011	बुध	03/12/2013
मंगल	16/09/2007	राहु	28/09/2008	गुरु	02/01/2010	शनि	06/09/2011	केतु	05/02/2014
राहु	30/10/2007	गुरु	02/12/2008	शनि	25/02/2010	बुध	08/01/2012	शुक्र	07/08/2014
गुरु	08/12/2007	शनि	17/02/2009	बुध	15/04/2010	केतु	28/02/2012	सूर्य	01/10/2014
शनि	23/01/2008	बुध	27/04/2009	केतु	05/05/2010	शुक्र	23/07/2012	चंद्र	01/01/2015
बुध	04/03/2008	केतु	25/05/2009	शुक्र	30/06/2010	सूर्य	05/09/2012	मंगल	06/03/2015
केतु	21/03/2008	शुक्र	15/08/2009	सूर्य	17/07/2010	चंद्र	17/11/2012	राहु	18/08/2015
शुक्र	09/05/2008	सूर्य	08/09/2009	चंद्र	15/08/2010	मंगल	07/01/2013	गुरु	11/01/2016

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
11/01/2016		20/09/2018		30/10/2019		30/12/2022		12/12/2023	
20/09/2018		30/10/2019		30/12/2022		12/12/2023		12/07/2025	
बुध	30/05/2016	केतु	14/10/2018	शुक्र	10/05/2020	सूर्य	16/01/2023	चंद्र	29/01/2024
केतु	26/07/2016	शुक्र	20/12/2018	सूर्य	07/07/2020	चंद्र	14/02/2023	मंगल	03/03/2024
शुक्र	06/01/2017	सूर्य	10/01/2019	चंद्र	11/10/2020	मंगल	06/03/2023	राहु	29/05/2024
सूर्य	24/02/2017	चंद्र	12/02/2019	मंगल	18/12/2020	राहु	27/04/2023	गुरु	14/08/2024
चंद्र	17/05/2017	मंगल	08/03/2019	राहु	09/06/2021	गुरु	13/06/2023	शनि	13/11/2024
मंगल	13/07/2017	राहु	08/05/2019	गुरु	10/11/2021	शनि	07/08/2023	बुध	03/02/2025
राहु	08/12/2017	गुरु	01/07/2019	शनि	13/05/2022	बुध	25/09/2023	केतु	09/03/2025
गुरु	18/04/2018	शनि	03/09/2019	बुध	23/10/2022	केतु	15/10/2023	शुक्र	13/06/2025
शनि	20/09/2018	बुध	30/10/2019	केतु	30/12/2022	शुक्र	12/12/2023	सूर्य	12/07/2025

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
12/07/2025		21/08/2026		27/06/2029		08/01/2032		06/06/2034	
21/08/2026		27/06/2029		08/01/2032		06/06/2034		03/06/2035	
मंगल	05/08/2025	राहु	24/01/2027	गुरु	28/10/2029	बुध	12/05/2032	केतु	27/06/2034
राहु	04/10/2025	गुरु	12/06/2027	शनि	24/03/2030	केतु	02/07/2032	शुक्र	26/08/2034
गुरु	27/11/2025	शनि	24/11/2027	बुध	02/08/2030	शुक्र	26/11/2032	सूर्य	13/09/2034
शनि	31/01/2026	बुध	19/04/2028	केतु	25/09/2030	सूर्य	09/01/2033	चंद्र	14/10/2034
बुध	29/03/2026	केतु	19/06/2028	शुक्र	26/02/2031	चंद्र	23/03/2033	मंगल	04/11/2034
केतु	22/04/2026	शुक्र	09/12/2028	सूर्य	13/04/2031	मंगल	13/05/2033	राहु	28/12/2034
शुक्र	28/06/2026	सूर्य	30/01/2029	चंद्र	29/06/2031	राहु	22/09/2033	गुरु	14/02/2035
सूर्य	18/07/2026	चंद्र	27/04/2029	मंगल	22/08/2031	गुरु	18/01/2034	शनि	13/04/2035
चंद्र	21/08/2026	मंगल	27/06/2029	राहु	08/01/2032	शनि	06/06/2034	बुध	03/06/2035

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
03/06/2035		03/04/2038		07/02/2039		09/07/2040		06/07/2041	
03/04/2038		07/02/2039		09/07/2040		06/07/2041		23/01/2044	
शुक्र	23/11/2035	सूर्य	18/04/2038	चंद्र	23/03/2039	मंगल	30/07/2040	राहु	23/11/2041
सूर्य	13/01/2036	चंद्र	14/05/2038	मंगल	22/04/2039	राहु	22/09/2040	गुरु	27/03/2042
चंद्र	09/04/2036	मंगल	01/06/2038	राहु	08/07/2039	गुरु	10/11/2040	शनि	21/08/2042
मंगल	08/06/2036	राहु	18/07/2038	गुरु	15/09/2039	शनि	06/01/2041	बुध	31/12/2042
राहु	10/11/2036	गुरु	28/08/2038	शनि	06/12/2039	बुध	26/02/2041	केतु	24/02/2043
गुरु	28/03/2037	शनि	17/10/2038	बुध	18/02/2040	केतु	19/03/2041	शुक्र	29/07/2043
शनि	08/09/2037	बुध	30/11/2038	केतु	19/03/2040	शुक्र	19/05/2041	सूर्य	14/09/2043
बुध	02/02/2038	केतु	18/12/2038	शुक्र	13/06/2040	सूर्य	06/06/2041	चंद्र	30/11/2043
केतु	03/04/2038	शुक्र	07/02/2039	सूर्य	09/07/2040	चंद्र	06/07/2041	मंगल	23/01/2044

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
23/01/2044		30/04/2046		07/01/2049		06/06/2049		06/08/2050	
30/04/2046		07/01/2049		06/06/2049		06/08/2050		12/12/2050	
गुरु	13/05/2044	शनि	03/10/2046	केतु	16/01/2049	शुक्र	16/08/2049	सूर्य	12/08/2050
शनि	21/09/2044	बुध	19/02/2047	शुक्र	10/02/2049	सूर्य	06/09/2049	चंद्र	23/08/2050
बुध	16/01/2045	केतु	18/04/2047	सूर्य	17/02/2049	चंद्र	11/10/2049	मंगल	30/08/2050
केतु	05/03/2045	शुक्र	28/09/2047	चंद्र	02/03/2049	मंगल	05/11/2049	राहु	18/09/2050
शुक्र	21/07/2045	सूर्य	17/11/2047	मंगल	11/03/2049	राहु	08/01/2050	गुरु	05/10/2050
सूर्य	01/09/2045	चंद्र	07/02/2048	राहु	02/04/2049	गुरु	06/03/2050	शनि	26/10/2050
चंद्र	09/11/2045	मंगल	04/04/2048	गुरु	22/04/2049	शनि	13/05/2050	बुध	13/11/2050
मंगल	27/12/2045	राहु	29/08/2048	शनि	15/05/2049	बुध	12/07/2050	केतु	20/11/2050
राहु	30/04/2046	गुरु	07/01/2049	बुध	06/06/2049	केतु	06/08/2050	शुक्र	12/12/2050

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
12/12/2050		13/07/2051		09/12/2051		26/12/2052		02/12/2053	
13/07/2051		09/12/2051		26/12/2052		02/12/2053		11/01/2055	
चंद्र	29/12/2050	मंगल	21/07/2051	राहु	04/02/2052	गुरु	10/02/2053	शनि	04/02/2054
मंगल	11/01/2051	राहु	13/08/2051	गुरु	26/03/2052	शनि	05/04/2053	बुध	03/04/2054
राहु	12/02/2051	गुरु	02/09/2051	शनि	26/05/2052	बुध	23/05/2053	केतु	26/04/2054
गुरु	12/03/2051	शनि	25/09/2051	बुध	20/07/2052	केतु	12/06/2053	शुक्र	03/07/2054
शनि	15/04/2051	बुध	16/10/2051	केतु	11/08/2052	शुक्र	08/08/2053	सूर्य	23/07/2054
बुध	15/05/2051	केतु	25/10/2051	शुक्र	14/10/2052	सूर्य	25/08/2053	चंद्र	26/08/2054
केतु	27/05/2051	शुक्र	19/11/2051	सूर्य	02/11/2052	चंद्र	22/09/2053	मंगल	18/09/2054
शुक्र	02/07/2051	सूर्य	26/11/2051	चंद्र	04/12/2052	मंगल	12/10/2053	राहु	18/11/2054
सूर्य	13/07/2051	चंद्र	09/12/2051	मंगल	26/12/2052	राहु	02/12/2053	गुरु	11/01/2055

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
11/01/2055		08/01/2056		10/05/2059		09/05/2060		08/01/2062	
08/01/2056		10/05/2059		09/05/2060		08/01/2062		10/03/2063	
बुध	03/03/2055	शुक्र	29/07/2056	सूर्य	28/05/2059	चंद्र	29/06/2060	मंगल	02/02/2062
केतु	24/03/2055	सूर्य	28/09/2056	चंद्र	27/06/2059	मंगल	03/08/2060	राहु	07/04/2062
शुक्र	24/05/2055	चंद्र	07/01/2057	मंगल	19/07/2059	राहु	03/11/2060	गुरु	02/06/2062
सूर्य	11/06/2055	मंगल	19/03/2057	राहु	12/09/2059	गुरु	23/01/2061	शनि	09/08/2062
चंद्र	11/07/2055	राहु	18/09/2057	गुरु	30/10/2059	शनि	29/04/2061	बुध	08/10/2062
मंगल	01/08/2055	गुरु	27/02/2058	शनि	27/12/2059	बुध	24/07/2061	केतु	02/11/2062
राहु	25/09/2055	शनि	08/09/2058	बुध	17/02/2060	केतु	29/08/2061	शुक्र	12/01/2063
गुरु	12/11/2055	बुध	28/02/2059	केतु	09/03/2060	शुक्र	08/12/2061	सूर्य	02/02/2063
शनि	08/01/2056	केतु	10/05/2059	शुक्र	09/05/2060	सूर्य	08/01/2062	चंद्र	10/03/2063

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
10/03/2063		10/03/2066		08/11/2068		08/01/2072		08/11/2074	
10/03/2066		08/11/2068		08/01/2072		08/11/2074		08/01/2076	
राहु	21/08/2063	गुरु	17/07/2066	शनि	10/05/2069	बुध	03/06/2072	केतु	03/12/2074
गुरु	14/01/2064	शनि	19/12/2066	बुध	21/10/2069	केतु	02/08/2072	शुक्र	12/02/2075
शनि	06/07/2064	बुध	06/05/2067	केतु	27/12/2069	शुक्र	22/01/2073	सूर्य	05/03/2075
बुध	08/12/2064	केतु	01/07/2067	शुक्र	08/07/2070	सूर्य	14/03/2073	चंद्र	10/04/2075
केतु	10/02/2065	शुक्र	11/12/2067	सूर्य	04/09/2070	चंद्र	09/06/2073	मंगल	05/05/2075
शुक्र	12/08/2065	सूर्य	29/01/2068	चंद्र	09/12/2070	मंगल	08/08/2073	राहु	08/07/2075
सूर्य	05/10/2065	चंद्र	19/04/2068	मंगल	15/02/2071	राहु	10/01/2074	गुरु	02/09/2075
चंद्र	05/01/2066	मंगल	15/06/2068	राहु	07/08/2071	गुरु	28/05/2074	शनि	09/11/2075
मंगल	10/03/2066	राहु	08/11/2068	गुरु	08/01/2072	शनि	08/11/2074	बुध	08/01/2076

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
08/01/2076		27/04/2076		26/10/2076		03/03/2077		26/01/2078	
27/04/2076		26/10/2076		03/03/2077		26/01/2078		14/11/2078	
सूर्य	14/01/2076	चंद्र	12/05/2076	मंगल	03/11/2076	राहु	22/04/2077	गुरु	06/03/2078
चंद्र	23/01/2076	मंगल	23/05/2076	राहु	22/11/2076	गुरु	04/06/2077	शनि	21/04/2078
मंगल	29/01/2076	राहु	19/06/2076	गुरु	09/12/2076	शनि	26/07/2077	बुध	02/06/2078
राहु	15/02/2076	गुरु	13/07/2076	शनि	29/12/2076	बुध	11/09/2077	केतु	19/06/2078
गुरु	29/02/2076	शनि	11/08/2076	बुध	16/01/2077	केतु	30/09/2077	शुक्र	06/08/2078
शनि	18/03/2076	बुध	06/09/2076	केतु	24/01/2077	शुक्र	24/11/2077	सूर्य	21/08/2078
बुध	02/04/2076	केतु	17/09/2076	शुक्र	14/02/2077	सूर्य	10/12/2077	चंद्र	14/09/2078
केतु	09/04/2076	शुक्र	17/10/2076	सूर्य	21/02/2077	चंद्र	07/01/2078	मंगल	01/10/2078
शुक्र	27/04/2076	सूर्य	26/10/2076	चंद्र	03/03/2077	मंगल	26/01/2078	राहु	14/11/2078

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - मंगल - गुरु	
04/10/2025 23:37	
27/11/2025 23:02	
गुरु	12/10/2025 04:20
शनि	20/10/2025 17:27
बुध	28/10/2025 08:58
केतु	31/10/2025 12:32
शुक्र	09/11/2025 12:26
सूर्य	12/11/2025 05:12
चंद्र	16/11/2025 17:09
मंगल	19/11/2025 20:43
राहु	27/11/2025 23:02

शनि - मंगल - शनि	
27/11/2025 23:02	
31/01/2026 01:21	
शनि	08/12/2025 02:36
बुध	17/12/2025 04:32
केतु	20/12/2025 22:16
शुक्र	31/12/2025 14:39
सूर्य	03/01/2026 19:34
चंद्र	09/01/2026 03:46
मंगल	12/01/2026 21:30
राहु	22/01/2026 12:14
गुरु	31/01/2026 01:21

शनि - मंगल - बुध	
31/01/2026 01:21	
29/03/2026 09:44	
बुध	08/02/2026 04:20
केतु	11/02/2026 12:38
शुक्र	21/02/2026 02:01
सूर्य	23/02/2026 22:51
चंद्र	28/02/2026 17:32
मंगल	04/03/2026 01:50
राहु	12/03/2026 16:17
गुरु	20/03/2026 07:48
शनि	29/03/2026 09:44

शनि - मंगल - केतु	
29/03/2026 09:44	
22/04/2026 00:29	
केतु	30/03/2026 18:48
शुक्र	03/04/2026 17:15
सूर्य	04/04/2026 21:35
चंद्र	06/04/2026 20:49
मंगल	08/04/2026 05:53
राहु	11/04/2026 18:53
गुरु	14/04/2026 22:27
शनि	18/04/2026 16:11
बुध	22/04/2026 00:29

शनि - मंगल - शुक्र	
22/04/2026 00:29	
28/06/2026 11:45	
शुक्र	03/05/2026 06:21
सूर्य	06/05/2026 15:19
चंद्र	12/05/2026 06:16
मंगल	16/05/2026 04:43
राहु	26/05/2026 07:37
गुरु	04/06/2026 07:31
शनि	14/06/2026 23:54
बुध	24/06/2026 13:18
केतु	28/06/2026 11:45

शनि - मंगल - सूर्य	
28/06/2026 11:45	
18/07/2026 17:32	
सूर्य	29/06/2026 12:03
चंद्र	01/07/2026 04:31
मंगल	02/07/2026 08:52
राहु	05/07/2026 09:44
गुरु	08/07/2026 02:30
शनि	11/07/2026 07:25
बुध	14/07/2026 04:14
केतु	15/07/2026 08:34
शुक्र	18/07/2026 17:32

शनि - मंगल - चंद्र	
18/07/2026 17:32	
21/08/2026 11:10	
चंद्र	21/07/2026 13:00
मंगल	23/07/2026 12:14
राहु	28/07/2026 13:41
गुरु	02/08/2026 01:38
शनि	07/08/2026 09:49
बुध	12/08/2026 04:31
केतु	14/08/2026 03:45
शुक्र	19/08/2026 18:42
सूर्य	21/08/2026 11:10

शनि - राहु - राहु	
21/08/2026 11:10	
24/01/2027 14:38	
राहु	13/09/2026 21:18
गुरु	04/10/2026 16:57
शनि	29/10/2026 10:18
बुध	20/11/2026 13:12
केतु	29/11/2026 15:48
शुक्र	25/12/2026 16:22
सूर्य	02/01/2027 11:45
चंद्र	15/01/2027 12:02
मंगल	24/01/2027 14:38

शनि - राहु - गुरु	
24/01/2027 14:38	
12/06/2027 09:43	
गुरु	12/02/2027 02:47
शनि	06/03/2027 02:12
बुध	25/03/2027 18:06
केतु	02/04/2027 20:25
शुक्र	25/04/2027 23:36
सूर्य	02/05/2027 22:09
चंद्र	14/05/2027 11:45
मंगल	22/05/2027 14:03
राहु	12/06/2027 09:43

शनि - राहु - शनि	
12/06/2027 09:43	
24/11/2027 05:23	
शनि	08/07/2027 12:02
बुध	31/07/2027 20:25
केतु	10/08/2027 11:10
शुक्र	06/09/2027 22:26
सूर्य	15/09/2027 04:13
चंद्र	28/09/2027 21:52
मंगल	08/10/2027 12:36
राहु	02/11/2027 05:57
गुरु	24/11/2027 05:23

शनि - राहु - बुध	
24/11/2027 05:23	
19/04/2028 16:39	
बुध	15/12/2027 02:46
केतु	23/12/2027 17:14
शुक्र	17/01/2028 07:07
सूर्य	24/01/2028 16:04
चंद्र	05/02/2028 23:01
मंगल	14/02/2028 13:28
राहु	07/03/2028 16:22
गुरु	27/03/2028 08:16
शनि	19/04/2028 16:39

शनि - राहु - केतु	
19/04/2028 16:39	
19/06/2028 10:00	
केतु	23/04/2028 05:40
शुक्र	03/05/2028 08:33
सूर्य	06/05/2028 09:25
चंद्र	11/05/2028 10:52
मंगल	14/05/2028 23:53
राहु	24/05/2028 02:29
गुरु	01/06/2028 04:48
शनि	10/06/2028 19:32
बुध	19/06/2028 10:00

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - राहु - शुक्र	
19/06/2028 10:00	
09/12/2028 21:51	
शुक्र	18/07/2028 07:58
सूर्य	27/07/2028 00:10
चंद्र	10/08/2028 11:09
मंगल	20/08/2028 14:03
राहु	15/09/2028 14:37
गुरु	08/10/2028 17:48
शनि	05/11/2028 05:05
बुध	29/11/2028 18:57
केतु	09/12/2028 21:51

शनि - राहु - सूर्य	
09/12/2028 21:51	
30/01/2029 23:00	
सूर्य	12/12/2028 12:18
चंद्र	16/12/2028 20:24
मंगल	19/12/2028 21:16
राहु	27/12/2028 16:38
गुरु	03/01/2029 15:12
शनि	11/01/2029 20:59
बुध	19/01/2029 05:56
केतु	22/01/2029 06:49
शुक्र	30/01/2029 23:00

शनि - राहु - चंद्र	
30/01/2029 23:00	
27/04/2029 16:56	
चंद्र	07/02/2029 04:30
मंगल	12/02/2029 05:56
राहु	25/02/2029 06:14
गुरु	08/03/2029 19:49
शनि	22/03/2029 13:27
बुध	03/04/2029 20:24
केतु	08/04/2029 21:51
शुक्र	23/04/2029 08:50
सूर्य	27/04/2029 16:56

शनि - राहु - मंगल	
27/04/2029 16:56	
27/06/2029 10:16	
मंगल	01/05/2029 05:56
राहु	10/05/2029 08:32
गुरु	18/05/2029 10:51
शनि	28/05/2029 01:36
बुध	05/06/2029 16:03
केतु	09/06/2029 05:04
शुक्र	19/06/2029 07:58
सूर्य	22/06/2029 08:50
चंद्र	27/06/2029 10:16

शनि - गुरु - गुरु	
27/06/2029 10:16	
28/10/2029 19:14	
गुरु	13/07/2029 21:04
शनि	02/08/2029 09:53
बुध	19/08/2029 21:21
केतु	27/08/2029 02:05
शुक्र	16/09/2029 15:34
सूर्य	22/09/2029 19:37
चंद्र	03/10/2029 02:22
मंगल	10/10/2029 07:05
राहु	28/10/2029 19:14

शनि - गुरु - शनि	
28/10/2029 19:14	
24/03/2030 07:22	
शनि	20/11/2029 23:57
बुध	11/12/2029 18:05
केतु	20/12/2029 07:11
शुक्र	13/01/2030 17:12
सूर्य	21/01/2030 01:01
चंद्र	02/02/2030 06:02
मंगल	10/02/2030 19:08
राहु	04/03/2030 18:33
गुरु	24/03/2030 07:22

शनि - गुरु - बुध	
24/03/2030 07:22	
02/08/2030 09:24	
बुध	11/04/2030 21:04
केतु	19/04/2030 12:35
शुक्र	11/05/2030 08:55
सूर्य	17/05/2030 22:13
चंद्र	28/05/2030 20:23
मंगल	05/06/2030 11:54
राहु	25/06/2030 03:48
गुरु	12/07/2030 15:16
शनि	02/08/2030 09:24

शनि - गुरु - केतु	
02/08/2030 09:24	
25/09/2030 08:49	
केतु	05/08/2030 12:58
शुक्र	14/08/2030 12:52
सूर्य	17/08/2030 05:38
चंद्र	21/08/2030 17:35
मंगल	24/08/2030 21:09
राहु	01/09/2030 23:28
गुरु	09/09/2030 04:11
शनि	17/09/2030 17:18
बुध	25/09/2030 08:49

शनि - गुरु - शुक्र	
25/09/2030 08:49	
26/02/2031 14:01	
शुक्र	21/10/2030 01:41
सूर्य	28/10/2030 18:44
चंद्र	10/11/2030 15:10
मंगल	19/11/2030 15:05
राहु	12/12/2030 18:15
गुरु	02/01/2031 07:45
शनि	26/01/2031 17:46
बुध	17/02/2031 14:07
केतु	26/02/2031 14:01

शनि - गुरु - सूर्य	
26/02/2031 14:01	
13/04/2031 20:22	
सूर्य	28/02/2031 21:32
चंद्र	04/03/2031 18:04
मंगल	07/03/2031 10:50
राहु	14/03/2031 09:23
गुरु	20/03/2031 13:26
शनि	27/03/2031 21:14
बुध	03/04/2031 10:33
केतु	06/04/2031 03:19
शुक्र	13/04/2031 20:22

शनि - गुरु - चंद्र	
13/04/2031 20:22	
29/06/2031 22:58	
चंद्र	20/04/2031 06:35
मंगल	24/04/2031 18:33
राहु	06/05/2031 08:08
गुरु	16/05/2031 14:53
शनि	28/05/2031 19:53
बुध	08/06/2031 18:04
केतु	13/06/2031 06:01
शुक्र	26/06/2031 02:27
सूर्य	29/06/2031 22:58

शनि - गुरु - मंगल	
29/06/2031 22:58	
22/08/2031 22:24	
मंगल	03/07/2031 02:32
राहु	11/07/2031 04:51
गुरु	18/07/2031 09:35
शनि	26/07/2031 22:41
बुध	03/08/2031 14:12
केतु	06/08/2031 17:46
शुक्र	15/08/2031 17:40
सूर्य	18/08/2031 10:27
चंद्र	22/08/2031 22:24

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - गुरु - राहु	
22/08/2031 22:24	
08/01/2032 17:28	
राहु	12/09/2031 18:03
गुरु	01/10/2031 06:12
शनि	23/10/2031 05:37
बुध	11/11/2031 21:31
केतु	19/11/2031 23:50
शुक्र	13/12/2031 03:01
सूर्य	20/12/2031 01:34
चंद्र	31/12/2031 15:10
मंगल	08/01/2032 17:28

बुध - बुध - बुध	
08/01/2032 17:28	
12/05/2032 08:16	
बुध	26/01/2032 09:10
केतु	02/02/2032 15:38
शुक्र	23/02/2032 10:06
सूर्य	29/02/2032 15:38
चंद्र	11/03/2032 00:52
मंगल	18/03/2032 07:20
राहु	05/04/2032 23:57
गुरु	22/04/2032 14:43
शनि	12/05/2032 08:16

बुध - बुध - केतु	
12/05/2032 08:16	
02/07/2032 15:46	
केतु	15/05/2032 08:06
शुक्र	23/05/2032 21:21
सूर्य	26/05/2032 10:56
चंद्र	30/05/2032 17:33
मंगल	02/06/2032 17:23
राहु	10/06/2032 10:07
गुरु	17/06/2032 06:19
शनि	25/06/2032 09:18
बुध	02/07/2032 15:46

बुध - बुध - शुक्र	
02/07/2032 15:46	
26/11/2032 06:20	
शुक्र	27/07/2032 02:12
सूर्य	03/08/2032 10:07
चंद्र	15/08/2032 15:20
मंगल	24/08/2032 04:35
राहु	15/09/2032 04:22
गुरु	04/10/2032 17:31
शनि	27/10/2032 22:37
बुध	17/11/2032 17:05
केतु	26/11/2032 06:20

बुध - बुध - सूर्य	
26/11/2032 06:20	
09/01/2033 05:55	
सूर्य	28/11/2032 11:07
चंद्र	02/12/2032 03:05
मंगल	04/12/2032 16:39
राहु	11/12/2032 07:00
गुरु	17/12/2032 03:44
शनि	24/12/2032 02:52
बुध	30/12/2032 08:24
केतु	01/01/2033 21:59
शुक्र	09/01/2033 05:55

बुध - बुध - चंद्र	
09/01/2033 05:55	
23/03/2033 13:12	
चंद्र	15/01/2033 08:31
मंगल	19/01/2033 15:09
राहु	30/01/2033 15:02
गुरु	09/02/2033 09:36
शनि	21/02/2033 00:10
बुध	03/03/2033 09:24
केतु	07/03/2033 16:01
शुक्र	19/03/2033 21:14
सूर्य	23/03/2033 13:12

बुध - बुध - मंगल	
23/03/2033 13:12	
13/05/2033 20:42	
मंगल	26/03/2033 13:02
राहु	03/04/2033 05:46
गुरु	10/04/2033 01:58
शनि	18/04/2033 04:57
बुध	25/04/2033 11:25
केतु	28/04/2033 11:15
शुक्र	07/05/2033 00:30
सूर्य	09/05/2033 14:04
चंद्र	13/05/2033 20:42

बुध - बुध - राहु	
13/05/2033 20:42	
22/09/2033 19:25	
राहु	02/06/2033 15:42
गुरु	20/06/2033 05:56
शनि	11/07/2033 03:20
बुध	29/07/2033 19:57
केतु	06/08/2033 12:41
शुक्र	28/08/2033 12:28
सूर्य	04/09/2033 02:48
चंद्र	15/09/2033 02:42
मंगल	22/09/2033 19:25

बुध - बुध - गुरु	
22/09/2033 19:25	
18/01/2034 02:17	
गुरु	08/10/2033 10:44
शनि	27/10/2033 00:25
बुध	12/11/2033 15:11
केतु	19/11/2033 11:23
शुक्र	09/12/2033 00:32
सूर्य	14/12/2033 21:17
चंद्र	24/12/2033 15:51
मंगल	31/12/2033 12:03
राहु	18/01/2034 02:17

बुध - बुध - शनि	
18/01/2034 02:17	
06/06/2034 08:55	
शनि	09/02/2034 03:32
बुध	28/02/2034 21:04
केतु	09/03/2034 00:04
शुक्र	01/04/2034 05:10
सूर्य	08/04/2034 04:18
चंद्र	19/04/2034 18:51
मंगल	27/04/2034 21:50
राहु	18/05/2034 19:14
गुरु	06/06/2034 08:55

बुध - केतु - केतु	
06/06/2034 08:55	
27/06/2034 12:01	
केतु	07/06/2034 14:30
शुक्र	11/06/2034 03:01
सूर्य	12/06/2034 04:22
चंद्र	13/06/2034 22:38
मंगल	15/06/2034 04:13
राहु	18/06/2034 08:16
गुरु	21/06/2034 03:53
शनि	24/06/2034 12:10
बुध	27/06/2034 12:01

बुध - केतु - शुक्र	
27/06/2034 12:01	
26/08/2034 20:50	
शुक्र	07/07/2034 13:29
सूर्य	10/07/2034 13:55
चंद्र	15/07/2034 14:40
मंगल	19/07/2034 03:10
राहु	28/07/2034 04:30
गुरु	05/08/2034 05:41
शनि	14/08/2034 19:04
बुध	23/08/2034 08:19
केतु	26/08/2034 20:50

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - केतु - सूर्य	
26/08/2034 20:50	
13/09/2034 23:29	
सूर्य	27/08/2034 18:34
चंद्र	29/08/2034 06:47
मंगल	30/08/2034 08:09
राहु	02/09/2034 01:21
गुरु	04/09/2034 11:18
शनि	07/09/2034 08:07
बुध	09/09/2034 21:41
केतु	10/09/2034 23:03
शुक्र	13/09/2034 23:29

बुध - केतु - चंद्र	
13/09/2034 23:29	
14/10/2034 03:54	
चंद्र	16/09/2034 11:51
मंगल	18/09/2034 06:07
राहु	22/09/2034 18:46
गुरु	26/09/2034 19:22
शनि	01/10/2034 14:04
बुध	05/10/2034 20:41
केतु	07/10/2034 14:56
शुक्र	12/10/2034 15:41
सूर्य	14/10/2034 03:54

बुध - केतु - मंगल	
14/10/2034 03:54	
04/11/2034 06:59	
मंगल	15/10/2034 09:29
राहु	18/10/2034 13:32
गुरु	21/10/2034 09:09
शनि	24/10/2034 17:27
बुध	27/10/2034 17:17
केतु	28/10/2034 22:52
शुक्र	01/11/2034 11:22
सूर्य	02/11/2034 12:44
चंद्र	04/11/2034 06:59

बुध - केतु - राहु	
04/11/2034 06:59	
28/12/2034 14:56	
राहु	12/11/2034 10:35
गुरु	19/11/2034 16:26
शनि	28/11/2034 06:54
बुध	05/12/2034 23:37
केतु	09/12/2034 03:41
शुक्र	18/12/2034 05:00
सूर्य	20/12/2034 22:12
चंद्र	25/12/2034 10:52
मंगल	28/12/2034 14:56

बुध - केतु - गुरु	
28/12/2034 14:56	
14/02/2035 21:59	
गुरु	04/01/2035 01:28
शनि	11/01/2035 16:59
बुध	18/01/2035 13:11
केतु	21/01/2035 08:48
शुक्र	29/01/2035 09:59
सूर्य	31/01/2035 19:56
चंद्र	04/02/2035 20:31
मंगल	07/02/2035 16:08
राहु	14/02/2035 21:59

बुध - केतु - शनि	
14/02/2035 21:59	
13/04/2035 06:22	
शनि	23/02/2035 23:55
बुध	04/03/2035 02:54
केतु	07/03/2035 11:12
शुक्र	17/03/2035 00:35
सूर्य	19/03/2035 21:25
चंद्र	24/03/2035 16:06
मंगल	28/03/2035 00:24
राहु	05/04/2035 14:51
गुरु	13/04/2035 06:22

बुध - केतु - बुध	
13/04/2035 06:22	
03/06/2035 13:52	
बुध	20/04/2035 12:50
केतु	23/04/2035 12:40
शुक्र	02/05/2035 01:55
सूर्य	04/05/2035 15:30
चंद्र	08/05/2035 22:07
मंगल	11/05/2035 21:58
राहु	19/05/2035 14:41
गुरु	26/05/2035 10:53
शनि	03/06/2035 13:52

बुध - शुक्र - शुक्र	
03/06/2035 13:52	
23/11/2035 01:22	
शुक्र	02/07/2035 07:47
सूर्य	10/07/2035 22:46
चंद्र	25/07/2035 07:43
मंगल	04/08/2035 09:12
राहु	30/08/2035 06:07
गुरु	22/09/2035 06:03
शनि	19/10/2035 13:28
बुध	12/11/2035 23:54
केतु	23/11/2035 01:22

बुध - शुक्र - सूर्य	
23/11/2035 01:22	
13/01/2036 19:13	
सूर्य	25/11/2035 15:28
चंद्र	29/11/2035 22:57
मंगल	02/12/2035 23:24
राहु	10/12/2035 17:40
गुरु	17/12/2035 15:15
शनि	25/12/2035 19:53
बुध	02/01/2036 03:48
केतु	05/01/2036 04:15
शुक्र	13/01/2036 19:13

बुध - शुक्र - चंद्र	
13/01/2036 19:13	
09/04/2036 00:58	
चंद्र	20/01/2036 23:42
मंगल	26/01/2036 00:26
राहु	07/02/2036 22:54
गुरु	19/02/2036 10:52
शनि	04/03/2036 02:35
बुध	16/03/2036 07:48
केतु	21/03/2036 08:32
शुक्र	04/04/2036 17:29
सूर्य	09/04/2036 00:58

बुध - शुक्र - मंगल	
09/04/2036 00:58	
08/06/2036 09:48	
मंगल	12/04/2036 13:29
राहु	21/04/2036 14:49
गुरु	29/04/2036 15:59
शनि	09/05/2036 05:23
बुध	17/05/2036 18:38
केतु	21/05/2036 07:09
शुक्र	31/05/2036 08:37
सूर्य	03/06/2036 09:04
चंद्र	08/06/2036 09:48

बुध - शुक्र - राहु	
08/06/2036 09:48	
10/11/2036 15:21	
राहु	01/07/2036 16:38
गुरु	22/07/2036 09:22
शनि	15/08/2036 23:15
बुध	06/09/2036 23:02
केतु	16/09/2036 00:22
शुक्र	11/10/2036 21:17
सूर्य	19/10/2036 15:34
चंद्र	01/11/2036 14:01
मंगल	10/11/2036 15:21

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - मंगल - गुरु - सूर्य	
09/11/2025 12:26	
12/11/2025 05:12	
सूर्य	09/11/2025 15:40
चंद्र	09/11/2025 21:04
मंगल	10/11/2025 00:51
राहु	10/11/2025 10:34
गुरु	10/11/2025 19:12
शनि	11/11/2025 05:27
बुध	11/11/2025 14:38
केतु	11/11/2025 18:25
शुक्र	12/11/2025 05:12

शनि - मंगल - गुरु - चंद्र	
12/11/2025 05:12	
16/11/2025 17:09	
चंद्र	12/11/2025 14:12
मंगल	12/11/2025 20:30
राहु	13/11/2025 12:42
गुरु	14/11/2025 03:05
शनि	14/11/2025 20:11
बुध	15/11/2025 11:28
केतु	15/11/2025 17:46
शुक्र	16/11/2025 11:46
सूर्य	16/11/2025 17:09

शनि - मंगल - गुरु - मंगल	
16/11/2025 17:09	
19/11/2025 20:43	
मंगल	16/11/2025 21:34
राहु	17/11/2025 08:54
गुरु	17/11/2025 18:59
शनि	18/11/2025 06:56
बुध	18/11/2025 17:39
केतु	18/11/2025 22:03
शुक्र	19/11/2025 10:39
सूर्य	19/11/2025 14:26
चंद्र	19/11/2025 20:43

शनि - मंगल - गुरु - राहु	
19/11/2025 20:43	
27/11/2025 23:02	
राहु	21/11/2025 01:52
गुरु	22/11/2025 03:47
शनि	23/11/2025 10:33
बुध	24/11/2025 14:04
केतु	25/11/2025 01:25
शुक्र	26/11/2025 09:48
सूर्य	26/11/2025 19:31
चंद्र	27/11/2025 11:42
मंगल	27/11/2025 23:02

शनि - मंगल - शनि - शनि	
27/11/2025 23:02	
08/12/2025 02:36	
शनि	29/11/2025 13:36
बुध	01/12/2025 00:06
केतु	01/12/2025 14:19
शुक्र	03/12/2025 06:55
सूर्य	03/12/2025 19:05
चंद्र	04/12/2025 15:23
मंगल	05/12/2025 05:36
राहु	06/12/2025 18:08
गुरु	08/12/2025 02:36

शनि - मंगल - शनि - बुध	
08/12/2025 02:36	
17/12/2025 04:32	
बुध	09/12/2025 09:29
केतु	09/12/2025 22:11
शुक्र	11/12/2025 10:31
सूर्य	11/12/2025 21:24
चंद्र	12/12/2025 15:34
मंगल	13/12/2025 04:17
राहु	14/12/2025 12:58
गुरु	15/12/2025 18:02
शनि	17/12/2025 04:32

शनि - मंगल - शनि - केतु	
17/12/2025 04:32	
20/12/2025 22:16	
केतु	17/12/2025 09:46
शुक्र	18/12/2025 00:43
सूर्य	18/12/2025 05:12
चंद्र	18/12/2025 12:41
मंगल	18/12/2025 17:55
राहु	19/12/2025 07:23
गुरु	19/12/2025 19:21
शनि	20/12/2025 09:33
बुध	20/12/2025 22:16

शनि - मंगल - शनि - शुक्र	
20/12/2025 22:16	
31/12/2025 14:39	
शुक्र	22/12/2025 17:00
सूर्य	23/12/2025 05:49
चंद्र	24/12/2025 03:11
मंगल	24/12/2025 18:08
राहु	26/12/2025 08:36
गुरु	27/12/2025 18:47
शनि	29/12/2025 11:22
बुध	30/12/2025 23:42
केतु	31/12/2025 14:39

शनि - मंगल - शनि - सूर्य	
31/12/2025 14:39	
03/01/2026 19:34	
सूर्य	31/12/2025 18:30
चंद्र	01/01/2026 00:54
मंगल	01/01/2026 05:24
राहु	01/01/2026 16:56
गुरु	02/01/2026 03:11
शनि	02/01/2026 15:22
बुध	03/01/2026 02:16
केतु	03/01/2026 06:45
शुक्र	03/01/2026 19:34

शनि - मंगल - शनि - चंद्र	
03/01/2026 19:34	
09/01/2026 03:46	
चंद्र	04/01/2026 06:15
मंगल	04/01/2026 13:44
राहु	05/01/2026 08:57
गुरु	06/01/2026 02:03
शनि	06/01/2026 22:21
बुध	07/01/2026 16:30
केतु	07/01/2026 23:59
शुक्र	08/01/2026 21:21
सूर्य	09/01/2026 03:46

शनि - मंगल - शनि - मंगल	
09/01/2026 03:46	
12/01/2026 21:30	
मंगल	09/01/2026 09:00
राहु	09/01/2026 22:27
गुरु	10/01/2026 10:25
शनि	11/01/2026 00:38
बुध	11/01/2026 13:20
केतु	11/01/2026 18:34
शुक्र	12/01/2026 09:32
सूर्य	12/01/2026 14:01
चंद्र	12/01/2026 21:30

शनि - मंगल - शनि - राहु	
12/01/2026 21:30	
22/01/2026 12:14	
राहु	14/01/2026 08:06
गुरु	15/01/2026 14:52
शनि	17/01/2026 03:24
बुध	18/01/2026 12:06
केतु	19/01/2026 01:33
शुक्र	20/01/2026 16:01
सूर्य	21/01/2026 03:33
चंद्र	21/01/2026 22:47
मंगल	22/01/2026 12:14

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - मंगल - शनि - गुरु	
22/01/2026 12:14	
31/01/2026 01:21	
गुरु	23/01/2026 15:35
शनि	25/01/2026 00:04
बुध	26/01/2026 05:07
केतु	26/01/2026 17:05
शुक्र	28/01/2026 03:16
सूर्य	28/01/2026 13:32
चंद्र	29/01/2026 06:37
मंगल	29/01/2026 18:35
राहु	31/01/2026 01:21

शनि - मंगल - बुध - बुध	
31/01/2026 01:21	
08/02/2026 04:20	
बुध	01/02/2026 04:58
केतु	01/02/2026 16:21
शुक्र	03/02/2026 00:51
सूर्य	03/02/2026 10:36
चंद्र	04/02/2026 02:51
मंगल	04/02/2026 14:13
राहु	05/02/2026 19:28
गुरु	06/02/2026 21:28
शनि	08/02/2026 04:20

शनि - मंगल - बुध - केतु	
08/02/2026 04:20	
11/02/2026 12:38	
केतु	08/02/2026 09:01
शुक्र	08/02/2026 22:24
सूर्य	09/02/2026 02:25
चंद्र	09/02/2026 09:06
मंगल	09/02/2026 13:47
राहु	10/02/2026 01:50
गुरु	10/02/2026 12:32
शनि	11/02/2026 01:15
बुध	11/02/2026 12:38

शनि - मंगल - बुध - शुक्र	
11/02/2026 12:38	
21/02/2026 02:01	
शुक्र	13/02/2026 02:51
सूर्य	13/02/2026 14:20
चंद्र	14/02/2026 09:27
मंगल	14/02/2026 22:50
राहु	16/02/2026 09:14
गुरु	17/02/2026 15:49
शनि	19/02/2026 04:09
बुध	20/02/2026 12:38
केतु	21/02/2026 02:01

शनि - मंगल - बुध - सूर्य	
21/02/2026 02:01	
23/02/2026 22:51	
सूर्य	21/02/2026 05:28
चंद्र	21/02/2026 11:12
मंगल	21/02/2026 15:13
राहु	22/02/2026 01:32
गुरु	22/02/2026 10:43
शनि	22/02/2026 21:36
बुध	23/02/2026 07:21
केतु	23/02/2026 11:22
शुक्र	23/02/2026 22:51

शनि - मंगल - बुध - चंद्र	
23/02/2026 22:51	
28/02/2026 17:32	
चंद्र	24/02/2026 08:24
मंगल	24/02/2026 15:05
राहु	25/02/2026 08:18
गुरु	25/02/2026 23:35
शनि	26/02/2026 17:45
बुध	27/02/2026 10:00
केतु	27/02/2026 16:41
शुक्र	28/02/2026 11:48
सूर्य	28/02/2026 17:32

शनि - मंगल - बुध - मंगल	
28/02/2026 17:32	
04/03/2026 01:50	
मंगल	28/02/2026 22:13
राहु	01/03/2026 10:16
गुरु	01/03/2026 20:58
शनि	02/03/2026 09:41
बुध	02/03/2026 21:04
केतु	03/03/2026 01:45
शुक्र	03/03/2026 15:07
सूर्य	03/03/2026 19:08
चंद्र	04/03/2026 01:50

शनि - मंगल - बुध - राहु	
04/03/2026 01:50	
12/03/2026 16:17	
राहु	05/03/2026 08:48
गुरु	06/03/2026 12:20
शनि	07/03/2026 21:01
बुध	09/03/2026 02:16
केतु	09/03/2026 14:18
शुक्र	11/03/2026 00:43
सूर्य	11/03/2026 11:02
चंद्र	12/03/2026 04:15
मंगल	12/03/2026 16:17

शनि - मंगल - बुध - गुरु	
12/03/2026 16:17	
20/03/2026 07:48	
गुरु	13/03/2026 16:45
शनि	14/03/2026 21:49
बुध	15/03/2026 23:49
केतु	16/03/2026 10:31
शुक्र	17/03/2026 17:06
सूर्य	18/03/2026 02:17
चंद्र	18/03/2026 17:34
मंगल	19/03/2026 04:17
राहु	20/03/2026 07:48

शनि - मंगल - बुध - शनि	
20/03/2026 07:48	
29/03/2026 09:44	
शनि	21/03/2026 18:19
बुध	23/03/2026 01:11
केतु	23/03/2026 13:54
शुक्र	25/03/2026 02:13
सूर्य	25/03/2026 13:07
चंद्र	26/03/2026 07:16
मंगल	26/03/2026 19:59
राहु	28/03/2026 04:41
गुरु	29/03/2026 09:44

शनि - मंगल - केतु - केतु	
29/03/2026 09:44	
30/03/2026 18:48	
केतु	29/03/2026 11:40
शुक्र	29/03/2026 17:10
सूर्य	29/03/2026 18:49
चंद्र	29/03/2026 21:35
मंगल	29/03/2026 23:30
राहु	30/03/2026 04:28
गुरु	30/03/2026 08:52
शनि	30/03/2026 14:07
बुध	30/03/2026 18:48

शनि - मंगल - केतु - शुक्र	
30/03/2026 18:48	
03/04/2026 17:15	
शुक्र	31/03/2026 10:32
सूर्य	31/03/2026 15:16
चंद्र	31/03/2026 23:08
मंगल	01/04/2026 04:38
राहु	01/04/2026 18:49
गुरु	02/04/2026 07:24
शनि	02/04/2026 22:22
बुध	03/04/2026 11:44
केतु	03/04/2026 17:15

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 12 वर्ष 8 मास 19 दिन

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
17/07/1963		05/04/1976		05/04/1992		05/04/2009		06/04/2027	
05/04/1976		05/04/1992		05/04/2009		06/04/2027		05/04/2038	
	17/07/1963	चंद्र	20/06/1978	बुध	02/10/1994	शुक्र	20/01/2012	सूर्य	21/04/2028
चंद्र	08/04/1965	बुध	23/10/1980	शुक्र	22/05/1997	सूर्य	05/10/2013	मंगल	10/06/2029
बुध	20/06/1967	शुक्र	18/04/1983	सूर्य	01/01/1999	मंगल	16/08/2015	गुरु	04/09/2030
शुक्र	17/10/1969	सूर्य	23/10/1984	मंगल	05/10/2000	गुरु	22/08/2017	शनि	01/01/2032
सूर्य	21/03/1971	मंगल	20/06/1986	गुरु	31/08/2002	शनि	24/10/2019	केतु	04/06/2033
मंगल	08/10/1972	गुरु	05/04/1988	शनि	19/09/2004	केतु	20/02/2022	चंद्र	10/12/2034
गुरु	14/06/1974	शनि	11/03/1990	केतु	01/12/2006	चंद्र	15/08/2024	बुध	21/07/2036
शनि	05/04/1976	केतु	05/04/1992	चंद्र	05/04/2009	बुध	06/04/2027	शुक्र	05/04/2038

मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
05/04/2038		05/04/2050		06/04/2063		05/04/2077	
05/04/2050		06/04/2063		05/04/2077		00/00/0000	
मंगल	03/07/2039	गुरु	20/09/2051	शनि	13/12/2064	केतु	15/03/2079
गुरु	05/11/2040	शनि	15/04/2053	केतु	05/10/2066	चंद्र	17/07/2079
शनि	18/04/2042	केतु	20/12/2054	चंद्र	09/09/2068		00/00/0000
केतु	06/11/2043	चंद्र	05/10/2056	बुध	29/09/2070		00/00/0000
चंद्र	02/07/2045	बुध	31/08/2058	शुक्र	30/11/2072		00/00/0000
बुध	06/04/2047	शुक्र	06/09/2060	सूर्य	30/03/2074		00/00/0000
शुक्र	14/02/2049	सूर्य	30/11/2061	मंगल	10/09/2075		00/00/0000
सूर्य	05/04/2050	मंगल	06/04/2063	गुरु	05/04/2077		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल	
17/07/1963		08/04/1965		20/06/1967		17/10/1969		21/03/1971	
08/04/1965		20/06/1967		17/10/1969		21/03/1971		08/10/1972	
	17/07/1963	बुध	04/08/1965	शुक्र	30/10/1967	सूर्य	06/12/1969	मंगल	19/05/1971
बुध	16/10/1963	शुक्र	07/12/1965	सूर्य	19/01/1968	मंगल	28/01/1970	गुरु	21/07/1971
शुक्र	10/02/1964	सूर्य	21/02/1966	मंगल	16/04/1968	गुरु	28/03/1970	शनि	27/09/1971
सूर्य	21/04/1964	मंगल	15/05/1966	गुरु	20/07/1968	शनि	29/05/1970	केतु	10/12/1971
मंगल	09/07/1964	गुरु	13/08/1966	शनि	31/10/1968	केतु	04/08/1970	चंद्र	26/02/1972
गुरु	01/10/1964	शनि	18/11/1966	केतु	18/02/1969	चंद्र	15/10/1970	बुध	19/05/1972
शनि	01/01/1965	केतु	01/03/1967	चंद्र	15/06/1969	बुध	30/12/1970	शुक्र	15/08/1972
केतु	08/04/1965	चंद्र	20/06/1967	बुध	17/10/1969	शुक्र	21/03/1971	सूर्य	08/10/1972

केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र	
08/10/1972		14/06/1974		05/04/1976		20/06/1978		23/10/1980	
14/06/1974		05/04/1976		20/06/1978		23/10/1980		18/04/1983	
गुरु	15/12/1972	शनि	01/09/1974	चंद्र	25/07/1976	बुध	23/10/1978	शुक्र	13/03/1981
शनि	28/02/1973	केतु	26/11/1974	बुध	20/11/1976	शुक्र	05/03/1979	सूर्य	07/06/1981
केतु	18/05/1973	चंद्र	25/02/1975	शुक्र	25/03/1977	सूर्य	26/05/1979	मंगल	09/09/1981
चंद्र	11/08/1973	बुध	02/06/1975	सूर्य	10/06/1977	मंगल	22/08/1979	गुरु	20/12/1981
बुध	09/11/1973	शुक्र	13/09/1975	मंगल	01/09/1977	गुरु	26/11/1979	शनि	08/04/1982
शुक्र	12/02/1974	सूर्य	14/11/1975	गुरु	30/11/1977	शनि	09/03/1980	केतु	03/08/1982
सूर्य	11/04/1974	मंगल	22/01/1976	शनि	08/03/1978	केतु	27/06/1980	चंद्र	06/12/1982
मंगल	14/06/1974	गुरु	05/04/1976	केतु	20/06/1978	चंद्र	23/10/1980	बुध	18/04/1983

चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु	
18/04/1983		23/10/1984		20/06/1986		05/04/1988		11/03/1990	
23/10/1984		20/06/1986		05/04/1988		11/03/1990		05/04/1992	
सूर्य	10/06/1983	मंगल	25/12/1984	गुरु	01/09/1986	शनि	29/06/1988	केतु	17/06/1990
मंगल	06/08/1983	गुरु	03/03/1985	शनि	19/11/1986	केतु	28/09/1988	चंद्र	29/09/1990
गुरु	07/10/1983	शनि	15/05/1985	केतु	12/02/1987	चंद्र	03/01/1989	बुध	18/01/1991
शनि	13/12/1983	केतु	01/08/1985	चंद्र	13/05/1987	बुध	17/04/1989	शुक्र	15/05/1991
केतु	23/02/1984	चंद्र	23/10/1985	बुध	17/08/1987	शुक्र	04/08/1989	सूर्य	26/07/1991
चंद्र	09/05/1984	बुध	20/01/1986	शुक्र	27/11/1987	सूर्य	10/10/1989	मंगल	12/10/1991
बुध	29/07/1984	शुक्र	24/04/1986	सूर्य	28/01/1988	मंगल	22/12/1989	गुरु	05/01/1992
शुक्र	23/10/1984	सूर्य	20/06/1986	मंगल	05/04/1988	गुरु	11/03/1990	शनि	05/04/1992

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु	
05/04/1992		02/10/1994		22/05/1997		01/01/1999		05/10/2000	
02/10/1994		22/05/1997		01/01/1999		05/10/2000		31/08/2002	
बुध	16/08/1992	शुक्र	28/02/1995	सूर्य	17/07/1997	मंगल	09/03/1999	गुरु	21/12/2000
शुक्र	04/01/1993	सूर्य	31/05/1995	मंगल	16/09/1997	गुरु	20/05/1999	शनि	15/03/2001
सूर्य	01/04/1993	मंगल	07/09/1995	गुरु	21/11/1997	शनि	05/08/1999	केतु	13/06/2001
मंगल	04/07/1993	गुरु	24/12/1995	शनि	31/01/1998	केतु	27/10/1999	चंद्र	17/09/2001
गुरु	14/10/1993	शनि	19/04/1996	केतु	17/04/1998	चंद्र	24/01/2000	बुध	28/12/2001
शनि	01/02/1994	केतु	21/08/1996	चंद्र	08/07/1998	बुध	27/04/2000	शुक्र	15/04/2002
केतु	29/05/1994	चंद्र	01/01/1997	बुध	02/10/1998	शुक्र	05/08/2000	सूर्य	20/06/2002
चंद्र	02/10/1994	बुध	22/05/1997	शुक्र	01/01/1999	सूर्य	05/10/2000	मंगल	31/08/2002

बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
31/08/2002		19/09/2004		01/12/2006		05/04/2009		20/01/2012	
19/09/2004		01/12/2006		05/04/2009		20/01/2012		05/10/2013	
शनि	30/11/2002	केतु	01/01/2005	चंद्र	29/03/2007	शुक्र	10/09/2009	सूर्य	19/03/2012
केतु	07/03/2003	चंद्र	21/04/2005	बुध	01/08/2007	सूर्य	16/12/2009	मंगल	23/05/2012
चंद्र	18/06/2003	बुध	17/08/2005	शुक्र	12/12/2007	मंगल	01/04/2010	गुरु	01/08/2012
बुध	06/10/2003	शुक्र	20/12/2005	सूर्य	02/03/2008	गुरु	24/07/2010	शनि	15/10/2012
शुक्र	30/01/2004	सूर्य	06/03/2006	मंगल	30/05/2008	शनि	24/11/2010	केतु	04/01/2013
सूर्य	10/04/2004	मंगल	28/05/2006	गुरु	03/09/2008	केतु	05/04/2011	चंद्र	31/03/2013
मंगल	27/06/2004	गुरु	26/08/2006	शनि	15/12/2008	चंद्र	24/08/2011	बुध	30/06/2013
गुरु	19/09/2004	शनि	01/12/2006	केतु	05/04/2009	बुध	20/01/2012	शुक्र	05/10/2013

शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र	
05/10/2013		16/08/2015		22/08/2017		24/10/2019		20/02/2022	
16/08/2015		22/08/2017		24/10/2019		20/02/2022		15/08/2024	
मंगल	14/12/2013	गुरु	06/11/2015	शनि	25/11/2017	केतु	11/02/2020	चंद्र	25/06/2022
गुरु	28/02/2014	शनि	03/02/2016	केतु	08/03/2018	चंद्र	07/06/2020	बुध	05/11/2022
शनि	21/05/2014	केतु	09/05/2016	चंद्र	25/06/2018	बुध	10/10/2020	शुक्र	26/03/2023
केतु	17/08/2014	चंद्र	18/08/2016	बुध	20/10/2018	शुक्र	19/02/2021	सूर्य	20/06/2023
चंद्र	19/11/2014	बुध	04/12/2016	शुक्र	20/02/2019	सूर्य	10/05/2021	मंगल	22/09/2023
बुध	27/02/2015	शुक्र	29/03/2017	सूर्य	06/05/2019	मंगल	06/08/2021	गुरु	01/01/2024
शुक्र	12/06/2015	सूर्य	06/06/2017	मंगल	27/07/2019	गुरु	10/11/2021	शनि	20/04/2024
सूर्य	16/08/2015	मंगल	22/08/2017	गुरु	24/10/2019	शनि	20/02/2022	केतु	15/08/2024

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
15/08/2024		06/04/2027		21/04/2028		10/06/2029		04/09/2030	
06/04/2027		21/04/2028		10/06/2029		04/09/2030		01/01/2032	
बुध	03/01/2025	सूर्य	12/05/2027	मंगल	03/06/2028	गुरु	31/07/2029	शनि	01/11/2030
शुक्र	02/06/2025	मंगल	20/06/2027	गुरु	19/07/2028	शनि	23/09/2029	केतु	03/01/2031
सूर्य	01/09/2025	गुरु	02/08/2027	शनि	07/09/2028	केतु	20/11/2029	चंद्र	11/03/2031
मंगल	10/12/2025	शनि	17/09/2027	केतु	31/10/2028	चंद्र	21/01/2030	बुध	21/05/2031
गुरु	28/03/2026	केतु	05/11/2027	चंद्र	27/12/2028	बुध	28/03/2030	शुक्र	04/08/2031
शनि	22/07/2026	चंद्र	28/12/2027	बुध	26/02/2029	शुक्र	06/06/2030	सूर्य	19/09/2031
केतु	24/11/2026	बुध	22/02/2028	शुक्र	02/05/2029	सूर्य	19/07/2030	मंगल	08/11/2031
चंद्र	06/04/2027	शुक्र	21/04/2028	सूर्य	10/06/2029	मंगल	04/09/2030	गुरु	01/01/2032

सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल	
01/01/2032		04/06/2033		10/12/2034		21/07/2036		05/04/2038	
04/06/2033		10/12/2034		21/07/2036		05/04/2038		03/07/2039	
केतु	09/03/2032	चंद्र	19/08/2033	बुध	06/03/2035	शुक्र	26/10/2036	मंगल	22/05/2038
चंद्र	19/05/2032	बुध	09/11/2033	शुक्र	06/06/2035	सूर्य	24/12/2036	गुरु	12/07/2038
बुध	03/08/2032	शुक्र	03/02/2034	सूर्य	01/08/2035	मंगल	26/02/2037	शनि	05/09/2038
शुक्र	23/10/2032	सूर्य	27/03/2034	मंगल	01/10/2035	गुरु	07/05/2037	केतु	02/11/2038
सूर्य	11/12/2032	मंगल	23/05/2034	गुरु	06/12/2035	शनि	21/07/2037	चंद्र	04/01/2039
मंगल	03/02/2033	गुरु	25/07/2034	शनि	15/02/2036	केतु	10/10/2037	बुध	11/03/2039
गुरु	02/04/2033	शनि	29/09/2034	केतु	01/05/2036	चंद्र	04/01/2038	शुक्र	21/05/2039
शनि	04/06/2033	केतु	10/12/2034	चंद्र	21/07/2036	बुध	05/04/2038	सूर्य	03/07/2039

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध	
03/07/2039		05/11/2040		18/04/2042		06/11/2043		02/07/2045	
05/11/2040		18/04/2042		06/11/2043		02/07/2045		06/04/2047	
गुरु	27/08/2039	शनि	08/01/2041	केतु	30/06/2042	चंद्र	28/01/2044	बुध	04/10/2045
शनि	25/10/2039	केतु	17/03/2041	चंद्र	16/09/2042	बुध	26/04/2044	शुक्र	12/01/2046
केतु	28/12/2039	चंद्र	29/05/2041	बुध	09/12/2042	शुक्र	29/07/2044	सूर्य	14/03/2046
चंद्र	04/03/2040	बुध	15/08/2041	शुक्र	06/03/2043	सूर्य	24/09/2044	मंगल	19/05/2046
बुध	15/05/2040	शुक्र	05/11/2041	सूर्य	29/04/2043	मंगल	25/11/2044	गुरु	30/07/2046
शुक्र	31/07/2040	सूर्य	25/12/2041	मंगल	27/06/2043	गुरु	01/02/2045	शनि	16/10/2046
सूर्य	15/09/2040	मंगल	18/02/2042	गुरु	29/08/2043	शनि	15/04/2045	केतु	07/01/2047
मंगल	05/11/2040	गुरु	18/04/2042	शनि	06/11/2043	केतु	02/07/2045	चंद्र	06/04/2047

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु	
06/04/2047		14/02/2049		05/04/2050		20/09/2051		15/04/2053	
14/02/2049		05/04/2050		20/09/2051		15/04/2053		20/12/2054	
शुक्र	20/07/2047	सूर्य	25/03/2049	गुरु	04/06/2050	शनि	28/11/2051	केतु	03/07/2053
सूर्य	23/09/2047	मंगल	07/05/2049	शनि	07/08/2050	केतु	10/02/2052	चंद्र	26/09/2053
मंगल	02/12/2047	गुरु	23/06/2049	केतु	15/10/2050	चंद्र	29/04/2052	बुध	25/12/2053
गुरु	16/02/2048	शनि	12/08/2049	चंद्र	27/12/2050	बुध	22/07/2052	शुक्र	30/03/2054
शनि	08/05/2048	केतु	05/10/2049	बुध	15/03/2051	शुक्र	19/10/2052	सूर्य	27/05/2054
केतु	04/08/2048	चंद्र	01/12/2049	शुक्र	06/06/2051	सूर्य	12/12/2052	मंगल	30/07/2054
चंद्र	06/11/2048	बुध	31/01/2050	सूर्य	26/07/2051	मंगल	09/02/2053	गुरु	06/10/2054
बुध	14/02/2049	शुक्र	05/04/2050	मंगल	20/09/2051	गुरु	15/04/2053	शनि	20/12/2054

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
20/12/2054		05/10/2056		31/08/2058		06/09/2060		30/11/2061	
05/10/2056		31/08/2058		06/09/2060		30/11/2061		06/04/2063	
चंद्र	20/03/2055	बुध	14/01/2057	शुक्र	24/12/2058	सूर्य	19/10/2060	मंगल	20/01/2062
बुध	24/06/2055	शुक्र	02/05/2057	सूर्य	04/03/2059	मंगल	04/12/2060	गुरु	16/03/2062
शुक्र	04/10/2055	सूर्य	07/07/2057	मंगल	19/05/2059	गुरु	24/01/2061	शनि	15/05/2062
सूर्य	05/12/2055	मंगल	17/09/2057	गुरु	09/08/2059	शनि	19/03/2061	केतु	17/07/2062
मंगल	10/02/2056	गुरु	04/12/2057	शनि	06/11/2059	केतु	16/05/2061	चंद्र	23/09/2062
गुरु	24/04/2056	शनि	26/02/2058	केतु	10/02/2060	चंद्र	18/07/2061	बुध	04/12/2062
शनि	12/07/2056	केतु	27/05/2058	चंद्र	21/05/2060	बुध	22/09/2061	शुक्र	18/02/2063
केतु	05/10/2056	चंद्र	31/08/2058	बुध	06/09/2060	शुक्र	30/11/2061	सूर्य	06/04/2063

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
06/04/2063		13/12/2064		05/10/2066		09/09/2068		29/09/2070	
13/12/2064		05/10/2066		09/09/2068		29/09/2070		30/11/2072	
शनि	19/06/2063	केतु	08/03/2065	चंद्र	10/01/2067	बुध	28/12/2068	शुक्र	30/01/2071
केतु	07/09/2063	चंद्र	07/06/2065	बुध	24/04/2067	शुक्र	23/04/2069	सूर्य	15/04/2071
चंद्र	01/12/2063	बुध	12/09/2065	शुक्र	11/08/2067	सूर्य	03/07/2069	मंगल	06/07/2071
बुध	29/02/2064	शुक्र	24/12/2065	सूर्य	17/10/2067	मंगल	19/09/2069	गुरु	03/10/2071
शुक्र	04/06/2064	सूर्य	25/02/2066	मंगल	29/12/2067	गुरु	12/12/2069	शनि	07/01/2072
सूर्य	02/08/2064	मंगल	04/05/2066	गुरु	17/03/2068	शनि	12/03/2070	केतु	18/04/2072
मंगल	05/10/2064	गुरु	17/07/2066	शनि	10/06/2068	केतु	17/06/2070	चंद्र	06/08/2072
गुरु	13/12/2064	शनि	05/10/2066	केतु	09/09/2068	चंद्र	29/09/2070	बुध	30/11/2072

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 7 मास 25 दिन

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
17/07/1963		12/03/1969		10/11/1973		10/11/1985		11/07/1996	
12/03/1969		10/11/1973		10/11/1985		11/07/1996		12/03/2009	
	00/00/0000	मंगल	19/06/1969	राहु	30/08/1975	गुरु	14/04/1987	शनि	14/07/1998
	17/07/1963	राहु	02/03/1970	गुरु	05/04/1977	शनि	21/12/1988	बुध	29/04/2000
राहु	21/06/1964	गुरु	15/10/1970	शनि	28/02/1979	बुध	26/06/1990	केतु	24/01/2001
गुरु	12/05/1965	शनि	12/07/1971	बुध	10/11/1980	केतु	08/02/1991	शुक्र	06/03/2003
शनि	01/06/1966	बुध	10/03/1972	केतु	24/07/1981	शुक्र	18/11/1992	सूर्य	24/10/2003
बुध	12/05/1967	केतु	17/06/1972	शुक्र	24/07/1983	सूर्य	01/06/1993	चंद्र	12/11/2004
केतु	01/10/1967	शुक्र	28/03/1973	सूर्य	28/02/1984	चंद्र	22/04/1994	मंगल	09/08/2005
शुक्र	10/11/1968	सूर्य	21/06/1973	चंद्र	28/02/1985	मंगल	05/12/1994	राहु	04/07/2007
सूर्य	12/03/1969	चंद्र	10/11/1973	मंगल	10/11/1985	राहु	11/07/1996	गुरु	12/03/2009

बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष	
12/03/2009		11/07/2020		12/03/2025		12/07/2038		12/07/2042	
11/07/2020		12/03/2025		12/07/2038		12/07/2042		00/00/0000	
बुध	19/10/2010	केतु	19/10/2020	शुक्र	01/06/2027	सूर्य	23/09/2038	चंद्र	31/01/2043
केतु	18/06/2011	शुक्र	30/07/2021	सूर्य	31/01/2028	चंद्र	23/01/2039	मंगल	22/06/2043
शुक्र	08/05/2013	सूर्य	23/10/2021	चंद्र	12/03/2029	मंगल	18/04/2039	राहु	17/07/2043
सूर्य	01/12/2013	चंद्र	14/03/2022	मंगल	21/12/2029	राहु	23/11/2039		00/00/0000
चंद्र	11/11/2014	मंगल	21/06/2022	राहु	21/12/2031	गुरु	05/06/2040		00/00/0000
मंगल	10/07/2015	राहु	04/03/2023	गुरु	01/10/2033	शनि	22/01/2041		00/00/0000
राहु	22/03/2017	गुरु	17/10/2023	शनि	11/11/2035	बुध	17/08/2041		00/00/0000
गुरु	25/09/2018	शनि	13/07/2024	बुध	01/10/2037	केतु	10/11/2041		00/00/0000
शनि	11/07/2020	बुध	12/03/2025	केतु	12/07/2038	शुक्र	12/07/2042		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
17/07/1963		21/06/1964		12/05/1965		01/06/1966		12/05/1967	
21/06/1964		12/05/1965		01/06/1966		12/05/1967		01/10/1967	
राहु	16/08/1963	गुरु	03/08/1964	शनि	12/07/1965	बुध	20/07/1966	केतु	20/05/1967
गुरु	03/10/1963	शनि	24/09/1964	बुध	04/09/1965	केतु	09/08/1966	शुक्र	13/06/1967
शनि	30/11/1963	बुध	09/11/1964	केतु	27/09/1965	शुक्र	06/10/1966	सूर्य	20/06/1967
बुध	21/01/1964	केतु	28/11/1964	शुक्र	30/11/1965	सूर्य	23/10/1966	चंद्र	02/07/1967
केतु	11/02/1964	शुक्र	21/01/1965	सूर्य	19/12/1965	चंद्र	21/11/1966	मंगल	10/07/1967
शुक्र	12/04/1964	सूर्य	06/02/1965	चंद्र	20/01/1966	मंगल	11/12/1966	राहु	01/08/1967
सूर्य	30/04/1964	चंद्र	05/03/1965	मंगल	12/02/1966	राहु	01/02/1967	गुरु	20/08/1967
चंद्र	31/05/1964	मंगल	24/03/1965	राहु	11/04/1966	गुरु	19/03/1967	शनि	11/09/1967
मंगल	21/06/1964	राहु	12/05/1965	गुरु	01/06/1966	शनि	12/05/1967	बुध	01/10/1967

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
01/10/1967		10/11/1968		12/03/1969		19/06/1969		02/03/1970	
10/11/1968		12/03/1969		19/06/1969		02/03/1970		15/10/1970	
शुक्र	08/12/1967	सूर्य	16/11/1968	मंगल	18/03/1969	राहु	28/07/1969	गुरु	01/04/1970
सूर्य	28/12/1967	चंद्र	26/11/1968	राहु	02/04/1969	गुरु	31/08/1969	शनि	07/05/1970
चंद्र	31/01/1968	मंगल	03/12/1968	गुरु	15/04/1969	शनि	10/10/1969	बुध	08/06/1970
मंगल	24/02/1968	राहु	22/12/1968	शनि	01/05/1969	बुध	15/11/1969	केतु	22/06/1970
राहु	25/04/1968	गुरु	07/01/1969	बुध	15/05/1969	केतु	30/11/1969	शुक्र	30/07/1970
गुरु	18/06/1968	शनि	26/01/1969	केतु	20/05/1969	शुक्र	12/01/1970	सूर्य	10/08/1970
शनि	21/08/1968	बुध	12/02/1969	शुक्र	06/06/1969	सूर्य	25/01/1970	चंद्र	29/08/1970
बुध	17/10/1968	केतु	19/02/1969	सूर्य	11/06/1969	चंद्र	15/02/1970	मंगल	11/09/1970
केतु	10/11/1968	शुक्र	12/03/1969	चंद्र	19/06/1969	मंगल	02/03/1970	राहु	15/10/1970

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
15/10/1970		12/07/1971		10/03/1972		17/06/1972		28/03/1973	
12/07/1971		10/03/1972		17/06/1972		28/03/1973		21/06/1973	
शनि	27/11/1970	बुध	15/08/1971	केतु	15/03/1972	शुक्र	03/08/1972	सूर्य	01/04/1973
बुध	04/01/1971	केतु	29/08/1971	शुक्र	01/04/1972	सूर्य	17/08/1972	चंद्र	08/04/1973
केतु	20/01/1971	शुक्र	09/10/1971	सूर्य	06/04/1972	चंद्र	10/09/1972	मंगल	13/04/1973
शुक्र	06/03/1971	सूर्य	21/10/1971	चंद्र	14/04/1972	मंगल	27/09/1972	राहु	26/04/1973
सूर्य	19/03/1971	चंद्र	10/11/1971	मंगल	20/04/1972	राहु	08/11/1972	गुरु	08/05/1973
चंद्र	11/04/1971	मंगल	24/11/1971	राहु	05/05/1972	गुरु	16/12/1972	शनि	21/05/1973
मंगल	27/04/1971	राहु	30/12/1971	गुरु	18/05/1972	शनि	30/01/1973	बुध	02/06/1973
राहु	06/06/1971	गुरु	31/01/1972	शनि	03/06/1972	बुध	11/03/1973	केतु	07/06/1973
गुरु	12/07/1971	शनि	10/03/1972	बुध	17/06/1972	केतु	28/03/1973	शुक्र	21/06/1973

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
21/06/1973		10/11/1973		30/08/1975		05/04/1977		28/02/1979	
10/11/1973		30/08/1975		05/04/1977		28/02/1979		10/11/1980	
चंद्र	03/07/1973	राहु	17/02/1974	गुरु	16/11/1975	शनि	24/07/1977	बुध	27/05/1979
मंगल	11/07/1973	गुरु	16/05/1974	शनि	16/02/1976	बुध	30/10/1977	केतु	02/07/1979
राहु	02/08/1973	शनि	28/08/1974	बुध	09/05/1976	केतु	10/12/1977	शुक्र	14/10/1979
गुरु	21/08/1973	बुध	29/11/1974	केतु	12/06/1976	शुक्र	04/04/1978	सूर्य	14/11/1979
शनि	12/09/1973	केतु	06/01/1975	शुक्र	17/09/1976	सूर्य	09/05/1978	चंद्र	05/01/1980
बुध	02/10/1973	शुक्र	26/04/1975	सूर्य	17/10/1976	चंद्र	06/07/1978	मंगल	10/02/1980
केतु	11/10/1973	सूर्य	29/05/1975	चंद्र	04/12/1976	मंगल	15/08/1978	राहु	13/05/1980
शुक्र	03/11/1973	चंद्र	22/07/1975	मंगल	07/01/1977	राहु	28/11/1978	गुरु	04/08/1980
सूर्य	10/11/1973	मंगल	30/08/1975	राहु	05/04/1977	गुरु	28/02/1979	शनि	10/11/1980

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
10/11/1980		24/07/1981		24/07/1983		28/02/1984		28/02/1985	
24/07/1981		24/07/1983		28/02/1984		28/02/1985		10/11/1985	
केतु	25/11/1980	शुक्र	22/11/1981	सूर्य	04/08/1983	चंद्र	30/03/1984	मंगल	15/03/1985
शुक्र	07/01/1981	सूर्य	29/12/1981	चंद्र	22/08/1983	मंगल	20/04/1984	राहु	22/04/1985
सूर्य	19/01/1981	चंद्र	28/02/1982	मंगल	04/09/1983	राहु	14/06/1984	गुरु	26/05/1985
चंद्र	10/02/1981	मंगल	11/04/1982	राहु	07/10/1983	गुरु	02/08/1984	शनि	05/07/1985
मंगल	25/02/1981	राहु	30/07/1982	गुरु	05/11/1983	शनि	28/09/1984	बुध	11/08/1985
राहु	04/04/1981	गुरु	04/11/1982	शनि	10/12/1983	बुध	19/11/1984	केतु	26/08/1985
गुरु	08/05/1981	शनि	28/02/1983	बुध	10/01/1984	केतु	10/12/1984	शुक्र	07/10/1985
शनि	17/06/1981	बुध	12/06/1983	केतु	23/01/1984	शुक्र	09/02/1985	सूर्य	20/10/1985
बुध	24/07/1981	केतु	24/07/1983	शुक्र	28/02/1984	सूर्य	28/02/1985	चंद्र	10/11/1985

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
10/11/1985		14/04/1987		21/12/1988		26/06/1990		08/02/1991	
14/04/1987		21/12/1988		26/06/1990		08/02/1991		18/11/1992	
गुरु	19/01/1986	शनि	20/07/1987	बुध	09/03/1989	केतु	09/07/1990	शुक्र	27/05/1991
शनि	11/04/1986	बुध	16/10/1987	केतु	10/04/1989	शुक्र	16/08/1990	सूर्य	29/06/1991
बुध	23/06/1986	केतु	21/11/1987	शुक्र	11/07/1989	सूर्य	27/08/1990	चंद्र	22/08/1991
केतु	24/07/1986	शुक्र	03/03/1988	सूर्य	08/08/1989	चंद्र	15/09/1990	मंगल	29/09/1991
शुक्र	18/10/1986	सूर्य	02/04/1988	चंद्र	23/09/1989	मंगल	28/09/1990	राहु	04/01/1992
सूर्य	13/11/1986	चंद्र	24/05/1988	मंगल	25/10/1989	राहु	01/11/1990	गुरु	30/03/1992
चंद्र	27/12/1986	मंगल	29/06/1988	राहु	16/01/1990	गुरु	02/12/1990	शनि	11/07/1992
मंगल	26/01/1987	राहु	29/09/1988	गुरु	30/03/1990	शनि	07/01/1991	बुध	11/10/1992
राहु	14/04/1987	गुरु	21/12/1988	शनि	26/06/1990	बुध	08/02/1991	केतु	18/11/1992

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
18/11/1992		01/06/1993		22/04/1994		05/12/1994		11/07/1996	
01/06/1993		22/04/1994		05/12/1994		11/07/1996		14/07/1998	
सूर्य	28/11/1992	चंद्र	28/06/1993	मंगल	05/05/1994	राहु	03/03/1995	शनि	04/11/1996
चंद्र	14/12/1992	मंगल	17/07/1993	राहु	08/06/1994	गुरु	19/05/1995	बुध	16/02/1997
मंगल	25/12/1992	राहु	04/09/1993	गुरु	08/07/1994	शनि	20/08/1995	केतु	31/03/1997
राहु	24/01/1993	गुरु	17/10/1993	शनि	13/08/1994	बुध	11/11/1995	शुक्र	31/07/1997
गुरु	19/02/1993	शनि	07/12/1993	बुध	14/09/1994	केतु	15/12/1995	सूर्य	05/09/1997
शनि	22/03/1993	बुध	22/01/1994	केतु	28/09/1994	शुक्र	21/03/1996	चंद्र	06/11/1997
बुध	18/04/1993	केतु	10/02/1994	शुक्र	05/11/1994	सूर्य	19/04/1996	मंगल	18/12/1997
केतु	29/04/1993	शुक्र	05/04/1994	सूर्य	16/11/1994	चंद्र	07/06/1996	राहु	07/04/1998
शुक्र	01/06/1993	सूर्य	22/04/1994	चंद्र	05/12/1994	मंगल	11/07/1996	गुरु	14/07/1998

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
14/07/1998		29/04/2000		24/01/2001		06/03/2003		24/10/2003	
29/04/2000		24/01/2001		06/03/2003		24/10/2003		12/11/2004	
बुध	15/10/1998	केतु	15/05/2000	शुक्र	02/06/2001	सूर्य	18/03/2003	चंद्र	25/11/2003
केतु	22/11/1998	शुक्र	29/06/2000	सूर्य	10/07/2001	चंद्र	06/04/2003	मंगल	17/12/2003
शुक्र	11/03/1999	सूर्य	12/07/2000	चंद्र	12/09/2001	मंगल	20/04/2003	राहु	13/02/2004
सूर्य	13/04/1999	चंद्र	04/08/2000	मंगल	27/10/2001	राहु	24/05/2003	गुरु	04/04/2004
चंद्र	07/06/1999	मंगल	20/08/2000	राहु	20/02/2002	गुरु	24/06/2003	शनि	04/06/2004
मंगल	15/07/1999	राहु	29/09/2000	गुरु	03/06/2002	शनि	31/07/2003	बुध	29/07/2004
राहु	21/10/1999	गुरु	04/11/2000	शनि	03/10/2002	बुध	01/09/2003	केतु	21/08/2004
गुरु	16/01/2000	शनि	17/12/2000	बुध	20/01/2003	केतु	15/09/2003	शुक्र	24/10/2004
शनि	29/04/2000	बुध	24/01/2001	केतु	06/03/2003	शुक्र	24/10/2003	सूर्य	12/11/2004

शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
12/11/2004		09/08/2005		04/07/2007		12/03/2009		19/10/2010	
09/08/2005		04/07/2007		12/03/2009		19/10/2010		18/06/2011	
मंगल	28/11/2004	राहु	21/11/2005	गुरु	24/09/2007	बुध	03/06/2009	केतु	02/11/2010
राहु	07/01/2005	गुरु	22/02/2006	शनि	31/12/2007	केतु	07/07/2009	शुक्र	13/12/2010
गुरु	12/02/2005	शनि	11/06/2006	बुध	27/03/2008	शुक्र	13/10/2009	सूर्य	25/12/2010
शनि	27/03/2005	बुध	18/09/2006	केतु	02/05/2008	सूर्य	11/11/2009	चंद्र	14/01/2011
बुध	04/05/2005	केतु	28/10/2006	शुक्र	13/08/2008	चंद्र	30/12/2009	मंगल	28/01/2011
केतु	20/05/2005	शुक्र	21/02/2007	सूर्य	13/09/2008	मंगल	02/02/2010	राहु	05/03/2011
शुक्र	04/07/2005	सूर्य	28/03/2007	चंद्र	03/11/2008	राहु	01/05/2010	गुरु	06/04/2011
सूर्य	17/07/2005	चंद्र	24/05/2007	मंगल	09/12/2008	गुरु	18/07/2010	शनि	14/05/2011
चंद्र	09/08/2005	मंगल	04/07/2007	राहु	12/03/2009	शनि	19/10/2010	बुध	18/06/2011

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु	
18/06/2011		08/05/2013		01/12/2013		11/11/2014		10/07/2015	
08/05/2013		01/12/2013		11/11/2014		10/07/2015		22/03/2017	
शुक्र	11/10/2011	सूर्य	18/05/2013	चंद्र	29/12/2013	मंगल	25/11/2014	राहु	11/10/2015
सूर्य	14/11/2011	चंद्र	04/06/2013	मंगल	18/01/2014	राहु	31/12/2014	गुरु	02/01/2016
चंद्र	11/01/2012	मंगल	16/06/2013	राहु	11/03/2014	गुरु	01/02/2015	शनि	09/04/2016
मंगल	20/02/2012	राहु	17/07/2013	गुरु	26/04/2014	शनि	11/03/2015	बुध	06/07/2016
राहु	02/06/2012	गुरु	14/08/2013	शनि	20/06/2014	बुध	14/04/2015	केतु	11/08/2016
गुरु	02/09/2012	शनि	16/09/2013	बुध	08/08/2014	केतु	29/04/2015	शुक्र	23/11/2016
शनि	21/12/2012	बुध	15/10/2013	केतु	28/08/2014	शुक्र	08/06/2015	सूर्य	24/12/2016
बुध	28/03/2013	केतु	27/10/2013	शुक्र	24/10/2014	सूर्य	20/06/2015	चंद्र	14/02/2017
केतु	08/05/2013	शुक्र	01/12/2013	सूर्य	11/11/2014	चंद्र	10/07/2015	मंगल	22/03/2017

बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
22/03/2017		25/09/2018		11/07/2020		19/10/2020		30/07/2021	
25/09/2018		11/07/2020		19/10/2020		30/07/2021		23/10/2021	
गुरु	04/06/2017	शनि	07/01/2019	केतु	17/07/2020	शुक्र	05/12/2020	सूर्य	03/08/2021
शनि	30/08/2017	बुध	09/04/2019	शुक्र	03/08/2020	सूर्य	19/12/2020	चंद्र	10/08/2021
बुध	16/11/2017	केतु	18/05/2019	सूर्य	08/08/2020	चंद्र	12/01/2021	मंगल	15/08/2021
केतु	18/12/2017	शुक्र	04/09/2019	चंद्र	16/08/2020	मंगल	29/01/2021	राहु	28/08/2021
शुक्र	20/03/2018	सूर्य	07/10/2019	मंगल	22/08/2020	राहु	12/03/2021	गुरु	08/09/2021
सूर्य	17/04/2018	चंद्र	30/11/2019	राहु	06/09/2020	गुरु	19/04/2021	शनि	22/09/2021
चंद्र	02/06/2018	मंगल	08/01/2020	गुरु	19/09/2020	शनि	03/06/2021	बुध	04/10/2021
मंगल	04/07/2018	राहु	15/04/2020	शनि	05/10/2020	बुध	13/07/2021	केतु	09/10/2021
राहु	25/09/2018	गुरु	11/07/2020	बुध	19/10/2020	केतु	30/07/2021	शुक्र	23/10/2021

केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि	
23/10/2021		14/03/2022		21/06/2022		04/03/2023		17/10/2023	
14/03/2022		21/06/2022		04/03/2023		17/10/2023		13/07/2024	
चंद्र	04/11/2021	मंगल	20/03/2022	राहु	30/07/2022	गुरु	03/04/2023	शनि	29/11/2023
मंगल	12/11/2021	राहु	04/04/2022	गुरु	02/09/2022	शनि	09/05/2023	बुध	06/01/2024
राहु	03/12/2021	गुरु	17/04/2022	शनि	12/10/2022	बुध	11/06/2023	केतु	22/01/2024
गुरु	22/12/2021	शनि	03/05/2022	बुध	18/11/2022	केतु	24/06/2023	शुक्र	07/03/2024
शनि	14/01/2022	बुध	17/05/2022	केतु	03/12/2022	शुक्र	01/08/2023	सूर्य	21/03/2024
बुध	03/02/2022	केतु	23/05/2022	शुक्र	14/01/2023	सूर्य	12/08/2023	चंद्र	12/04/2024
केतु	11/02/2022	शुक्र	08/06/2022	सूर्य	27/01/2023	चंद्र	31/08/2023	मंगल	28/04/2024
शुक्र	07/03/2022	सूर्य	13/06/2022	चंद्र	17/02/2023	मंगल	13/09/2023	राहु	07/06/2024
सूर्य	14/03/2022	चंद्र	21/06/2022	मंगल	04/03/2023	राहु	17/10/2023	गुरु	13/07/2024

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
13/07/2024		12/03/2025		01/06/2027		31/01/2028		12/03/2029	
12/03/2025		01/06/2027		31/01/2028		12/03/2029		21/12/2029	
बुध	17/08/2024	शुक्र	25/07/2025	सूर्य	14/06/2027	चंद्र	05/03/2028	मंगल	28/03/2029
केतु	31/08/2024	सूर्य	04/09/2025	चंद्र	04/07/2027	मंगल	28/03/2028	राहु	10/05/2029
शुक्र	10/10/2024	चंद्र	10/11/2025	मंगल	18/07/2027	राहु	28/05/2028	गुरु	17/06/2029
सूर्य	22/10/2024	मंगल	28/12/2025	राहु	24/08/2027	गुरु	21/07/2028	शनि	01/08/2029
चंद्र	11/11/2024	राहु	28/04/2026	गुरु	25/09/2027	शनि	24/09/2028	बुध	10/09/2029
मंगल	25/11/2024	गुरु	15/08/2026	शनि	03/11/2027	बुध	20/11/2028	केतु	27/09/2029
राहु	31/12/2024	शनि	21/12/2026	बुध	07/12/2027	केतु	14/12/2028	शुक्र	13/11/2029
गुरु	02/02/2025	बुध	15/04/2027	केतु	21/12/2027	शुक्र	19/02/2029	सूर्य	27/11/2029
शनि	12/03/2025	केतु	01/06/2027	शुक्र	31/01/2028	सूर्य	12/03/2029	चंद्र	21/12/2029

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
21/12/2029		21/12/2031		01/10/2033		11/11/2035		01/10/2037	
21/12/2031		01/10/2033		11/11/2035		01/10/2037		12/07/2038	
राहु	09/04/2030	गुरु	17/03/2032	शनि	31/01/2034	बुध	17/02/2036	केतु	17/10/2037
गुरु	16/07/2030	शनि	28/06/2032	बुध	20/05/2034	केतु	28/03/2036	शुक्र	04/12/2037
शनि	09/11/2030	बुध	28/09/2032	केतु	04/07/2034	शुक्र	21/07/2036	सूर्य	18/12/2037
बुध	20/02/2031	केतु	05/11/2032	शुक्र	10/11/2034	सूर्य	24/08/2036	चंद्र	11/01/2038
केतु	04/04/2031	शुक्र	21/02/2033	सूर्य	18/12/2034	चंद्र	21/10/2036	मंगल	27/01/2038
शुक्र	03/08/2031	सूर्य	25/03/2033	चंद्र	20/02/2035	मंगल	30/11/2036	राहु	11/03/2038
सूर्य	09/09/2031	चंद्र	18/05/2033	मंगल	06/04/2035	राहु	13/03/2037	गुरु	18/04/2038
चंद्र	09/11/2031	मंगल	25/06/2033	राहु	31/07/2035	गुरु	13/06/2037	शनि	02/06/2038
मंगल	21/12/2031	राहु	01/10/2033	गुरु	11/11/2035	शनि	01/10/2037	बुध	12/07/2038

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
12/07/2038		23/09/2038		23/01/2039		18/04/2039		23/11/2039	
23/09/2038		23/01/2039		18/04/2039		23/11/2039		05/06/2040	
सूर्य	15/07/2038	चंद्र	03/10/2038	मंगल	28/01/2039	राहु	21/05/2039	गुरु	19/12/2039
चंद्र	22/07/2038	मंगल	10/10/2038	राहु	09/02/2039	गुरु	19/06/2039	शनि	19/01/2040
मंगल	26/07/2038	राहु	28/10/2038	गुरु	21/02/2039	शनि	24/07/2039	बुध	15/02/2040
राहु	06/08/2038	गुरु	14/11/2038	शनि	06/03/2039	बुध	24/08/2039	केतु	27/02/2040
गुरु	15/08/2038	शनि	03/12/2038	बुध	18/03/2039	केतु	05/09/2039	शुक्र	30/03/2040
शनि	27/08/2038	बुध	20/12/2038	केतु	23/03/2039	शुक्र	12/10/2039	सूर्य	09/04/2040
बुध	06/09/2038	केतु	27/12/2038	शुक्र	06/04/2039	सूर्य	23/10/2039	चंद्र	25/04/2040
केतु	11/09/2038	शुक्र	17/01/2039	सूर्य	11/04/2039	चंद्र	10/11/2039	मंगल	07/05/2040
शुक्र	23/09/2038	सूर्य	23/01/2039	चंद्र	18/04/2039	मंगल	23/11/2039	राहु	05/06/2040

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 8 मास 10 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष	
17/07/1963		28/03/1967		28/03/1982		28/03/1990		28/03/2007	
28/03/1967		28/03/1982		28/03/1990		28/03/2007		27/03/2017	
	00/00/0000	चंद्र	27/04/1969	मंगल	30/10/1982	बुध	29/11/1992	शनि	29/02/2008
	00/00/0000	मंगल	07/06/1970	बुध	02/02/1984	शनि	27/06/1994	गुरु	03/12/2009
	17/07/1963	बुध	16/10/1972	शनि	30/10/1984	गुरु	23/06/1997	राहु	12/01/2011
बुध	17/10/1963	शनि	07/03/1974	गुरु	28/03/1986	राहु	14/05/1999	शुक्र	23/12/2012
शनि	07/05/1964	गुरु	26/10/1976	राहु	15/02/1987	शुक्र	03/09/2002	सूर्य	14/07/2013
गुरु	27/05/1965	राहु	27/06/1978	शुक्र	05/09/1988	सूर्य	14/08/2003	चंद्र	03/12/2014
राहु	26/01/1966	शुक्र	27/05/1981	सूर्य	15/02/1989	चंद्र	23/12/2005	मंगल	30/08/2015
शुक्र	28/03/1967	सूर्य	28/03/1982	चंद्र	28/03/1990	मंगल	28/03/2007	बुध	27/03/2017

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
27/03/2017		27/03/2036		27/03/2048		27/03/2069	
27/03/2036		27/03/2048		27/03/2069		00/00/0000	
गुरु	30/07/2020	राहु	27/07/2037	शुक्र	27/04/2052	सूर्य	27/07/2069
राहु	09/09/2022	शुक्र	26/11/2039	सूर्य	27/06/2053	चंद्र	28/05/2070
शुक्र	21/05/2026	सूर्य	27/07/2040	चंद्र	27/05/2056	मंगल	06/11/2070
सूर्य	10/06/2027	चंद्र	28/03/2042	मंगल	16/12/2057	बुध	17/07/2071
चंद्र	29/01/2030	मंगल	15/02/2043	बुध	07/04/2061		00/00/0000
मंगल	27/06/2031	बुध	05/01/2045	शनि	18/03/2063		00/00/0000
बुध	24/06/2034	शनि	15/02/2046	गुरु	26/11/2066		00/00/0000
शनि	27/03/2036	गुरु	27/03/2048	राहु	27/03/2069		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र	
17/07/1963		17/10/1963		07/05/1964		27/05/1965		26/01/1966	
17/10/1963		07/05/1964		27/05/1965		26/01/1966		28/03/1967	
	00/00/0000	शनि	05/11/1963	गुरु	14/07/1964	राहु	23/06/1965	शुक्र	19/04/1966
	00/00/0000	गुरु	10/12/1963	राहु	25/08/1964	शुक्र	10/08/1965	सूर्य	12/05/1966
	00/00/0000	राहु	02/01/1964	शुक्र	08/11/1964	सूर्य	23/08/1965	चंद्र	10/07/1966
	00/00/0000	शुक्र	10/02/1964	सूर्य	30/11/1964	चंद्र	26/09/1965	मंगल	11/08/1966
	17/07/1963	सूर्य	22/02/1964	चंद्र	22/01/1965	मंगल	14/10/1965	बुध	17/10/1966
सूर्य	04/08/1963	चंद्र	21/03/1964	मंगल	20/02/1965	बुध	21/11/1965	शनि	26/11/1966
चंद्र	21/09/1963	मंगल	05/04/1964	बुध	22/04/1965	शनि	14/12/1965	गुरु	09/02/1967
मंगल	17/10/1963	बुध	07/05/1964	शनि	27/05/1965	गुरु	26/01/1966	राहु	28/03/1967

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु	
28/03/1967		27/04/1969		07/06/1970		16/10/1972		07/03/1974	
27/04/1969		07/06/1970		16/10/1972		07/03/1974		26/10/1976	
चंद्र	12/07/1967	मंगल	27/05/1969	बुध	20/10/1970	शनि	02/12/1972	गुरु	24/08/1974
मंगल	06/09/1967	बुध	30/07/1969	शनि	08/01/1971	गुरु	01/03/1973	राहु	09/12/1974
बुध	04/01/1968	शनि	05/09/1969	गुरु	09/06/1971	राहु	27/04/1973	शुक्र	14/06/1975
शनि	14/03/1968	गुरु	16/11/1969	राहु	13/09/1971	शुक्र	03/08/1973	सूर्य	07/08/1975
गुरु	26/07/1968	राहु	31/12/1969	शुक्र	27/02/1972	सूर्य	31/08/1973	चंद्र	19/12/1975
राहु	19/10/1968	शुक्र	20/03/1970	सूर्य	15/04/1972	चंद्र	10/11/1973	मंगल	28/02/1976
शुक्र	16/03/1969	सूर्य	11/04/1970	चंद्र	13/08/1972	मंगल	17/12/1973	बुध	29/07/1976
सूर्य	27/04/1969	चंद्र	07/06/1970	मंगल	16/10/1972	बुध	07/03/1974	शनि	26/10/1976

चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध	
26/10/1976		27/06/1978		27/05/1981		28/03/1982		30/10/1982	
27/06/1978		27/05/1981		28/03/1982		30/10/1982		02/02/1984	
राहु	02/01/1977	शुक्र	20/01/1979	सूर्य	13/06/1981	मंगल	13/04/1982	बुध	10/01/1983
शुक्र	30/04/1977	सूर्य	20/03/1979	चंद्र	25/07/1981	बुध	17/05/1982	शनि	22/02/1983
सूर्य	03/06/1977	चंद्र	15/08/1979	मंगल	17/08/1981	शनि	06/06/1982	गुरु	14/05/1983
चंद्र	27/08/1977	मंगल	02/11/1979	बुध	04/10/1981	गुरु	14/07/1982	राहु	04/07/1983
मंगल	11/10/1977	बुध	18/04/1980	शनि	01/11/1981	राहु	07/08/1982	शुक्र	02/10/1983
बुध	14/01/1978	शनि	25/07/1980	गुरु	25/12/1981	शुक्र	18/09/1982	सूर्य	27/10/1983
शनि	12/03/1978	गुरु	29/01/1981	राहु	27/01/1982	सूर्य	30/09/1982	चंद्र	30/12/1983
गुरु	27/06/1978	राहु	27/05/1981	शुक्र	28/03/1982	चंद्र	30/10/1982	मंगल	02/02/1984

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
02/02/1984		30/10/1984		28/03/1986		15/02/1987		05/09/1988	
30/10/1984		28/03/1986		15/02/1987		05/09/1988		15/02/1989	
शनि	27/02/1984	गुरु	28/01/1985	राहु	03/05/1986	शुक्र	06/06/1987	सूर्य	14/09/1988
गुरु	15/04/1984	राहु	26/03/1985	शुक्र	05/07/1986	सूर्य	07/07/1987	चंद्र	07/10/1988
राहु	15/05/1984	शुक्र	04/07/1985	सूर्य	23/07/1986	चंद्र	24/09/1987	मंगल	19/10/1988
शुक्र	06/07/1984	सूर्य	02/08/1985	चंद्र	06/09/1986	मंगल	05/11/1987	बुध	14/11/1988
सूर्य	21/07/1984	चंद्र	12/10/1985	मंगल	30/09/1986	बुध	03/02/1988	शनि	29/11/1988
चंद्र	28/08/1984	मंगल	19/11/1985	बुध	20/11/1986	शनि	26/03/1988	गुरु	27/12/1988
मंगल	17/09/1984	बुध	08/02/1986	शनि	20/12/1986	गुरु	04/07/1988	राहु	14/01/1989
बुध	30/10/1984	शनि	28/03/1986	गुरु	15/02/1987	राहु	05/09/1988	शुक्र	15/02/1989

मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु	
15/02/1989		28/03/1990		29/11/1992		27/06/1994		23/06/1997	
28/03/1990		29/11/1992		27/06/1994		23/06/1997		14/05/1999	
चंद्र	12/04/1989	बुध	28/08/1990	शनि	21/01/1993	गुरु	05/01/1995	राहु	08/09/1997
मंगल	12/05/1989	शनि	27/11/1990	गुरु	02/05/1993	राहु	06/05/1995	शुक्र	20/01/1998
बुध	15/07/1989	गुरु	18/05/1991	राहु	05/07/1993	शुक्र	05/12/1995	सूर्य	27/02/1998
शनि	22/08/1989	राहु	04/09/1991	शुक्र	25/10/1993	सूर्य	04/02/1996	चंद्र	03/06/1998
गुरु	01/11/1989	शुक्र	12/03/1992	सूर्य	26/11/1993	चंद्र	04/07/1996	मंगल	24/07/1998
राहु	16/12/1989	सूर्य	05/05/1992	चंद्र	14/02/1994	मंगल	23/09/1996	बुध	10/11/1998
शुक्र	05/03/1990	चंद्र	18/09/1992	मंगल	28/03/1994	बुध	14/03/1997	शनि	13/01/1999
सूर्य	28/03/1990	मंगल	29/11/1992	बुध	27/06/1994	शनि	23/06/1997	गुरु	14/05/1999

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि	
14/05/1999		03/09/2002		14/08/2003		23/12/2005		28/03/2007	
03/09/2002		14/08/2003		23/12/2005		28/03/2007		29/02/2008	
शुक्र	04/01/2000	सूर्य	22/09/2002	चंद्र	11/12/2003	मंगल	26/01/2006	शनि	28/04/2007
सूर्य	11/03/2000	चंद्र	09/11/2002	मंगल	13/02/2004	बुध	08/04/2006	गुरु	27/06/2007
चंद्र	26/08/2000	मंगल	04/12/2002	बुध	28/06/2004	शनि	21/05/2006	राहु	03/08/2007
मंगल	23/11/2000	बुध	28/01/2003	शनि	16/09/2004	गुरु	10/08/2006	शुक्र	08/10/2007
बुध	01/06/2001	शनि	28/02/2003	गुरु	15/02/2005	राहु	30/09/2006	सूर्य	27/10/2007
शनि	21/09/2001	गुरु	30/04/2003	राहु	21/05/2005	शुक्र	28/12/2006	चंद्र	13/12/2007
गुरु	21/04/2002	राहु	07/06/2003	शुक्र	05/11/2005	सूर्य	23/01/2007	मंगल	07/01/2008
राहु	03/09/2002	शुक्र	14/08/2003	सूर्य	23/12/2005	चंद्र	28/03/2007	बुध	29/02/2008

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
29/02/2008		03/12/2009		12/01/2011		23/12/2012		14/07/2013	
03/12/2009		12/01/2011		23/12/2012		14/07/2013		03/12/2014	
गुरु	21/06/2008	राहु	17/01/2010	शुक्र	31/05/2011	सूर्य	03/01/2013	चंद्र	22/09/2013
राहु	01/09/2008	शुक्र	06/04/2010	सूर्य	09/07/2011	चंद्र	31/01/2013	मंगल	30/10/2013
शुक्र	03/01/2009	सूर्य	28/04/2010	चंद्र	16/10/2011	मंगल	15/02/2013	बुध	17/01/2014
सूर्य	08/02/2009	चंद्र	24/06/2010	मंगल	07/12/2011	बुध	19/03/2013	शनि	05/03/2014
चंद्र	08/05/2009	मंगल	24/07/2010	बुध	28/03/2012	शनि	07/04/2013	गुरु	03/06/2014
मंगल	25/06/2009	बुध	25/09/2010	शनि	02/06/2012	गुरु	13/05/2013	राहु	29/07/2014
बुध	04/10/2009	शनि	02/11/2010	गुरु	05/10/2012	राहु	04/06/2013	शुक्र	05/11/2014
शनि	03/12/2009	गुरु	12/01/2011	राहु	23/12/2012	शुक्र	14/07/2013	सूर्य	03/12/2014

शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र	
03/12/2014		30/08/2015		27/03/2017		30/07/2020		09/09/2022	
30/08/2015		27/03/2017		30/07/2020		09/09/2022		21/05/2026	
मंगल	23/12/2014	बुध	29/11/2015	गुरु	28/10/2017	राहु	24/10/2020	शुक्र	30/05/2023
बुध	04/02/2015	शनि	21/01/2016	राहु	13/03/2018	शुक्र	23/03/2021	सूर्य	13/08/2023
शनि	01/03/2015	गुरु	01/05/2016	शुक्र	05/11/2018	सूर्य	05/05/2021	चंद्र	16/02/2024
गुरु	17/04/2015	राहु	04/07/2016	सूर्य	12/01/2019	चंद्र	20/08/2021	मंगल	26/05/2024
राहु	17/05/2015	शुक्र	24/10/2016	चंद्र	01/07/2019	मंगल	16/10/2021	बुध	24/12/2024
शुक्र	09/07/2015	सूर्य	25/11/2016	मंगल	29/09/2019	बुध	14/02/2022	शनि	28/04/2025
सूर्य	24/07/2015	चंद्र	13/02/2017	बुध	08/04/2020	शनि	27/04/2022	गुरु	22/12/2025
चंद्र	30/08/2015	मंगल	27/03/2017	शनि	30/07/2020	गुरु	09/09/2022	राहु	21/05/2026

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि	
21/05/2026		10/06/2027		29/01/2030		27/06/2031		24/06/2034	
10/06/2027		29/01/2030		27/06/2031		24/06/2034		27/03/2036	
सूर्य	11/06/2026	चंद्र	22/10/2027	मंगल	08/03/2030	बुध	16/12/2031	शनि	22/08/2034
चंद्र	04/08/2026	मंगल	02/01/2028	बुध	28/05/2030	शनि	26/03/2032	गुरु	13/12/2034
मंगल	01/09/2026	बुध	01/06/2028	शनि	15/07/2030	गुरु	04/10/2032	राहु	22/02/2035
बुध	01/11/2026	शनि	30/08/2028	गुरु	13/10/2030	राहु	03/02/2033	शुक्र	27/06/2035
शनि	07/12/2026	गुरु	15/02/2029	राहु	09/12/2030	शुक्र	03/09/2033	सूर्य	02/08/2035
गुरु	12/02/2027	राहु	02/06/2029	शुक्र	19/03/2031	सूर्य	03/11/2033	चंद्र	30/10/2035
राहु	27/03/2027	शुक्र	07/12/2029	सूर्य	17/04/2031	चंद्र	04/04/2034	मंगल	17/12/2035
शुक्र	10/06/2027	सूर्य	29/01/2030	चंद्र	27/06/2031	मंगल	24/06/2034	बुध	27/03/2036

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
27/03/2036		27/07/2037		26/11/2039		27/07/2040		28/03/2042	
27/07/2037		26/11/2039		27/07/2040		28/03/2042		15/02/2043	
राहु	20/05/2036	शुक्र	09/01/2038	सूर्य	10/12/2039	चंद्र	19/10/2040	मंगल	21/04/2042
शुक्र	23/08/2036	सूर्य	25/02/2038	चंद्र	13/01/2040	मंगल	04/12/2040	बुध	11/06/2042
सूर्य	19/09/2036	चंद्र	24/06/2038	मंगल	31/01/2040	बुध	09/03/2041	शनि	11/07/2042
चंद्र	26/11/2036	मंगल	26/08/2038	बुध	09/03/2040	शनि	05/05/2041	गुरु	06/09/2042
मंगल	01/01/2037	बुध	07/01/2039	शनि	01/04/2040	गुरु	20/08/2041	राहु	12/10/2042
बुध	18/03/2037	शनि	27/03/2039	गुरु	13/05/2040	राहु	26/10/2041	शुक्र	14/12/2042
शनि	02/05/2037	गुरु	24/08/2039	राहु	10/06/2040	शुक्र	22/02/2042	सूर्य	01/01/2043
गुरु	27/07/2037	राहु	26/11/2039	शुक्र	27/07/2040	सूर्य	28/03/2042	चंद्र	15/02/2043

राहु - बुध		राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
15/02/2043		05/01/2045		15/02/2046		27/03/2048		27/04/2052	
05/01/2045		15/02/2046		27/03/2048		27/04/2052		27/06/2053	
बुध	04/06/2043	शनि	12/02/2045	गुरु	01/07/2046	शुक्र	11/01/2049	सूर्य	20/05/2052
शनि	07/08/2043	गुरु	24/04/2045	राहु	24/09/2046	सूर्य	04/04/2049	चंद्र	18/07/2052
गुरु	06/12/2043	राहु	08/06/2045	शुक्र	21/02/2047	चंद्र	28/10/2049	मंगल	19/08/2052
राहु	21/02/2044	शुक्र	26/08/2045	सूर्य	05/04/2047	मंगल	16/02/2050	बुध	25/10/2052
शुक्र	04/07/2044	सूर्य	18/09/2045	चंद्र	21/07/2047	बुध	08/10/2050	शनि	04/12/2052
सूर्य	11/08/2044	चंद्र	13/11/2045	मंगल	16/09/2047	शनि	23/02/2051	गुरु	16/02/2053
चंद्र	15/11/2044	मंगल	13/12/2045	बुध	16/01/2048	गुरु	13/11/2051	राहु	05/04/2053
मंगल	05/01/2045	बुध	15/02/2046	शनि	27/03/2048	राहु	27/04/2052	शुक्र	27/06/2053

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु	
27/06/2053		27/05/2056		16/12/2057		07/04/2061		18/03/2063	
27/05/2056		16/12/2057		07/04/2061		18/03/2063		26/11/2066	
चंद्र	22/11/2053	मंगल	08/07/2056	बुध	24/06/2058	शनि	11/06/2061	गुरु	10/11/2063
मंगल	09/02/2054	बुध	06/10/2056	शनि	14/10/2058	गुरु	14/10/2061	राहु	08/04/2064
बुध	26/07/2054	शनि	27/11/2056	गुरु	14/05/2059	राहु	01/01/2062	शुक्र	26/12/2064
शनि	02/11/2054	गुरु	07/03/2057	राहु	26/09/2059	शुक्र	19/05/2062	सूर्य	11/03/2065
गुरु	08/05/2055	राहु	09/05/2057	शुक्र	17/05/2060	सूर्य	28/06/2062	चंद्र	15/09/2065
राहु	04/09/2055	शुक्र	28/08/2057	सूर्य	23/07/2060	चंद्र	04/10/2062	मंगल	24/12/2065
शुक्र	29/03/2056	सूर्य	28/09/2057	चंद्र	07/01/2061	मंगल	26/11/2062	बुध	24/07/2066
सूर्य	27/05/2056	चंद्र	16/12/2057	मंगल	07/04/2061	बुध	18/03/2063	शनि	26/11/2066

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 5 वर्ष 11 मास 7 दिन

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
17/07/1963		23/06/1969		23/06/1977		23/06/1978		23/06/1980	
23/06/1969		23/06/1977		23/06/1978		23/06/1980		24/06/1983	
सिद्ध	02/11/1963	संक	03/04/1971	मंग	03/07/1977	पिंग	03/08/1978	धांय	22/09/1980
संक	24/05/1965	मंग	24/06/1971	पिंग	23/07/1977	धांय	03/10/1978	भ्राम	22/01/1981
मंग	03/08/1965	पिंग	03/12/1971	धांय	23/08/1977	भ्राम	23/12/1978	भद्रि	23/06/1981
पिंग	23/12/1965	धांय	02/08/1972	भ्राम	02/10/1977	भद्रि	03/04/1979	उल्क	23/12/1981
धांय	24/07/1966	भ्राम	23/06/1973	भद्रि	22/11/1977	उल्क	03/08/1979	सिद्ध	24/07/1982
भ्राम	04/05/1967	भद्रि	03/08/1974	उल्क	22/01/1978	सिद्ध	23/12/1979	संक	24/03/1983
भद्रि	23/04/1968	उल्क	03/12/1975	सिद्ध	03/04/1978	संक	02/06/1980	मंग	24/04/1983
उल्क	23/06/1969	सिद्ध	23/06/1977	संक	23/06/1978	मंग	23/06/1980	पिंग	24/06/1983

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
24/06/1983		24/06/1987		23/06/1992		23/06/1998		23/06/2005	
24/06/1987		23/06/1992		23/06/1998		23/06/2005		23/06/2013	
भ्राम	03/12/1983	भद्रि	03/03/1988	उल्क	23/06/1993	सिद्ध	02/11/1999	संक	03/04/2007
भद्रि	23/06/1984	उल्क	02/01/1989	सिद्ध	23/08/1994	संक	24/05/2001	मंग	24/06/2007
उल्क	21/02/1985	सिद्ध	23/12/1989	संक	23/12/1995	मंग	03/08/2001	पिंग	03/12/2007
सिद्ध	02/12/1985	संक	01/02/1991	मंग	22/02/1996	पिंग	23/12/2001	धांय	02/08/2008
संक	23/10/1986	मंग	24/03/1991	पिंग	23/06/1996	धांय	24/07/2002	भ्राम	23/06/2009
मंग	03/12/1986	पिंग	04/07/1991	धांय	22/12/1996	भ्राम	04/05/2003	भद्रि	03/08/2010
पिंग	22/02/1987	धांय	03/12/1991	भ्राम	23/08/1997	भद्रि	23/04/2004	उल्क	03/12/2011
धांय	24/06/1987	भ्राम	23/06/1992	भद्रि	23/06/1998	उल्क	23/06/2005	सिद्ध	23/06/2013

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
23/06/2013		23/06/2014		23/06/2016		24/06/2019		24/06/2023	
23/06/2014		23/06/2016		24/06/2019		24/06/2023		23/06/2028	
मंग	03/07/2013	पिंग	03/08/2014	धांय	22/09/2016	भ्राम	03/12/2019	भद्रि	03/03/2024
पिंग	23/07/2013	धांय	03/10/2014	भ्राम	22/01/2017	भद्रि	23/06/2020	उल्क	02/01/2025
धांय	23/08/2013	भ्राम	23/12/2014	भद्रि	23/06/2017	उल्क	21/02/2021	सिद्ध	23/12/2025
भ्राम	02/10/2013	भद्रि	03/04/2015	उल्क	23/12/2017	सिद्ध	02/12/2021	संक	01/02/2027
भद्रि	22/11/2013	उल्क	03/08/2015	सिद्ध	24/07/2018	संक	23/10/2022	मंग	24/03/2027
उल्क	22/01/2014	सिद्ध	23/12/2015	संक	24/03/2019	मंग	03/12/2022	पिंग	04/07/2027
सिद्ध	03/04/2014	संक	02/06/2016	मंग	24/04/2019	पिंग	22/02/2023	धांय	03/12/2027
संक	23/06/2014	मंग	23/06/2016	पिंग	24/06/2019	धांय	24/06/2023	भ्राम	23/06/2028

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
23/06/2028		23/06/2034		23/06/2041		23/06/2049		23/06/2050	
23/06/2034		23/06/2041		23/06/2049		23/06/2050		23/06/2052	
उल्क	23/06/2029	सिद्ध	02/11/2035	संक	03/04/2043	मंग	03/07/2049	पिंग	03/08/2050
सिद्ध	23/08/2030	संक	24/05/2037	मंग	24/06/2043	पिंग	23/07/2049	धांय	03/10/2050
संक	23/12/2031	मंग	03/08/2037	पिंग	03/12/2043	धांय	23/08/2049	भ्राम	23/12/2050
मंग	22/02/2032	पिंग	23/12/2037	धांय	02/08/2044	भ्राम	02/10/2049	भद्रि	03/04/2051
पिंग	23/06/2032	धांय	24/07/2038	भ्राम	23/06/2045	भद्रि	22/11/2049	उल्क	03/08/2051
धांय	22/12/2032	भ्राम	04/05/2039	भद्रि	03/08/2046	उल्क	22/01/2050	सिद्ध	23/12/2051
भ्राम	23/08/2033	भद्रि	23/04/2040	उल्क	03/12/2047	सिद्ध	03/04/2050	संक	02/06/2052
भद्रि	23/06/2034	उल्क	23/06/2041	सिद्ध	23/06/2049	संक	23/06/2050	मंग	23/06/2052

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
23/06/2052		24/06/2055		24/06/2059		23/06/2064		23/06/2070	
24/06/2055		24/06/2059		23/06/2064		23/06/2070		00/00/0000	
धांय	22/09/2052	भ्राम	03/12/2055	भद्रि	03/03/2060	उल्क	23/06/2065	सिद्ध	17/07/2071
भ्राम	22/01/2053	भद्रि	23/06/2056	उल्क	02/01/2061	सिद्ध	23/08/2066		00/00/0000
भद्रि	23/06/2053	उल्क	21/02/2057	सिद्ध	23/12/2061	संक	23/12/2067		00/00/0000
उल्क	23/12/2053	सिद्ध	02/12/2057	संक	01/02/2063	मंग	22/02/2068		00/00/0000
सिद्ध	24/07/2054	संक	23/10/2058	मंग	24/03/2063	पिंग	23/06/2068		00/00/0000
संक	24/03/2055	मंग	03/12/2058	पिंग	04/07/2063	धांय	22/12/2068		00/00/0000
मंग	24/04/2055	पिंग	22/02/2059	धांय	03/12/2063	भ्राम	23/08/2069		00/00/0000
पिंग	24/06/2055	धांय	24/06/2059	भ्राम	23/06/2064	भद्रि	23/06/2070		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग		भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय	
02/01/2025		23/12/2025		01/02/2027		24/03/2027		04/07/2027	
23/12/2025		01/02/2027		24/03/2027		04/07/2027		03/12/2027	
सिद्ध	12/03/2025	संक	23/03/2026	मंग	03/02/2027	पिंग	30/03/2027	धांय	16/07/2027
संक	30/05/2025	मंग	03/04/2026	पिंग	06/02/2027	धांय	07/04/2027	भ्राम	02/08/2027
मंग	08/06/2025	पिंग	26/04/2026	धांय	10/02/2027	भ्राम	19/04/2027	भद्रि	23/08/2027
पिंग	28/06/2025	धांय	29/05/2026	भ्राम	16/02/2027	भद्रि	03/05/2027	उल्क	18/09/2027
धांय	28/07/2025	भ्राम	14/07/2026	भद्रि	23/02/2027	उल्क	20/05/2027	सिद्ध	17/10/2027
भ्राम	05/09/2025	भद्रि	08/09/2026	उल्क	03/03/2027	सिद्ध	08/06/2027	संक	20/11/2027
भद्रि	24/10/2025	उल्क	15/11/2026	सिद्ध	13/03/2027	संक	01/07/2027	मंग	24/11/2027
उल्क	23/12/2025	सिद्ध	01/02/2027	संक	24/03/2027	मंग	04/07/2027	पिंग	03/12/2027

भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध		उल्क - संक		उल्क - मंग	
03/12/2027		23/06/2028		23/06/2029		23/08/2030		23/12/2031	
23/06/2028		23/06/2029		23/08/2030		23/12/2031		22/02/2032	
भ्राम	25/12/2027	उल्क	23/08/2028	सिद्ध	14/09/2029	संक	09/12/2030	मंग	25/12/2031
भद्रि	23/01/2028	सिद्ध	02/11/2028	संक	18/12/2029	मंग	23/12/2030	पिंग	28/12/2031
उल्क	25/02/2028	संक	22/01/2029	मंग	29/12/2029	पिंग	19/01/2031	धांय	02/01/2032
सिद्ध	05/04/2028	मंग	01/02/2029	पिंग	22/01/2030	धांय	01/03/2031	भ्राम	09/01/2032
संक	20/05/2028	पिंग	21/02/2029	धांय	27/02/2030	भ्राम	24/04/2031	भद्रि	18/01/2032
मंग	26/05/2028	धांय	24/03/2029	भ्राम	15/04/2030	भद्रि	30/06/2031	उल्क	28/01/2032
पिंग	06/06/2028	भ्राम	03/05/2029	भद्रि	13/06/2030	उल्क	19/09/2031	सिद्ध	09/02/2032
धांय	23/06/2028	भद्रि	23/06/2029	उल्क	23/08/2030	सिद्ध	23/12/2031	संक	22/02/2032

उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध	
22/02/2032		23/06/2032		22/12/2032		23/08/2033		23/06/2034	
23/06/2032		22/12/2032		23/08/2033		23/06/2034		02/11/2035	
पिंग	29/02/2032	धांय	08/07/2032	भ्राम	18/01/2033	भद्रि	04/10/2033	सिद्ध	28/09/2034
धांय	10/03/2032	भ्राम	28/07/2032	भद्रि	21/02/2033	उल्क	24/11/2033	संक	16/01/2035
भ्राम	23/03/2032	भद्रि	23/08/2032	उल्क	03/04/2033	सिद्ध	22/01/2034	मंग	30/01/2035
भद्रि	09/04/2032	उल्क	22/09/2032	सिद्ध	20/05/2033	संक	31/03/2034	पिंग	27/02/2035
उल्क	30/04/2032	सिद्ध	28/10/2032	संक	13/07/2033	मंग	08/04/2034	धांय	09/04/2035
सिद्ध	23/05/2032	संक	07/12/2032	मंग	20/07/2033	पिंग	25/04/2034	भ्राम	04/06/2035
संक	19/06/2032	मंग	12/12/2032	पिंग	03/08/2033	धांय	20/05/2034	भद्रि	12/08/2035
मंग	23/06/2032	पिंग	22/12/2032	धांय	23/08/2033	भ्राम	23/06/2034	उल्क	02/11/2035

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम	
02/11/2035		24/05/2037		03/08/2037		23/12/2037		24/07/2038	
24/05/2037		03/08/2037		23/12/2037		24/07/2038		04/05/2039	
संक	08/03/2036	मंग	26/05/2037	पिंग	11/08/2037	धांय	09/01/2038	भ्राम	24/08/2038
मंग	23/03/2036	पिंग	30/05/2037	धांय	22/08/2037	भ्राम	02/02/2038	भद्रि	03/10/2038
पिंग	24/04/2036	धांय	04/06/2037	भ्राम	07/09/2037	भद्रि	04/03/2038	उल्क	19/11/2038
धांय	10/06/2036	भ्राम	12/06/2037	भद्रि	27/09/2037	उल्क	08/04/2038	सिद्ध	13/01/2039
भ्राम	13/08/2036	भद्रि	22/06/2037	उल्क	21/10/2037	सिद्ध	20/05/2038	संक	17/03/2039
भद्रि	30/10/2036	उल्क	04/07/2037	सिद्ध	17/11/2037	संक	06/07/2038	मंग	25/03/2039
उल्क	02/02/2037	सिद्ध	18/07/2037	संक	19/12/2037	मंग	12/07/2038	पिंग	10/04/2039
सिद्ध	24/05/2037	संक	03/08/2037	मंग	23/12/2037	पिंग	24/07/2038	धांय	04/05/2039

सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग	
04/05/2039		23/04/2040		23/06/2041		03/04/2043		24/06/2043	
23/04/2040		23/06/2041		03/04/2043		24/06/2043		03/12/2043	
भद्रि	22/06/2039	उल्क	03/07/2040	संक	14/11/2041	मंग	06/04/2043	पिंग	03/07/2043
उल्क	20/08/2039	सिद्ध	24/09/2040	मंग	02/12/2041	पिंग	10/04/2043	धांय	16/07/2043
सिद्ध	28/10/2039	संक	27/12/2040	पिंग	07/01/2042	धांय	17/04/2043	भ्राम	03/08/2043
संक	15/01/2040	मंग	08/01/2041	धांय	03/03/2042	भ्राम	26/04/2043	भद्रि	26/08/2043
मंग	25/01/2040	पिंग	01/02/2041	भ्राम	14/05/2042	भद्रि	07/05/2043	उल्क	22/09/2043
पिंग	14/02/2040	धांय	09/03/2041	भद्रि	12/08/2042	उल्क	21/05/2043	सिद्ध	23/10/2043
धांय	14/03/2040	भ्राम	25/04/2041	उल्क	28/11/2042	सिद्ध	05/06/2043	संक	28/11/2043
भ्राम	23/04/2040	भद्रि	23/06/2041	सिद्ध	03/04/2043	संक	24/06/2043	मंग	03/12/2043

संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध	
03/12/2043		02/08/2044		23/06/2045		03/08/2046		03/12/2047	
02/08/2044		23/06/2045		03/08/2046		03/12/2047		23/06/2049	
धांय	23/12/2043	भ्राम	07/09/2044	भद्रि	18/08/2045	उल्क	23/10/2046	सिद्ध	22/03/2048
भ्राम	19/01/2044	भद्रि	23/10/2044	उल्क	25/10/2045	सिद्ध	26/01/2047	संक	27/07/2048
भद्रि	22/02/2044	उल्क	16/12/2044	सिद्ध	12/01/2046	संक	14/05/2047	मंग	11/08/2048
उल्क	03/04/2044	सिद्ध	17/02/2045	संक	12/04/2046	मंग	27/05/2047	पिंग	12/09/2048
सिद्ध	20/05/2044	संक	30/04/2045	मंग	23/04/2046	पिंग	24/06/2047	धांय	29/10/2048
संक	13/07/2044	मंग	09/05/2045	पिंग	16/05/2046	धांय	03/08/2047	भ्राम	31/12/2048
मंग	20/07/2044	पिंग	27/05/2045	धांय	19/06/2046	भ्राम	26/09/2047	भद्रि	20/03/2049
पिंग	02/08/2044	धांय	23/06/2045	भ्राम	03/08/2046	भद्रि	03/12/2047	उल्क	23/06/2049

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 7 वर्ष 8 मास 16 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : रोहिणी - 1 अपसव्य
देह : कर्क जीव : धनु

मिथुन 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
17/07/1963		03/04/1971		02/04/1976		02/04/1997		03/04/2007	
03/04/1971		02/04/1976		02/04/1997		03/04/2007		03/04/2011	
	17/07/1963	सिंह	18/07/1971	कर्क	19/05/1981	धनु	01/06/1998	मक	09/06/2007
सिंह	19/09/1963	कर्क	06/10/1972	धनु	28/10/1983	मक	18/11/1998	कुंभ	16/08/2007
कर्क	30/11/1965	धनु	06/05/1973	मक	18/10/1984	कुंभ	07/05/1999	मीन	02/02/2008
धनु	17/12/1966	मक	30/07/1973	कुंभ	10/10/1985	मीन	04/07/2000	मेष	31/05/2008
मक	19/05/1967	कुंभ	23/10/1973	मीन	20/03/1988	मेष	28/04/2001	वृष	27/02/2009
कुंभ	19/10/1967	मीन	23/05/1974	मेष	04/12/1989	वृष	08/03/2003	मिथु	30/07/2009
मीन	04/11/1968	मेष	19/10/1974	वृष	31/10/1993	मिथु	24/03/2004	सिंह	23/10/2009
मेष	30/07/1969	वृष	24/09/1975	मिथु	12/01/1996	सिंह	23/10/2004	कर्क	15/10/2010
वृष	03/04/1971	मिथु	02/04/1976	सिंह	02/04/1997	कर्क	03/04/2007	धनु	03/04/2011

कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		मेष 7 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
03/04/2011		03/04/2015		02/04/2025		02/04/2032		02/04/2048	
03/04/2015		02/04/2025		02/04/2032		02/04/2048		00/00/0000	
कुंभ	09/06/2011	मीन	31/05/2016	मेष	27/10/2025	वृष	25/03/2035	मिथु	12/03/2049
मीन	26/11/2011	मेष	25/03/2017	वृष	15/02/2027	मिथु	26/11/2036	सिंह	16/07/2049
मेष	24/03/2012	वृष	02/02/2019	मिथु	09/11/2027	सिंह	31/10/2037		00/00/0000
वृष	21/12/2012	मिथु	19/02/2020	सिंह	06/04/2028	कर्क	27/09/2041		00/00/0000
मिथु	23/05/2013	सिंह	19/09/2020	कर्क	21/12/2029	धनु	08/08/2043		00/00/0000
सिंह	16/08/2013	कर्क	28/02/2023	धनु	15/10/2030	मक	06/05/2044		00/00/0000
कर्क	08/08/2014	धनु	27/04/2024	मक	11/02/2031	कुंभ	02/02/2045		00/00/0000
धनु	25/01/2015	मक	14/10/2024	कुंभ	09/06/2031	मीन	13/12/2046		00/00/0000
मक	03/04/2015	कुंभ	02/04/2025	मीन	02/04/2032	मेष	02/04/2048		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - वृष		मेष - मिथु		मेष - सिंह		मेष - कर्क		मेष - धनु	
27/10/2025		15/02/2027		09/11/2027		06/04/2028		21/12/2029	
15/02/2027		09/11/2027		06/04/2028		21/12/2029		15/10/2030	
वृष	24/01/2026	मिथु	15/03/2027	सिंह	18/11/2027	कर्क	05/09/2028	धनु	25/01/2030
मिथु	14/03/2026	सिंह	30/03/2027	कर्क	24/12/2027	धनु	17/11/2028	मक	08/02/2030
सिंह	11/04/2026	कर्क	04/06/2027	धनु	11/01/2028	मक	16/12/2028	कुंभ	22/02/2030
कर्क	05/08/2026	धनु	05/07/2027	मक	18/01/2028	कुंभ	14/01/2029	मीन	28/03/2030
धनु	30/09/2026	मक	17/07/2027	कुंभ	24/01/2028	मीन	28/03/2029	मेष	21/04/2030
मक	22/10/2026	कुंभ	30/07/2027	मीन	11/02/2028	मेष	18/05/2029	वृष	16/06/2030
कुंभ	13/11/2026	मीन	30/08/2027	मेष	23/02/2028	वृष	11/09/2029	मिथु	17/07/2030
मीन	07/01/2027	मेष	21/09/2027	वृष	21/03/2028	मिथु	15/11/2029	सिंह	03/08/2030
मेष	15/02/2027	वृष	09/11/2027	मिथु	06/04/2028	सिंह	21/12/2029	कर्क	15/10/2030

मेष - मक		मेष - कुंभ		मेष - मीन		वृष - वृष		वृष - मिथु	
15/10/2030		11/02/2031		09/06/2031		02/04/2032		25/03/2035	
11/02/2031		09/06/2031		02/04/2032		25/03/2035		26/11/2036	
मक	20/10/2030	कुंभ	16/02/2031	मीन	14/07/2031	वृष	21/10/2032	मिथु	28/05/2035
कुंभ	26/10/2030	मीन	02/03/2031	मेष	07/08/2031	मिथु	12/02/2033	सिंह	03/07/2035
मीन	09/11/2030	मेष	12/03/2031	वृष	02/10/2031	सिंह	16/04/2033	कर्क	29/11/2035
मेष	18/11/2030	वृष	03/04/2031	मिथु	02/11/2031	कर्क	07/01/2034	धनु	08/02/2036
वृष	10/12/2030	मिथु	15/04/2031	सिंह	19/11/2031	धनु	13/05/2034	मक	08/03/2036
मिथु	23/12/2030	सिंह	22/04/2031	कर्क	31/01/2032	मक	03/07/2034	कुंभ	05/04/2036
सिंह	30/12/2030	कर्क	21/05/2031	धनु	05/03/2032	कुंभ	22/08/2034	मीन	15/06/2036
कर्क	28/01/2031	धनु	04/06/2031	मक	19/03/2032	मीन	27/12/2034	मेष	04/08/2036
धनु	11/02/2031	मक	09/06/2031	कुंभ	02/04/2032	मेष	25/03/2035	वृष	26/11/2036

वृष - सिंह		वृष - कर्क		वृष - धनु		वृष - मक		वृष - कुंभ	
26/11/2036		31/10/2037		27/09/2041		08/08/2043		06/05/2044	
31/10/2037		27/09/2041		08/08/2043		06/05/2044		02/02/2045	
सिंह	15/12/2036	कर्क	15/10/2038	धनु	15/12/2041	मक	21/08/2043	कुंभ	18/05/2044
कर्क	08/03/2037	धनु	30/03/2039	मक	16/01/2042	कुंभ	02/09/2043	मीन	19/06/2044
धनु	17/04/2037	मक	04/06/2039	कुंभ	17/02/2042	मीन	04/10/2043	मेष	11/07/2044
मक	03/05/2037	कुंभ	10/08/2039	मीन	07/05/2042	मेष	26/10/2043	वृष	31/08/2044
कुंभ	18/05/2037	मीन	22/01/2040	मेष	01/07/2042	वृष	16/12/2043	मिथु	28/09/2044
मीन	27/06/2037	मेष	18/05/2040	वृष	04/11/2042	मिथु	13/01/2044	सिंह	14/10/2044
मेष	25/07/2037	वृष	07/02/2041	मिथु	15/01/2043	सिंह	29/01/2044	कर्क	19/12/2044
वृष	26/09/2037	मिथु	06/07/2041	सिंह	23/02/2043	कर्क	04/04/2044	धनु	20/01/2045
मिथु	31/10/2037	सिंह	27/09/2041	कर्क	08/08/2043	धनु	06/05/2044	मक	02/02/2045

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मीन		वृष - मेष		मिथु - मिथु		मिथु - सिंह	
02/02/2045		13/12/2046		02/04/2048		12/03/2049	
13/12/2046		02/04/2048		12/03/2049		00/00/0000	
मीन	22/04/2045	मेष	21/01/2047	मिथु	08/05/2048	सिंह	23/03/2049
मेष	16/06/2045	वृष	19/04/2047	सिंह	28/05/2048	कर्क	09/05/2049
वृष	20/10/2045	मिथु	08/06/2047	कर्क	20/08/2048	धनु	31/05/2049
मिथु	30/12/2045	सिंह	06/07/2047	धनु	29/09/2048	मक	09/06/2049
सिंह	08/02/2046	कर्क	30/10/2047	मक	15/10/2048	कुंभ	18/06/2049
कर्क	24/07/2046	धनु	24/12/2047	कुंभ	31/10/2048	मीन	10/07/2049
धनु	11/10/2046	मक	15/01/2048	मीन	10/12/2048	मेष	16/07/2049
मक	12/11/2046	कुंभ	06/02/2048	मेष	07/01/2049		00/00/0000
कुंभ	13/12/2046	मीन	02/04/2048	वृष	12/03/2049		00/00/0000

चर दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 1 वर्ष 0 मास 0 दिन

सिंह 1 वर्ष	
17/07/1963	
16/07/1964	
कन्या	16/08/1963
तुला	16/09/1963
वृश्चि	16/10/1963
धनु	16/11/1963
मक	16/12/1963
कुंभ	16/01/1964
मीन	15/02/1964
मेष	16/03/1964
वृष	16/04/1964
मिथु	16/05/1964
कर्क	16/06/1964
सिंह	16/07/1964

कन्या 2 वर्ष	
16/07/1964	
17/07/1966	
तुला	15/09/1964
वृश्चि	15/11/1964
धनु	15/01/1965
मक	17/03/1965
कुंभ	17/05/1965
मीन	16/07/1965
मेष	15/09/1965
वृष	15/11/1965
मिथु	15/01/1966
कर्क	17/03/1966
सिंह	17/05/1966
कन्या	17/07/1966

तुला 8 वर्ष	
17/07/1966	
17/07/1974	
वृश्चि	17/03/1967
धनु	16/11/1967
मक	16/07/1968
कुंभ	17/03/1969
मीन	15/11/1969
मेष	17/07/1970
वृष	17/03/1971
मिथु	16/11/1971
कर्क	16/07/1972
सिंह	17/03/1973
कन्या	15/11/1973
तुला	17/07/1974

वृश्चिक 1 वर्ष	
17/07/1974	
17/07/1975	
तुला	16/08/1974
कन्या	16/09/1974
सिंह	16/10/1974
कर्क	15/11/1974
मिथु	16/12/1974
वृष	15/01/1975
मेष	15/02/1975
मीन	17/03/1975
कुंभ	17/04/1975
मक	17/05/1975
धनु	16/06/1975
वृश्चि	17/07/1975

धनु 3 वर्ष	
17/07/1975	
17/07/1978	
वृश्चि	16/10/1975
तुला	16/01/1976
कन्या	16/04/1976
सिंह	16/07/1976
कर्क	15/10/1976
मिथु	15/01/1977
वृष	16/04/1977
मेष	16/07/1977
मीन	16/10/1977
कुंभ	15/01/1978
मक	16/04/1978
धनु	17/07/1978

मकर 12 वर्ष	
17/07/1978	
17/07/1990	
धनु	17/07/1979
वृश्चि	16/07/1980
तुला	16/07/1981
कन्या	17/07/1982
सिंह	17/07/1983
कर्क	16/07/1984
मिथु	16/07/1985
वृष	17/07/1986
मेष	17/07/1987
मीन	16/07/1988
कुंभ	16/07/1989
मक	17/07/1990

कुम्भ 8 वर्ष	
17/07/1990	
17/07/1998	
मीन	17/03/1991
मेष	16/11/1991
वृष	16/07/1992
मिथु	17/03/1993
कर्क	15/11/1993
सिंह	17/07/1994
कन्या	17/03/1995
तुला	16/11/1995
वृश्चि	16/07/1996
धनु	17/03/1997
मक	15/11/1997
कुंभ	17/07/1998

मीन 12 वर्ष	
17/07/1998	
17/07/2010	
मेष	17/07/1999
वृष	16/07/2000
मिथु	16/07/2001
कर्क	17/07/2002
सिंह	17/07/2003
कन्या	16/07/2004
तुला	16/07/2005
वृश्चि	17/07/2006
धनु	17/07/2007
मक	16/07/2008
कुंभ	16/07/2009
मीन	17/07/2010

मेष 5 वर्ष	
17/07/2010	
17/07/2015	
वृष	16/12/2010
मिथु	17/05/2011
कर्क	16/10/2011
सिंह	16/03/2012
कन्या	16/08/2012
तुला	15/01/2013
वृश्चि	16/06/2013
धनु	15/11/2013
मक	16/04/2014
कुंभ	16/09/2014
मीन	15/02/2015
मेष	17/07/2015

वृष 1 वर्ष	
17/07/2015	
16/07/2016	
मेष	16/08/2015
मीन	16/09/2015
कुंभ	16/10/2015
मक	16/11/2015
धनु	16/12/2015
वृश्चि	16/01/2016
तुला	15/02/2016
कन्या	16/03/2016
सिंह	16/04/2016
कर्क	16/05/2016
मिथु	16/06/2016
वृष	16/07/2016

मिथुन 1 वर्ष	
16/07/2016	
16/07/2017	
वृष	16/08/2016
मेष	15/09/2016
मीन	15/10/2016
कुंभ	15/11/2016
मक	15/12/2016
धनु	15/01/2017
वृश्चि	14/02/2017
तुला	17/03/2017
कन्या	16/04/2017
सिंह	17/05/2017
कर्क	16/06/2017
मिथु	16/07/2017

कर्क 2 वर्ष	
16/07/2017	
17/07/2019	
मिथु	15/09/2017
वृष	15/11/2017
मेष	15/01/2018
मीन	17/03/2018
कुंभ	17/05/2018
मक	17/07/2018
धनु	16/09/2018
वृश्चि	15/11/2018
तुला	15/01/2019
कन्या	17/03/2019
सिंह	17/05/2019
कर्क	17/07/2019

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

कर्क - कर्क	
17/05/2019	
17/07/2019	
मिथु	22/05/2019
वृष	27/05/2019
मेष	01/06/2019
मीन	06/06/2019
कुंभ	11/06/2019
मक	16/06/2019
धनु	22/06/2019
वृश्चि	27/06/2019
तुला	02/07/2019
कन्या	07/07/2019
सिंह	12/07/2019
कर्क	17/07/2019

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 2, 8, 7
शत्रु अंक	3, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	83%	धन, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	70%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	67%	कम खर्च, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	53%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	52%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
पन्ना	बुध	50%	कम खर्च, धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	50%	धनार्जन, कम खर्च
पुखराज	गुरु	34%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

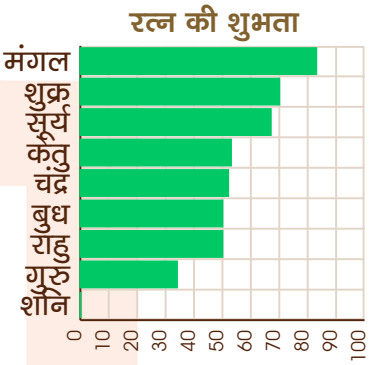

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	08/01/1972	73%	64%	83%	56%	34%	70%	0%	25%	31%
मंगल	08/01/1979	73%	58%	95%	25%	46%	70%	0%	25%	59%
राहु	07/01/1997	55%	29%	70%	50%	34%	77%	0%	62%	31%
गुरु	07/01/2013	73%	58%	89%	25%	54%	58%	0%	50%	53%
शनि	08/01/2032	55%	29%	70%	56%	34%	77%	2%	56%	31%
बुध	07/01/2049	73%	29%	83%	62%	34%	77%	0%	50%	53%
केतु	08/01/2056	55%	29%	89%	50%	34%	77%	0%	25%	66%
शुक्र	08/01/2076	55%	29%	83%	56%	34%	83%	0%	56%	59%
सूर्य	08/01/2082	80%	58%	89%	50%	46%	58%	0%	25%	31%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए हीरा, माणिक्य, लहसुनिया, मोती, पन्ना एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

नीलम पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। मंगल के शुभफल प्राप्ति के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण कर आप सहनशीलता का परिचय देंगे। वाकशक्ति का चातुर्य के साथ प्रयोग करेंगे। धन का प्रवाह तीव्र होगा। पराक्रम के कार्यों में आपकी अभिरुचि जागृत होगी। मूंगा रत्न आपके जोश और ऊर्जा शक्ति का भी विस्तार करेगा। इस रत्न को धारण करने के बाद आप जीवन की बाधाओं का साहस के साथ सामना करने लगेंगे। पहल क्षमता भी आपकी पहले से अधिक बढ़ जायेगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद

आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आपका विदेश गमन सहज हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी। कार्यक्षेत्र में आपकी तरक्की होगी। माणिक्य रत्न की शुभता से आप अस्पतालों, पागलखानों, धर्मार्थ संस्थानों, जेलों और परोपकारी कामों से लाभ हो सकता है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण से आपका आत्मविश्वास भाव बेहतर होगा। आपको कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी। सूर्य रत्न माणिक्य आपको दूर देश की यात्राएं करवा सकता है। यह आपको आर्थिक रूप से समृद्ध करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते है। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छ्ल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु अष्टम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको चोट एवं दुर्घटनाओं से बचाएगा। रत्न शुभता से आप अपनी ऊर्जा शक्ति का उपयोग देशहित के कार्यों में करेंगे तथा इस रत्न को पहनने से पैतृक सम्पति की प्राप्ति के योग बनेंगे। यह रत्न आपको स्वजनों के निकट रहने का सुख देगा। आप का शरीर पुष्ट और बलशाली होगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको आय क्षेत्रों में नियमितता देगा। आप शुभ कर्मो की ओर अग्रसर होंगे। यह रत्न आपको उदर रोग, गुदा रोग और अत्यधिक रक्त प्रवाह की हानि से बचाएगा। साथ ही रत्न शुभता आपको असमय मृत्यु भय से मुक्त करेगी।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं

संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र लग्नेश सूर्य के मित्र है। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न आपकी व्यय संबंधी चिन्ताओं का अंत कर सकता है। मोती रत्न को धारण कर आप अपनी व्यावसायिक कार्यों की परेशानियों में कमी कर सकते है। मोती रत्न आपके मानसिक सुखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हानियों से बचाव करने में आप सफल हो सकते है। विदेश प्रवास के लिए भी इस रत्न को आप धारण कर सकते है। साथ ही यह रत्न आपको ऋणों से मुक्ति प्राप्त कर अस्पताल, जेल, कारावास इत्यादि से बच सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको सेवा कर्म में सुख एवं उद्योग-धंधों में लाभ एवं सफलता देगा। इस रत्न की शुभता से आपको इहलोक और परलोक दोनों में सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुःख भोगने के अवसर देगा। आपके व्यर्थ के व्ययों को नियंत्रित करेगा। इस रत्न को पहनने पर आप ऋण मुक्त, धार्मिक, परोपकारी और प्रलोभन से मुक्त होंगे। यह रत्न शुभ होकर आपको शयन सुख देगा तथा अनिद्रा रोग का निवारण करेगा। यह रत्न पहन कर आप अपने जीवन लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त कर पाएंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टम भाव के स्वामी गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप विदयाभिमानी हो सकते है। पुखराज रत्न आपमें विनम्रता भाव की कमी ला सकता है। आप प्रतिकूल बुद्धि के स्वामी हो सकते है। यह रत्न आपके शत्रुओं में वृद्धि कर रहा है। रत्न प्रभाव से आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। पुखराज रत्न आपके पिता को ऋणी कर सकता है। सरकारी नौकरी प्राप्ति में यह रत्न परेशानियां दे सकता है। नीच संगति में रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव को बढ़ाएगा। रत्न धारण के बाद आपको मधुमेह रोग से बचना होगा।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूःख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते है। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते है। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(07/01/2013 - 08/01/2032)

शनि की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(08/01/2032 - 07/01/2049)

बुध की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(07/01/2049 - 08/01/2056)

केतु की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मोती व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(08/01/2056 - 08/01/2076)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पन्ना, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मोती रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(08/01/2076 - 08/01/2082)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, हीरा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

चन्द्र - 08/01/1972

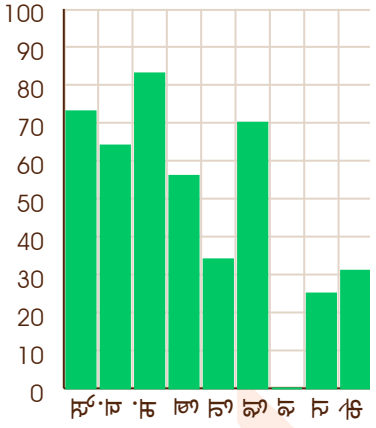

मंगल - 08/01/1979

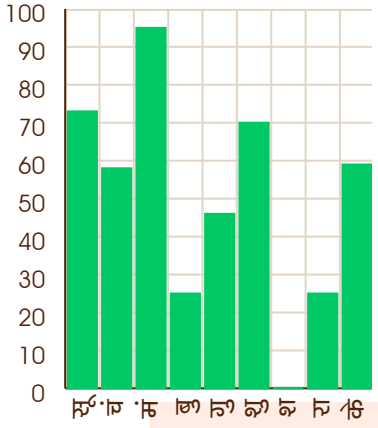

राहु - 07/01/1997

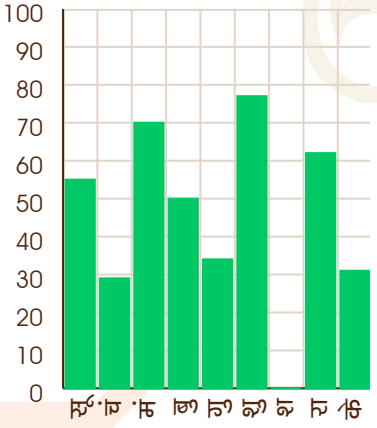

गुरु - 07/01/2013

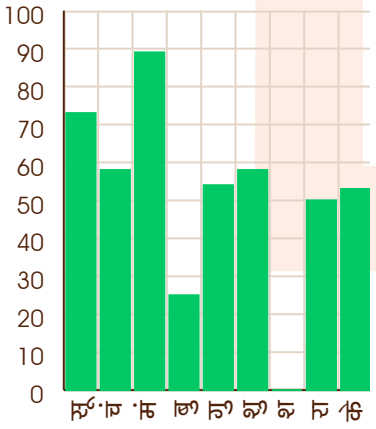

शनि - 08/01/2032

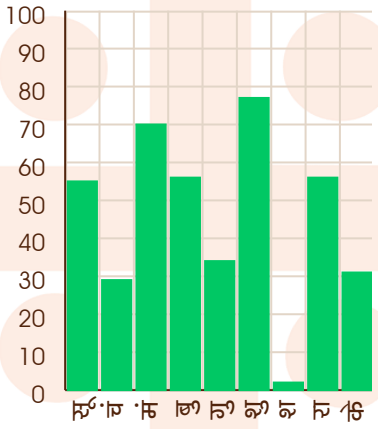

बुध - 07/01/2049

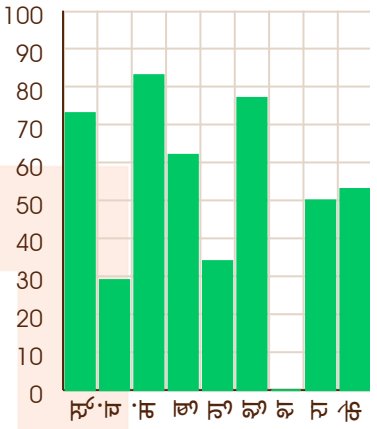

केतु - 08/01/2056

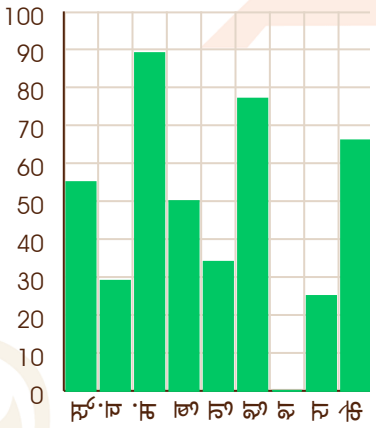

शुक्र - 08/01/2076

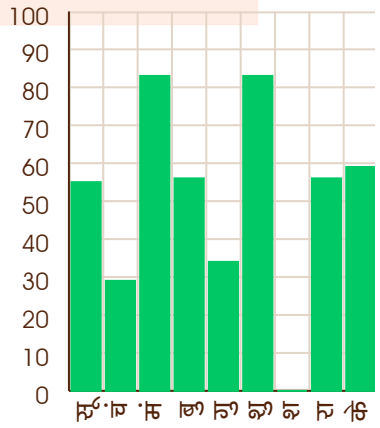

सूर्य - 08/01/2082

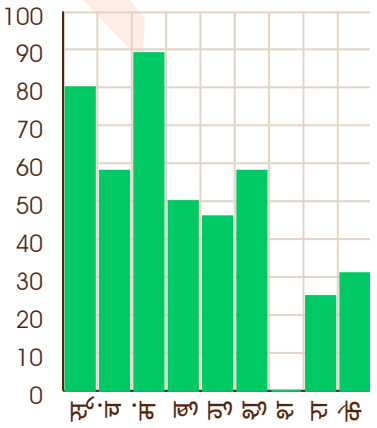

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01झ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपतिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता हैं।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	17/06/1968-17/06/1968	07/03/1969-28/04/1971	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/04/1971-10/06/1973	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 17 है। एक एवं सात के योग से आपका मूलांक 8 होता है। आठ मूलांक का स्वामी शनि है। अंक एक का सूर्य तथा सात का भारतीय मत से केतु एवं पाश्चात्य मत से नेपच्यून है। इन तीनों ग्रहों का प्रभाव आपके जीवन में दृष्टिगोचर होगा। मूलांक 8 के स्वामी शनि प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी। आपके जीवन में संघर्ष अधिक रहेंगे एवं प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने के बाद अवरोध आयेंगे। जिन्हें आप मेहनत एवं धैर्य से पार कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

निराशा एवं आलस्य दो अवगुण आपकी प्रगति के बाधक रहेंगे। अतः किसी भी कार्य की असफलता से निराश न हों तथा दुबारा प्रयत्न करें, सफलता मिलेगी। कार्य में कर्म के सिद्धांत को मानते हुये आलस्य से दूर रहना सफलता की कुंजी रहेगा। अंक एक के स्वामी सूर्य एवं सात के केतु या नेपच्यून के प्रभाव से आपकी कल्पना शक्ति, विचार शक्ति अच्छी रहेगी। आप में दूसरों को समझनें की शक्ति अच्छी होगी। अतीन्द्रिय ज्ञान भी अच्छा रहेगा। सूर्य प्रभाव से आपका नाम स्थायी प्रसिद्धि को प्राप्त करेगा। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आपको यश तथा लाभ प्राप्त होगा।

उच्च वर्ग में आप लोकप्रिय होंगे एवं उच्चवर्ग से लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी इच्छा शक्ति दृढ़ रहेगी एवं अपनी बात पर अड़िग रहने की प्रवृत्ति आप में पाई जायेगी। आप थोड़े हठी होंगे। हठ की यह प्रवृत्ति यदाकदा आपको हानि भी पहुँचायेगी। अतः जहाँ तक हो सके आप अपने हठ पर सन्तुलन रखें एवं क्रोध पर नियंत्रण रखें। सूर्य केतु शनि ग्रहों के प्रभाव से आप अपने जीवन में एक सफल व्यक्ति रहेंगे। आपकी ख्याति अच्छी रहेगी तथा दूसरों के लिये उदाहरण का कार्य करेगी।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 8 है तथा भाग्यांक 7 है। मूलांक 8 का स्वामी शनि है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है। मूलांक 8 एवं भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक तथा भाग्यांक के फल उचित मात्रा में प्राप्त होंगे। आपकी व्यावहारिक बुद्धि अच्छी रहेगी एवं आपके अंदर उच्च कोटि की कल्पना शक्ति निहित रहेगी, जो आपके

रोजगार-व्यापार में आपको वांछित आर्थिक लाभ देती रहेगी। आप जीवन के प्रारंभिक मोड़ से ही मेहनतशील व्यक्ति रहेंगे तथा धीरे-धीरे आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। आपकी विचारधारा एवं कार्य करने की शैली परिवर्तनशील रहेगी तथा आप जो भी रोजगार-व्यापार प्रारंभ करेंगे, उसमें समयोचित परिवर्तन अवश्य होते रहेंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी दूरस्थ देशों की यात्राएं होती रहेंगी, जो जीवन पर्यंत चलती रहेंगी। कुछ यात्राएं आपके जीवन में विशेष प्रभाव उत्पन्न करेंगी और दूर-दूर के व्यक्तियों से आपके संबंध स्थापित होंगे। जीवन के प्रारंभिक काल की अपेक्षा मध्य काल से आपकी सामाजिक तथा आर्थिक पद-प्रतिष्ठा उत्तम होती चली जाएगी। समाज में आप काफी लोकप्रियता प्राप्त करेंगे तथा समय-समय पर आप को समाज द्वारा सम्मानित किया जाता रहेगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 34 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 43 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय हेागा।

आपका मूलांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 6, 7, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके जीवन में जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जून, जुलाई तथा अगस्त माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही स्थान पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 7 एवं भाग्यांक 8 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए शुभफलदायक होंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 15, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा 14 जनवरी से 13 मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार आपके लिए अनुकूल दिवस हैं। आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपर्युक्त दिवसों में ही प्रारंभ करेंगे तो आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। अतः आप कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त तारीखों में ही संपन्न हो।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 14 जनवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो, ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे। इनके सहयोग से आपको अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आप अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह संबंध इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी रंग शुभ होंगे। अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो तब आप इन्हीं रंगों के कपड़े पहनें एवं रुमाल हर समय अपने पास रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आप अपने लिए कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करें। आपका मूलांक 8 होने से आपके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः आप इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। आप चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा, या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें ऐसा करना आपके लिए लाभकारी रहेगा तथा अपने आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

शुभ वाहन नं

आपके मूलांक 8 के 1 और 4 मित्र हैं। अतः आप जब भी कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8। आप यदि वाहन में यात्रा करते हैं तब भी आपके लिए शुभ अंक 1,4,8 ही रहेंगे और यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तब उसके लिए आपका कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान-नाक में पीड़ा होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

व्यवसाय

कसरत, खेल-कूद, कूद-फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन-चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लघु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व, नीति निर्धारक, धर्म-कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर आप बैंकॉक नीलम, लाजवर्त, काला नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे आप शनि के दिन, शुक्ल पक्ष में, चौघड़िया मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती का नीलम बनवा कर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

अनुकूल देवता

आप शनि ग्रह की उपासना करें अथवा आपको बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा। आप नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे आपकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है- 'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं'। यह इक्कीस अक्षर का मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शनि गायत्री मंत्र - ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः दबर्चिन्द्रप्रप नमः।। जप संख्या 23000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छु की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे या लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आप प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शनि के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ-तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु शनि यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ था। आपके जन्म काल सिंह लग्न के साथ-साथ वृश्चिक नवमांश तथा मेष राशीय द्रेष्काण भी उदित था। सिंह लग्न के उपयुक्त संयोजन से यह स्पष्ट दृश्य हो रहा है कि यदि आप सतर्कता पूर्वक समुचित योजनानुसार कार्यारम्भ करे तो आप अपने जीवन में निश्चित रूप से सफल होंगे। लेकिन आपके लिए धन-उपार्जन के स्रोत अनिवार्य हैं। यदि आय के स्रोत में कोई व्यवधान उपस्थित हुआ तो यह संभव है कि आप की समस्याएं संघर्षपूर्ण होकर आपके जीवन पथ को समृद्धिशाली बनाने में समस्याओं के साथ मुठभेड़ करना पड़े।

वर्त्तमान काल वास्तविक संयोजन का स्वरूप ऐसा चित्रित हो रहा है कि आपके जीवन का स्वरूप उत्तम, अधम एवं अप्रिय प्रतीत होगा। वर्त्तमान काल जो ग्रह आपके धनोपार्जन हेतु प्रतिकूल है उनका उच्च प्रभावी होना आवश्यक है अन्यथा आपकी उच्च स्थिति एवं आनन्द प्राप्ति के मार्ग अवरूद्ध हो जाएंगे तथा आपको आवश्यकता की पूर्ति हेतु महत्वपूर्ण धनोपार्जन के लिए कोई समझौता करना पड़ेगा। आप किसी प्रशासनिक पद पर कार्यरत होने के लिए सक्षम है। किसी निगम एवं बड़ी कम्पनी के निदेशक पद पर कार्य हेतु योग्य है। समाज में आपका प्रभाव रहेगा आपको धन, प्रतिष्ठा एवं सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

सिंह लग्न सदैव ही उचित दिशा निर्देश करता है। सिंह लग्न प्रभावी पुरूष का जीवन छलकपट से युक्त, आडम्बर एवं असन्तोषयुक्त तथा आशा प्रत्याशा दिलानेवाला होता है। यह धन उपार्जन करने वाला उत्तम पारिवारिक जीवन से युक्त होता है। आप सदैव दो गुणों से पूर्ण अर्थात् उत्तम स्वास्थ्य से युक्त एवं आनन्दित रहेंगे। परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धावस्था में ऐसा अवसर आ सकता है कि आप आंशिक रूप से हृदय रोग अथवा मेरू दण्डीय समस्याओं से ग्रसित हों जाएं। क्योंकि आपके व्यस्ततम कार्यक्रम एवं उत्तेजनापूर्ण मनोदशा ही आपको रोगग्रस्त कर सकता है।

परन्तु वृश्चिक नवमांश बिन्दु भिन्न प्रकार से आपके जीवन की छवि को प्रस्तुत करता है कि आपके अंग में आंशिक दोष जन्मकाल से ही रोग के रूप में प्रभावी है।

अस्तु! आपको समुचित रूप से क्रमबद्धतापूर्वक अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराते रहना चाहिए ताकि रोग के प्रभाव से मुक्त रह सकें। आपकी कुण्डली का नवमांश फल यह प्रदर्शित करता है कि आप अच्छा जीवन व्यतीत करेंगे। आपके लिए विशेष विचारणीय तथ्य यह है कि आपको स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रह कर समुचित रूप से ध्यान देना चाहिए। जितनी भी संभावना हो सतर्कतापूर्वक मन में शांति एवं निर्विध्न रूप से विश्राम ग्रहण कर भोजनादि पर नियंत्रण रक्खें तथा हानिकारण मद्यपान का परित्याग करें। अन्य वांछनीय तथ्य यह है कि आपको सावधानी पूर्वक अपना जीवन संचालन करना चाहिए। अस्तु आप स्वास्थ्य संबंधी किसी भी प्रकार की समस्याओं के प्रति उचित आहार विहार का सेवन करे।

आपको अनावश्यक रूप से किसी भी प्रकार की परेशानियों के प्रति सजग रहना

चाहिए। आपमें विभिन्न प्रकार के प्रभावशाली गुण विद्यमान हैं। यदि आप सुव्यवस्थित रूप में इन गुणों को व्यवहृत करें तो आप धनी हो सकते हैं। आपको राय दी जाती है कि आप अपने धन कोष का परीक्षण करें क्योंकि आप जनताओं के मध्य उपस्थित होकर बहुतायत में धन का व्यय करेंगे। यदि आप संप्रति इस प्रकार मुक्त हस्त से व्यय करते रहे तो बाद में पश्चात् करना पड़ सकता हैं क्योंकि आपका धन बर्बाद हो चुका होगा।

आपके पास प्यारी पत्नी, श्रद्धाप्रदायक पुत्र से युक्त पारिवारिक भवन होगा। आप पर्याप्त आर्थिक धनोपार्जित स्रोतों से युक्त अधिकारपूर्ण शान-शौकत से युक्त आरामदायक जीवन बिताने के साधन से सफल होंगे।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक लाभदायक प्रमाणित होगा। परन्तु अंक 2, 7 और 8 अंक किसी भी परिस्थिति में आपके लिए अनुपयुक्त है।

आपकों नीला, काला एवं सफेद रंग का परित्याग कर, रंग, नारंगी, लाल और हरे रंग का वस्त्रादि धारण करना चाहिए। ये रंग आपके लिए लाभदायक है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश समाज में विद्यमान रहता है साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय पुरूष होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपके हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रर्दशन करेंगे। आपको स्वपुरूषार्थ से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगे तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोक प्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

लग्न में लग्नेश सूर्य की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप में शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। राजनीति या सरकार अथवा व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगे तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा रहेगी तथा समय समय पर योगाभ्यास करेंगे। आप में गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा फलतः आपके कार्य धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रूचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानों की सैर करते रहेंगे। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते

हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आंमत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्य मान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी। साथ ही दीर्घकाल तक किसी वस्तु को याद रख सकेंगे तथा शीघ्र ही ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा इनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आप भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख सुविधाएं एवं आधुनिक उपकरणों से युक्त करने में हमेशा तत्पर रहेंगे परन्तु यदि वे आपकी अपेक्षा अनुसार व्यवहार नहीं करते है या कोई कार्य नहीं करते हैं तो आप शीघ्र उनपर उत्तेजित हो जाएंगे परन्तु पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए अपने पर नियंत्रण रखने में भी सफल रहेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा उत्तेजना में कभी भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगे। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगे तथा समाज में आदरणीय भी समझें जाएंगे। अपने सुख एवं वैभव पूर्ण जीवन के लिए आपको संचार संबन्धी उपकरण यथा दूर भाष दूरदर्शन या अन्य वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगे। आप रोमांटिक संगीत के प्रिय रहेंगे तथा समय समय पर संगीत से अपना तथा अन्य जनों का मनोरंजन करेंगे। आपकी आनन्ददायक यात्राएं होती रहेंगी तथा दूर समीप की यात्राओं से इच्छित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रा के मध्य नवीन मित्रों को बनाने में सफल रहेंगे तथा संबन्धियों से भी आप सहयोग प्राप्त करेंगे। आप सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे साथ ही अध्ययन में भी रुचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचलता से युक्त रहेगा तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। परन्तु नौकरों तथा सेवकों की बहुलता रहेगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगे।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते है। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकते है लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगे तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे लेकिन संबंधों में औपचारिक्ता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होते रहेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। तथा केतु भी अपनी उच्च राशि में होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे। आप एक निपुण व्यक्ति होंगे तथा शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की शक्ति आप में विद्यमान होगा साथ ही कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी आसानी से करेंगे। वैदिक साहित्य एवं दर्शन शास्त्र में आपकी रूचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर रहेंगे। साथ ही आधुनिक विज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी विद्वता का प्रदर्शन करेंगे फलतः समाज में आप एक आदरणीय विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित होंगे।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा आपका प्रेम मर्यादित एवं आदर्शवादी होगा तथा दोंनो के मध्य भावनात्मक सम्बन्ध बने रहेंगे। इससे आपका प्रेम विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है। जिससे आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

उच्चस्थ ग्रह की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र भी अवश्य होगा। आपकी सन्तति बुद्धिमान, गुणवान एवं पराक्रमी होंगे तथा अपनी बुद्धिमता से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता- पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में तत्पर होंगे। वे समस्त सांसारिक महत्व के कार्यो को माता पिता के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे पिता से ही करवालेंगे। वृद्धावस्था में वे माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा प्रारंभ से ही इस क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। आप भी यत्नपूर्वक उनकी शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था करेंगे तथा आधुनिक परिवेश प्रदान करेंगे। आपकी सन्तति व्यवहार कुशल एवं स्वभाव से मिलनसार प्रवृति के होंगे। अतः अन्य समाजिक जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपको अपनी सन्तति पर गर्व होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से कार्य क्षेत्र में आपको मजबूत विपक्ष का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रहें हो या अपने व्यवसाय के कार्य में किसी साझेदार का चुनाव कर रहें हो तो इससे साझेदार या जिसके लिए कार्य कर रहे है शत्रुता का भाव आरंभ हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक व्यक्ति है तथा यत्नपूर्वक शत्रुता के भाव की उपेक्षा करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु आपके कार्य कलापों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य जन प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे तथा इसी सन्दर्भ में कोई मुकद्दमेबाजी प्रारंभ हो सकती है। आप अपने धैर्य शान्ति तथा प्रतिभा से अपने शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही कभी भी शत्रुपक्ष की गतिविधियों से विचलित नहीं होंगे।

आपकी उचित सेवा करने के लिए आपके पास अच्छे नौकर होंगे लेकिन अधिक होने पर उनमें से कोई एक यदा कदा आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः सेवकों का चुनाव करते समय सावधान तथा सतर्क रहें। आपके संबन्धी कार्य क्षेत्र में आपके लिए हानि कारक रहेंगे तथा वास्तव में वे ही आपके मुख्य शत्रु होंगे अतः सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करें। आप सीमित एवं आवश्यकता के अनुसार ही व्यय करेंगे। अतः ऋण आदि की आवश्यकता के अवसर बहुत कम आएंगे लेकिन युवास्था में यदा कदा ऐसी स्थिति आएगी परन्तु उसको संभालने में आप समर्थ रहेंगे। आपके मामा मामियों के प्रति पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक या अन्य सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे। साथ ही मामियों का मामाओं पर प्रभाव रहेगा।

आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे यद्यपि आप मुकद्दमे बाजी की उपेक्षा करेंगे तथा कोर्ट से बाहर ही उसका समाधान चाहेंगे। यदि ऐसा नहीं होता तो तभी आप कोर्ट में जाएंगे। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं प्रभाव से शत्रु एवं विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करके अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया कुम्भराशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव कुल में श्रेष्ठ पित प्रकृति व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा वह पराक्रमी तेजस्वी एवं शिक्षित होता है एवं स्वाभिमान की भावना भी मन में विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की स्वाभिमानी महिला होंगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगी। कुम्भ राशि के प्रभाव से वह कुल में श्रेष्ठ होंगी तथा सेवकों से भी युक्त रहेंगी परन्तु उनकी प्रवृति अधिक व्ययशील होगी एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण किंचित लालिमा लिए गौरवर्ण होगा तथा कद ऊंचा होगा साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा एवं शरीर के सभी अंग प्रत्यंग सुडौल तथा पुष्ट रहेंगे लेकिन वायुतत्व कुम्भ राशि के प्रभाव से शरीर में पतलापन रहेगा। इससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा। सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वे सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला एवं भौतिक वस्तुओं के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में शनि की राशि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना रहेगी। आपका विवाह प्रेम विवाह होगा या स्वयं ही कन्या का चुनाव करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग का भाव विद्यमान होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु दोनों के स्वभाव में तेजस्विता के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी जिससे अल्प समय के लिए संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे मध्यम होंगे। सास ससुर से भी आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं होंगे एवं एक दूसरे के प्रति यथोचित सम्मान एवं स्नेह के भाव की न्यूनता रहेगी। अतः आपस में मेल मिलाप भी कम ही होगा।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनकी तेजस्वी प्रकृति से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान नहीं देंगे जिससे परिवार में अशांति रहेगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सामान्यतया साझेदारी अनुकूल होगी। लेकिन साझेदारी को सोच समझकर करना चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा ज्योतिष या तंत्र मंत्र का ज्ञान भी रहेगा। इस क्षेत्र में आपको इच्छित मान सम्मान एवं सफलता भी प्राप्त होगी तथा समय समय पर आप इससे लाभान्वित होते रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की अवश्य प्राप्ति होगी या किसी वृद्ध संबन्धी की जमीन जायदाद भी आपको मिल सकती है। आप सर्वप्रकार से खुशहाल रहेंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामी बनेंगे। साथ ही आपके एक से अधिक आवास स्थल हो सकते हैं। शादी से आपको लाभ होगा तथा आपकी पत्नी किसी धनाढ्य परिवार से सम्बन्धित होगी अथवा वे किसी कार्य क्षेत्र में रत हो सकती है। साथ ही आपके ससुराल वाले आपको अपेक्षा से अधिक धन एवं अन्य कीमती वस्तुएं प्रदान करेंगे ।

बीमा आदि करवाने से भी आपको समय समय पर लाभ हो सकता है लेकिन दीर्घावधि की अपेक्षा यदि आप लधुअवधि के बीमे करवाएं तो इसमें आपको शीघ्र एवं प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सम्बधित वस्तु या प्राणी की पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि के द्वारा कोई हानि नहीं है यद्यपि जीवन में एक बार चोर अवश्य आपके यहां आएंगे लेकिन वे कोई कीमती वस्तु को चुराने में असफल रहेंगे क्योंकि आप पूर्व ही सतर्क हो जाएंगे तथा बहुमूल्य वस्तुओं की विशेष सुरक्षा करेंगे। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगे तथा धार्मिक एवं पारिवारिक रीति रिवाजों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप प्रतिदिन भगवान का ध्यान अवश्य करेंगे परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी । क्योंकि आपके विचार से यह पद्धति कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बनाई गई है। धार्मिक कार्यों पर व्यय करने में भी आप अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगे जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि या योगादि के भी इच्छुक रहेंगे तथा तंत्र मंत्र में भी यदा कदा रूचि का प्रदर्शन करेंगे। तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि करने में भी आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। दूसरे शब्दों में आप भीड़ से तथा पूजा आदि संस्कारों से घबराहट की अनुभूति करते है। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा। साथ ही धार्मिक आध्यात्मिक, तंत्र मंत्र, ज्योतिष तथा इनसे सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन करने में रूचिशील रहेंगे।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति रहेगी तथा भविष्यवाणी आदि करने में भी आप समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा इससे समाज में आपको आदर तथा ख्याति प्राप्त होगी । यदि आप कहीं विकट परिस्थितियों में फंसेंगे तो भाग्य बल से इससे सुरक्षित हो जाएंगे। लम्बी दूरी की यात्राओं से आप लाभ तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करेंगे। पौत्रों से आपको खुशी एवं सुख प्राप्त होगा साथ ही समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपके पूर्वजन्म के पुण्य इस जन्म में आपको खुशहाली प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही स्वोच्चराशि में चन्द्रमा भी दशम भाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमि तत्व एवं चन्द्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होने के साथ साथ बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से भी युक्त होगा तथा आप समय समय पर इसमें वांछित परिवर्तन भी करते रहेंगे लेकिन इन परिवर्तनों से आपको इच्छित लाभ की भी प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जल से उत्पन्न पदार्थो यथा शंख, मोती, प्रवाल आदि के व्यापार से, मछली का व्यापार मिटटी के खिलौने, वालू, ईट आदि के कार्य से, इलैक्ट्रोनिक उपकरण, सफेद एवं आलंकारिक वस्त्रों का व्यापार, द्रव्य पदार्थो यथा दूध- धी-दही से वांछित लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही रेशमी कपड़ों के कार्य से भी इच्छित धनार्जन होगा। अतः इच्छित लाभ एवं उन्नति के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार प्रारंभ करना चाहिए। इससे आपके उन्नति एवं लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दशमभाव में उच्च राशि में चन्द्रमा के प्रभाव से आप जीवन में वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। साथ ही किसी उच्चपद को प्राप्त करने में भी समर्थ होंगे। अपने क्षेत्र में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में दूर दूर तक आपका यश व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी कोई महत्वपूर्ण पदाधिकारी मनोनीत होंगे इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में समाज में माने जाएंगे।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व से युक्त बुद्धिमान शिक्षित एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे। उनका स्वभाव शांत तथा गंभीर होगा तथा लोगों की भलाई के लिए कार्यो को करने में वे तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा तथा आपकी उन्नति एवं सफलता में वे पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही उनके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आप मान सम्मान भी अर्जित करेंगे। आप भी अपने उत्तम एवं बुद्धिमतापूर्ण कार्यो से उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही परस्पर सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता भी बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप उनकी आज्ञा का पालन करने में भी तत्पर होंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म के समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन हमेशा उमंगो से युक्त रहेगा तथा आपकी मानसिक इच्छाएं समय समय पर आपके परिश्रम तथा योग्यता से पूर्ण होती रहेंगी। आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर हमेशा अग्रसर रहेंगे। आप सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही लेखन कमीशन संवाददाता, ज्यौतिष तथा व्यापार से इच्छित धन लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं क्षेत्रों में आपको लाभ होगा। आपका बड़ी बहनों के प्रति पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। साथ ही भाइयों से भी नैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली के आप सम्मानीय सदस्य समझे जाएंगे तथा आपके सभी मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे। मित्रों के बीच में आपको नवीन आनन्द की प्राप्ति होगी तथा आपस में विषय विशेष के प्रति भी तर्क होंगे जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। साथ ही सामाजिक जनों के विषय में भी आप चिन्तित रहेंगे तथा उनके परोपकार संबन्धी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे एवं मानवता के आदर्श गुणों से भी युक्त रहेंगे। आप जिस क्षेत्र में रहते है वहां के लोगों तथा पड़ोसियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा सभी लोगों के मध्य आप की प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी। आपको समय समय पर विशेष सम्मान भी मिलते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगे तथा उनसे संबंध स्थापित करके आनन्द की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया भाग्यशाली होंगे तथा आर्थिक दृष्टि से आपके कई स्रोत होंगे जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आप किसी संस्था या सरकार में किसी उच्च पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा कम महत्वपूर्ण कार्यों को अपने सहायकों के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे वे अपने आपको आपसे उपेक्षित न समझें।

आपका व्यय अधिक मात्रा में रहेगा फलतः अवस्था के साथ साथ यदा कदा आर्थिक परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं आप एक स्वच्छंद प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगे तथा बिना अपनी स्थिति देखे हुए कई बार अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएंगे। इससे आपके मान सम्मान में वृद्धि तो अवश्य होगी लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः आपको इस आदत पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने मान सम्मान की रक्षा के लिए आप कभी कभी अनावश्यक व्यय करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इससे भी आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी अतः आपको ऐसे व्ययों पर अंकुश रखना चाहिए। युवावस्था में आपको कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखने पड़ेगें लेकिन व्यय आप जो भी तथा जहां भी करेंगे वह अच्छे कार्य के लिए ही होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी। साथ ही इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या विभागीय के कार्य से होंगी साथ ही विदेश भ्रमण के भी योग बनते है तथा काफी समय तक आपका प्रवास हो सकता है। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्रानुसार आपका गण मनुष्य, योनि सर्प, नाड़ी अन्त्य वर्ण वैश्य तथा वर्ग गरूड़ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ओ" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा ओमप्रकाश।

आप आस्तिक व्यक्ति होंगे तथा भगवान में आपकी पूर्ण आस्था होगी। धर्म के कार्यों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। तथा धर्म सम्बन्धी कार्यों की आपको पूर्ण जानकारी होगी। आपका स्वरूप दर्शनीय तथा स्वभाव सरल एवं सुन्दर होगा। बोलने में आप अत्यन्त चतुर होंगे। किसी भी बात का तत्काल उचित प्रत्युत्तर आप चतुरता से देंगे। आप बुद्धिमान होंगे तथा गूढ़ से गूढ़ विषय को भी स्पष्ट रूप से दूसरे लोगों को समझाने की कला में होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारूशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे। इसका अभाव नहीं रहेगा। कृतज्ञता के गुण से आप सुशोभित रहेंगे। यदि कोई व्यक्ति आपका कोई कार्य करेगा तो आप हृदय से उसका आभार प्रदर्शन करेंगे। राज्यमंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको सम्मान एवं आदर प्राप्त होगा। आप प्रिय वाणी बोलेंगे जो सबको अच्छी लगेगी। आप आजीवन सत्य का पालन करेंगे तथा सत्य ही बोलेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

शरीर आपका सामान्य रूप से नीरोग रहेगा। उत्साह से आप हमेशा पूर्ण रहेंगे तथा जो भी कार्य करेंगे उसे सोत्साह सम्पन्न करेंगे। आपका आचरण उत्तम होगा तथा किसी को भी आपके आचरण से कोई शिकायत या परेशानी नहीं होगी।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

पवित्रता या शुद्धता का आप हमेशा पालन करेंगे। चाहे वह शारीरिक हो चाहे आत्मिक आपका यह सिद्धान्त होगा कि शरीर को जितना साफ रखना चाहिए उतना ही शुद्ध एवं पवित्र आत्मा को भी होना चाहिए। इसके लिए आप आजीवन प्रयत्न शील रहेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी। अतः जो भी कार्य करेंगे चंचलता से नहीं अपितु एकाग्रता से सम्पन्न करेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

शारीरिक रूप से आप प्रायः स्वस्थ ही रहेंगे। साथ ही अन्य जनों को जानने वाले तथा ज्ञानी भी होंगे।

रोहिण्यां परऱन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है। अतः आप लालिमायुक्त गौरवर्ण तथा स्थूल गालों से युक्त होंगे। आपके नेत्र बड़े तथा मोटे होंगे। स्वाभाविक रूप से आलस्य का समावेश

भी आपके अन्दर रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। उनकी प्रत्येक बात को शिरोधार्य करना आप अपना परमपुनीत कर्तव्य समझेंगे। आप अच्छी बुद्धि से युक्त तथा वात कफ के स्वामी होंगे। आपके बाल घुँघराले तथा प्रकृति दानशीलता की रहेगी। आपका जीवन प्रायः सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरुजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन में सर्व प्रकार के सुखों का उपयोग करेंगे। दानशीलता की प्रवृति प्रारम्भ से ही आपके स्वभाव में होगी। शुद्धता तथा सफाई का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा समस्त कार्यों को सिद्ध करने में समर्थवान होंगे। बल का भी आप में अभाव नहीं रहेगा। धनागम प्रचुरमात्रा में होने से आपकी प्रवृति विलासमय हो जाएगी। सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। आपके अन्दर तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आप अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा आपकी मित्रता स्थिर रहेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपकी मुखाकृति तथा जानु भाग दीर्घाकार होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण तथा अन्तिम दो भाग सुखपूर्ण व्यतीत होंगे। समाज के सभी वर्गों से आपका विशेष लगाव रहेगा। क्षमाशीलता तथा त्याग की भावना से आप युक्त रहेंगे। प्रारम्भिक या बचपन की अवस्था में आपको कष्ट सहने पड़ेंगे तथा कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। आपकी पीठ, मुख या बगल में तिल, मस्सा लहसन या घाव का निशान हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी कन्या सन्तति पुत्रों से अधिक होंगी तथा आचरण एवं व्यवहार प्रशंसनीय रहेगा। आप आजीवन धन का उपयोग करेंगे तथा यश भी आपका चारों तरफ फैलेगा।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल तथा घने काले घुँघराले बालों से युक्त रहेंगे। सैक्स के प्रति

आपका आकर्षण अधिक मात्रा में रहेगा। आपकी बुद्धि न्याय प्रिय होगी तथा गलत सही का निर्णय करने में सक्षम रहेंगे। आपकी चाल देखने योग्य होगी तथा शरीर के सारे अंग दीर्घ, सुडौल एवं पुष्ट होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगे। परोपकार की भावना आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा इसके पालन करने का आप आजीवन प्रयत्न करते रहेंगे। इस तरह अच्छे तथा पुण्य कार्य आप हमेशा करते रहेंगे तथा इन्ही कार्यों से सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमण्डल की आकृति थोडी बडी होगी तथा आप विलास सहित गमनप्रिय होंगे। आप कष्टों को सहन करने में समर्थ होंगे तथा उच्चाधिकारों से भी सम्पन्न हो सकते हैं। धन एवं ऐश्वर्य से आजीवन समृद्ध रहेंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की प्रबलता रहेगी तथा स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही आप सुस्वभाव से युक्त तथा विष्णु एवं शिव की पूजा करने वाले भी होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति से युक्त होंगे। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी असीम श्रद्धा होगी तथा नियमपूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। अभिमान का अस्तित्व भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। धन का आपके लिए प्रचुर मात्रा में अर्जन होता रहेगा। इसका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आपके हृदय में दया तथा करूणां का भाव जागृत रहेगा जिसके कारण आप यत्न पूर्वक दीन दुखियों की सेवा करते रहेंगे। आप एक से अधिक कार्यों के जानने वाले या कलाओं में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा शरीर कान्ति युक्त होगा। आप बहुत से लोगों को सुख पहुँचाने वाले होंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा जीवन पर्यन्त अपार धन के स्वामी बने रहेंगे। आप एक अच्छे निशानेबाज भी बन सकते हैं। शरीर आपका गौरवर्ण का होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने में सफल रहेंगे। साथ ही नेत्र भी आपके बड़े-बड़े होंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सर्प योनि में उत्पन्न होने के कारण कभी-कभी आपको अत्यधिक मात्रा में क्रोध आएगा। साथ ही प्रचण्डता का भाव भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगा जिससे आपको सहानुभूति या लगाव नहीं होगा उसके साथ बहुत ही कठोर व्यवहार करेंगे। साथ ही आप किसी दूसरे के द्वारा किए गए उपकार को अल्प ही स्वीकार करेंगे। प्रकृति आपकी चंचल होगी तथा जिह्वा भी आपकी स्वाद लोलुप रहेगी खट्टे, मीठे, तीखे स्वाद आपको अत्यधिक प्रिय होंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक

स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि स्थित चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायी हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य 5,10,15 तथा अमावस्या तिथियों में हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन, क्रय विक्रय आदि न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें अन्यथा अशुभ फल ही होंगे। साथ ही इन दिनों शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न चल रहा हो शारीरिक या मानसिक व्याकुलता बढ़ रही हो, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में वाधा तथा अन्य शुभ कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको नियमित रूप से शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। साथ ही आपको श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, शहद, श्वेत पुष्प इत्यादि पदार्थों का भी दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप स्वयं या किसी योग्य विद्वान से करवाने चाहिए। श्रद्धानुसार आप भगवान शिव या विष्णु की भी आराधना या पूजा कर सकते हैं। ऐसा करने से आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे तथा अशुभ फलों का नाश होगा।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधू बनना चाहो तो साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगे। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद रहेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगे। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिलेगा या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधवा स्त्री से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाले होंगे। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों, लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगे। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधवा स्त्री से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगे। आपको चीर-फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करें। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करते हैं तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता-पिता का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और अपने पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी

कार्य किये, बड़े-बुजुर्गो का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी प्रेमिका या विधवा स्त्रियों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाजी और तैरते को पानी में डुबाने वाले होंगे। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी औरत के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर-डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है। आपकी माता को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :

1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दयालु, रक्षक, भाई और मित्रों के पालनहार, आप दूसरों की जरूरत हमेशा पूरी करेंगे। आप किसी संस्था के प्रधान भी हो सकते हैं। आप बहुत लोगों को सहारा देने वाले होंगे। आप दूसरों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे। आपको ससुराल से सहायता मिलेगी। आप छोटे भाई से पुत्र जैसा प्यार करेंगे और उसे सहायता देंगे। छोटे भाई की सहायता से आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सहायता करते रहेंगे। इस वजह से आप भी भरपूर रहेंगे। आपको दूसरों की भलाई के लिए धन-संपत्ति मिलती रहेगी। आप दूसरों के लिए लंगर लगाएंगे। आप नेक और पक्के इरादे के हैं। आप परिश्रम से धनी होंगे। आपको खुराक, पोशाक तथा अन्य जीवन के सुख प्राप्त होंगे। जरूरत पड़ने पर खुद ब खुद पैसे मिल जाएंगे। आपको भगवान की कृपा से बहुत धन मिलेगा। आप अधिकारी बन कर हुकूमत करेंगे। आप तीर्थ यात्रा करने से शुभ फल को प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी दौलत में बढ़ोत्तरी होगी। ससुराल पक्ष से सुखी रहेंगे।

यदि आपने दूसरों के धन-स्त्री पर बुरी नजर रखी, बुरी आदतों के शिकार हुए या छल-कपट करके भाई-बंधुओं, मित्रों के साथ ठगी की तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से अगर विद्या में रुकावट, जरूरत पड़ने पर आपको धन मिलता रहेगा। नौकरी-व्यापार में बार-बार हानि हो सकती है। 28 वर्ष से पहले बड़े भाई को शरीर कष्ट संतान की चिंता, धन हानि होगी। यदि आपका बड़ा भाई है तो उसका सुख आपको नहीं मिलेगा या वह आपसे हालत में कमजोर होगा या आप और

आपका भाई निःसंतान भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लड़ाई-झगड़े से दूर रहें।
2. मेहमानों की सेवा से मुंह न फेरें।

उपाय :
1. बच्चों को दोपहर के समय गुड़-गेहूं बांटें।
2. नाश्ते में मीठा भोजन करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे-लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :
1. स्टैनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दीर्घायु, धनवान रहेंगे। आपकी और आपके पिता की लंबी आयु होगी। आप चरित्रवान, शील स्वभाव से अच्छे, विवेकी एवं पूरे परिवार की विपत्ति को अपने सिर पर लेने वाले होंगे। धन और आयु वृद्धि होती रहेगी। अधिक कठिनाई में ईश्वर आपकी मदद करेंगे। आप आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्या के माहिर होंगे।

यदि आपने दूसरे के धन का उपभोग किया, भलाई करने वाले का बुरा किया, दीन-दुःखियों को सताया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपको अपने पिता से हमेशा दूर रहना पड़ सकता है। आप पिता से अलग रहे तो आपका समय खराब होगा। आप अफवाहों के शिकार बनेंगे। आप यदि साधू हो जाएं तो दुःखी रहेंगे। आपके परिवार में कई प्रकार की मुसीबतें पैदा हो सकती हैं। कभी-कभी आपके हौसले मंदे पड़ जाएंगे। आपको मूत्र रोग आदि बीमारी या मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बार-बार जन्म लेना पड़ सकता है। मोक्ष मिलने की उम्मीद कम है। आपके कामों में अड़चनें आएंगी। आपके शरीर में सुस्ती रहेगी या हर समय मन बुझा-बुझा सा रहेगा। कोई दुर्घटना या बड़ी मुसीबत का योग बन सकता है। आप अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य कर बैठेंगे जिससे आपको बहुत पछतावा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आवारा साधू का साथ न रखें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. शरीर पर सोना पहनें।
2. दही, आलू, घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली-भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें वैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल-चलन शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :

1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के छठे खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपको 28 वर्ष की उम्र में या 28 वर्ष की आयु के बाद विवाह लाभदायक होगा अन्यथा मां, पत्नी, संतान पर मंदा असर रहेगा। आप खेल में रुचि रखने वाले या प्रसिद्ध खिलाड़ी भी हो सकते हैं। आपकी पत्नी सुखी रहेगी। आपकी उम्र के 34 से 41 वर्ष के बीच कोई संतान पैदा हो तो आपके जीवन और घर का कायाकल्प हो सकता है। आपको यात्रा से लाभ मिलेगा। आपका चरित्र उत्तम होगा। आपका परिवार सुखी रहेगा। धन-लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहेगी। आप गुप्त कार्य करने के आदी हो सकते हैं। संतान आपके भाग्य के लिए बड़ी ही शुभ और अनुकूल होगी।

यदि आपका घर बंद गली में हुआ, धर्म मंदिर से जूता बदला, पूर्णिमा को नया काम शुरु किया, चमड़े-लोहे का सामान मुफ्त लिया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपका छोटा भाई आप से शत्रुता करे, ऐसी शंका है। परंतु अंत में वह दुश्मनी को भुला कर दोस्त बन जाएगा। शराब-मांस, अंडे का भोजन करने से हानि होने की आशंका है। आप लड़ाई-झगड़े से परेशानी में पड़ सकते हैं। आपके ताऊ, बड़े भाई या मामा को नेत्र रोग या आंखों की हानि हो सकती है। आपकी पत्नी और माता को कोई कष्ट होने की आशंका है। शराब-कबाब और औरतों के चक्कर में मुकद्दमा/पुलिस या साहूकारी अड़चने आ सकती हैं। आपको गुर्दे या पथरी के रोग का भी भय है। आपकी मृत्यु दुर्घटना से हो सकती है। आपकी नौकरी व्यापार में अचानक बाधाएं आ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :
1. धर्म स्थान से जूता चोरी न हो इसका विघेष ध्यान रखें।
2. लोहे का नया सामान न खरीदें।

उपाय :
1. काले कुत्ते की सेवा करें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका बचपन खुशहाली से बीतेगा। आपको उच्च शैक्षणिक संस्थान में विद्याध्ययन का मौका मिलेगा। आपको पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप बिना माता-पिता के सहयोग के भी आगे बढ़तें रहेंगे। आप ताकतवर और न्यायप्रिय होंगे। आप अपनी कमाई पर ही जीवन बसर करेंगे। माता-पिता से मधुर संबंध में कटुता की संभावना है। विदेशी यात्रा या कार्यों द्वारा धन भी प्राप्त होगा। दूसरो पर भरोसा रखने से विश्वासघात होगा ऐसी शंका है।

यदि आपने बंदूक-पिस्तौल रखी, नीलम या नीला नग पहना, बिजली का खराब सामान या बिजली की तारें घर में पड़ी होगी, दराज या कैश बॉक्स खाली रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके पिता को कष्ट होने की आशंका है। आपकी साढ़े दस-21-42 वर्ष आयु में पिता की मृत्यु होगी। पिता की मृत्यु गोली, जहर, ब्रेन हैमरेज से संभाव्य है। पिता की मौत के बाद बहुत क्षति होगी। आप ऐय्याश लोगों की संगति में रहेंगे, ऐसी आशंका है। अनुचित ढंग से धन कमाएंगे। आपकी परेशानी धातु संबंधी रोगों से बढ़ सकती है। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपकी जवानी गरीबी में कटेगी। पिता और दादा से नहीं पटेगी। आपके जन्म के पश्चात् आपके पिता की आर्थिक दशा तंग होने की संभावना है। आप काम में दक्ष होंगे और धूर्त लोग आपके साथ होंगे। फिजूल के झगड़े-फसाद होने की आशंका है। धन की हानि भी होती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. नीलम या नीला नग न पहनें।
2. घर में बंदूक/पिस्तौल न रखें।
3. बिजली का सामान ठीक रखें।

उपाय :
1. सिर पर चोटी रखें या सिर ढांप कर रखें।
2. 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाइप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पांचवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति होगी। आपको विलक्षण अतिद्रिय शक्ति प्राप्त होगी। आप गुरु भक्त रहेंगे। 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन में 34 वर्ष आयु में पुत्र द्वारा, उसके पश्चात पौत्र द्वारा सुख प्राप्त होगा। 48 वर्ष की उम्र तक माता का सुख मिलेगा। पत्नी के साथ अच्छा संबंध रहेगा। आपके धर्म-ईमान के अनुसार ही आपकी संतान होगी। आप अपना चाल-चलन ठीक रख कर सुखी रह सकते हैं। आपकी आर्थिक हालत ठीक रहेगी। इच्छित संख्या के अनुसार संतान होगी। पुत्र संतान उत्पत्ति के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आप धर्माचरण करते रहें तो जीवन के अशुभ फल दूर हो जाएंगे।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया, किसी के पुत्र को या अपने पुत्र को कष्ट दिया कुत्ते को मारा या मरवाया या कुत्ता आपके वाहन से टकरा कर मर गया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 45 वर्ष तक आयु का समय बेकार रहेगा। पुत्र से कोई खास सुख प्राप्त नहीं होगा। संतान को कष्ट रहेगा। आपको श्वास संबंधी या दमे के रोग की आशंका है। 48 वर्ष की आयु का समय भी ठीक नहीं रहेगा। सुख में कमी और बाधा उत्पन्न हो सकती है। आयु बढ़ने के साथ आप बुरे लोगों की संगति में रहेंगे। गुप्त रोग का भय, संतान को दमा रोग रहने की संभावना रहेगी। आपका पुत्र आपकी माता के लिए अशुभ रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दुश्चरित्र लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक में ताला लगाकर बंद न रखें। उन्हें कभी-कभी खोलते रहें।

उपाय :

1. गुरु-पिता दादा की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि अष्टम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि सप्तम भाव में प्रवेश करेगी। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुदशम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि एकादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि द्वादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि एकादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला जुला परिणाम देने वाला रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए नई योजना भी बनाएंगे जिससे व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी तथा इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

29 मार्च के बाद अष्टम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके कार्यों में कुछ रूकावटें आ सकती हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी संभाल लेंगे। गुरुग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। एकादश स्थान के गुरुआय बढ़ा सकते है। आपको बड़े लोगों या वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न एवं आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा परन्तु आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

मई के बाद एकादश स्थान में गुरुके गोचरीय प्रभाव से रूका हुआ धन मिल सकता है, साथ ही आपके धनागम में भी वृद्धि होगी, जिससे आप उचित बचत करने में सफल रहेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद प्रेम प्रसंग में सफलता प्राप्त होगी। तृतीय स्थान में गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अत्यधिक परिश्रमी होंगे एवं अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य ही रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से मौसम जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। मानसिक चिंता जैसी छोटी मोटी परेशानियां होती रहेंगी।

14 मई के बाद गुरुग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहें। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आप का स्वास्थ्य पूर्ण रूप से अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता मिल सकती है।

मई के बाद पंचम स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्षारम्भ में आप जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। मई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। यात्रा के अंतराल में या वाहनादि चलते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे, परन्तु मई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढेगा। आप भगवान की पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि अच्छे कार्य संपन्न करेंगे।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार हनुमान जी को चोला चढाएं एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य अर्जित करेंगे। साथ ही पुत्र संतति से आपको इस मास में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफल भी रहेंगे।आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस समय आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग भी प्राप्त होगा साथ ही समाज में भी आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से आवश्यक सहयोग अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुखार्जन में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगे तथा समाज में आदरणीय समझे जाएंगे।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रु भी आपसे बलवान रहेंगे एवं आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित किया जा सकता है। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में भी आपके आदर में न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्रों से आपका इस समय मन मुटाव रहेगा तथा मानसिक इच्छाएं अपूर्ण ही रहेंगी। अतः तनाव से बचने के लिए संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित कर सकेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु प क्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा चिन्तित भी रहेंगे।साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे।साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे।धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते है।साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। आपके घर में इस मास में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। सन्तति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। समाज में सर्वत्र इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा भाग्योन्नति संबधी शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे।आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी इस मास में योग बनेगा ।साथ ही सरकारी तंत्र से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा अन्य कारणों से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी।अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करें।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।साथ ही बन्धु तथा मित्र वर्ग से मधुर तथा घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे।अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक फैलेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में स्त्री तथा पुत्र से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या वस्तुओं को अर्जित कर सकते है। इस प्रकार आप आनन्द पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय स्त्री पक्ष से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके सौभाग्य

में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध हो जाएंगे इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे इस मास में आप इच्छित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपको रूके कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ समय समय पर अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप ठंड या वात से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा इस समय आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगे जिससे आप आर्थिक दृष्टि से परेशान होंगे।साथ ही आप दुष्ट मनुष्यों की संगति में भी रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अधिक परिश्रम के द्वारा अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में उपेक्षा का भाव रहेगा।संबधियों तथा मित्रों से भी आपके मधुर सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा इनसे परस्पर मनमुटाव रहेगा। इस समय आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी फलतः मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरक्त शत्रु वर्ग से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप शीत से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी तथा बाद में आप पश्चाताप करेंगे। साथ ही आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः संयम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आयस्त्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी

आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे तथापि अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा तथा उनमें आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध हो जाएंगे। मिष्ठान्न के प्रति इस समय आपके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु आपसे इस समय निर्बल रहेंगे तथा उन्हें पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अतिरिक्त साधनों से धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभफल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोग से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस समय पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करना चाहिए।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा अन्य लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे।साथ ही आप धन एवं सुखोपभोग की सामग्री अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में

सफल रहेंगे। इस समय बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यो में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीड़ित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यो को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरु हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपका प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा। इस समय आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी तथा सभी महत्पूर्ण कार्य बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। साथ ही आपको पुत्र सुख तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी होगा। इस समय आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग इसे मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही आप अनेक प्रकार के शुभ कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं शुभ समाचार भी प्राप्त होंगे। देवता तथा ब्राहमण के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा आप विधिपूर्वक इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनकूल लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आपको समाज में मान प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी एवं मानसिक चिन्ताएं भी दूर होंगी।

साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा पदोन्नति भी मिल सकती है। इस समय आप देश विदेश की लाभदायक यात्रा भी कर सकते हैं।साथ ही अन्य प्रकार के सुखों को अर्जित करने में भी आप सफल रहंगे।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ तथा दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी उत्पन्न होंगे जिससे अनावश्यक चिन्ताएं तथा समस्याएं बढ़ेंगी। इस समय चोरों से भी सावधान रहना चाहिए तथा अपने उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें अन्यथा आप दंडित हो सकते हैं। इस मास में आपको सांसारिक कार्यों में भी असफलता मिलेगी तथा धन भी अनावश्यक रूप से व्यय होगा। इसके साथ ही आप किसी गलत कार्य को करने के लिए भी प्रेरित होंगे तथा ऐसे कार्यों को करके आप बाद में पश्चाताप करेंगे। अपने सम्बन्धियों से भी आपकी अनबन हो सकती है तथा मान हानि का भी योग बनता है एवं आशाओं में भी असफलता प्राप्त होगी।

परन्तु उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री से सुखी , बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि तथा अन्य प्रकार के सुख प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा तथा किसी धार्मिक कार्य को भी सम्पन्न करेंगे।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु की तरफ से भी चिन्ता बनी रहेगी। आप में इस समय उत्साह की न्यूनता भी परिलक्षित होगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। आप शरीर से भी अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे तथा मन में लालच के भाव की भी प्रधानता होगी।

साथ ही आप अपने शरीर का पूर्ण ध्यान नहीं रखेंगे। अपने बन्धुजनों से आपके सम्बन्धों में तनाव भी उत्पन्न होगा एवं मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे जिससे मानसिक तनाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी संघर्ष होने का भय बना रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी समय समय पर घटित होंगे।अतः आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं बुद्धिमत्ता से अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मानुपालन में भी आप रूचिशील रहेंगे। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस समय आपको शत्रुओं से भय एवं चिन्ता बनी रहेगी साथ ही घर में चोरी होने की भी सम्भावना रहेगी। इस समय आपका अनावश्यक रूप से व्यय होगा एवं धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में न्यूनता आएगी। शारीरिक रूप से भी आप विभिन्न प्रकार से कष्टानुभूति करेंगे परिणामतः आपके बल में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप घर से दूर किसी यात्रा को सम्पन्न कर सकते हैं। सांसारिक कार्यो में भी इस समय आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी आपका धन व्यय हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी के कारण बुखार आदि से भी कष्टानुभूति करेंगे। इस समय किसी प्रकार से रक्त विकार की भी सम्भावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का आपको पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेगा। आपके घर में इस समय कोई धार्मिक उत्सव या कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। सन्तति से आप सन्तुष्ट रहेंगे एवं उनसे आपको सुख की प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं अवसरानुसार आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे।समाज में यशार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा भाग्योदय सम्बन्धी कार्यों में भी उन्नति होगी। आपकी बुद्धि में भी इस समय वृद्धि होगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आप मान सम्मान अर्जित करेंगे एवं मित्रों से मधुर संबन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वत्र मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे।

साथ ही आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सन्तुष्टि भी प्राप्त करेंगे। इस मास में आप नवीन वस्त्रों तथा अन्य द्रव्यों को भी अर्जित करेंगे।अतः इससे आपको मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे तथा आपके

उच्चाधिकारी आपसे पूर्णरूपेण प्रसन्न रहेंगे। अपने मित्रों एवं बन्धुजनों की आप पूर्ण सहायता करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ कार्य भी सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं पूजा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही कई प्रकार से धन लाभ भी अर्जित करेंगे। इस समय आप स्थान या नवीन आवास आदि की भी प्राप्ति कर सकते हैं। इसके साथ ही सर्व प्रकार से शुभ फल होंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक आप इस मास को व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिस्त पिछले महीने की असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे।जिससे आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं तथा किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे प्रतिष्ठा में न्यूनता हो सकती है। इस समय अग्नि के द्वारा भी किंचित धन हानि होने की सम्भावना रहेगी।अतः सावधानी पूर्वक समय को व्यतीत करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभ फलों की अधिक मात्रा में प्राप्ति होगी। स्त्री वर्ग से आप लाभार्जन करेंगे तथा सौभाग्य से युक्त रहेंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से धन लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा हृदय से भी पूर्ण प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी उन्नति करेंगे। इस समय मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा तथा वांछित पदार्थो का आप उपभोग करके प्रसन्न रहेंगे। संतति पक्ष से भी आप शुभ फल ही प्राप्त करेंगे एवं सम्बन्धियों में आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे। इस प्रकार यह मास आपका सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदा कदा अशुभ फल भी होंगे।जिसके प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त कर सकते हैं एवं किसी कठोर कार्य को करने से सम्मान में अल्पता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अग्नि के द्वारा धन हानि की भी संभावना रहेगी।अतः बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपको शुभाशुभ फल प्राप्त होंगे। इसके प्रभाव से आपका इस समय व्यय अधिक होगा एवं दुष्ट मनुष्यों की आपको संगति प्राप्त होगी। सामान्य रूप से आप शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही अत्यंत परिश्रम एवं पराक्रम से भी अल्प मात्रा में ही कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में उपेक्षा की भावना उत्पन्न होगी तथा अन्य प्रकार से धन हानि भी हो सकती है। साथ ही मित्रों एवं संबन्धियों से सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस समय आपकी नौकरी या व्यापार में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी तथा शत्रुओं से भय एवं चिन्ता नित्य बनी रहेगी। साथ ही जिस कार्य को भी प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी

तथा यदाकदा आप मन में बैचेनी भी अनुभव करेंगे।

साथ ही अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे ।अतः आप पुत्र एवं स्त्री का सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा पराक्रम में भी वृद्धि होगी जिससे शत्रु वर्ग आपसे भयभीत रहेगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आपकी आय होती रहेगी जिससे आर्थिक रूप से पूर्ण रूपेण सुदृढ़ रहेंगे। इसके शुभ प्रभाव से आप समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा भाग्य में भी उन्नति होगी एवं कोई विलम्ब हुआ शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य भी सम्पन्न हो सकेगा। इसके, अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त होगी एवं सम्पूर्ण वातावरण प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

साथ ही इस मास में न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इससे आप गर्मी से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रूधिर सम्बधी विकार भी हो सकता है। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए। साथ ही आग के द्वारा भी किसी प्रकार की हानि की सम्भावना हो सकती है। अतः सतर्क रहें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने ही उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा समाज से आपको पूर्ण यश तथा मान प्राप्त होगा।साथ ही अपने समस्त बन्धुओं तथा मित्रों से आप पूर्ण प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। इस समय उच्चाधिकरी वर्ग से भी आपको आश्रय मिलेगा तथा मिष्ठान्न का अधिक मात्रा में उपभोग करने में रूचिशील रहेंगे।आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं बल की उसमें वृद्धि होगी। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास सुखोपभोग में व्यतीत करेंगे। साथ ही आपके शत्रु भी आपसे पराजित होगे एवं स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापार मेंभी आप लाभ अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री वर्ग से पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे एवं बुद्धि में निर्मलता का भी समावेश होगा। इसके अतिरिक्त आप प्रचुर मात्रा में धनलाभ अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक धर्मानुपालन करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे।साथ ही समाज में आपका यश भी व्याप्त होगा।धर्म के प्रति आपके मन में आस्था होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा रखेंगे तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी

पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय परोपकार की भावना भी आपके मन में उत्पन्न होगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग के आश्रय से आप पूर्ण यशार्जन करेंगे एवं आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। साथ ही भाइयों से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने मानसिक विचारों या संकल्पों को पूर्ण करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी आपको वांछित सहयोग प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी निर्मल होगी एवं सम्पूर्ण मास आप उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष शुभ नहीं रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से वे विभिन्न प्रकार से आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगें। पारिवारिक जनों से भी इस समय अनावश्यक रूप से अनबन रहेगी जिससे पारिवारिक वातावरण अशान्त रहेगा। साथ ही मानसिक रूप से भी आप यदाकदा अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास आपके कार्य में मंदी आ सकती है या आपका कोई कार्य छूट सकता है। आपके अन्य समाजिक जनों से विवाद भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी तथा धनहानि की भी सम्भावना होगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में उपरोक्त अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी होंगे। इससे शरीर में स्वस्थता,मन में सन्तोष एवं बुद्धि की वृद्धि होगी जिससे यह मास सामान्य रूप से व्यतीत होगा। साथ ही धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नही तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानिया तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। 18 फरवरी से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

9 अगस्त से व्यावसायिक स्तर पर समय आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए पुरुस्कृत भी किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। 18 फरवरी के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

9 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। यह समय आपके लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। यदि अनापेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिएगा मत। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। दशमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी अवसर आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भघरेलू वातावरण के लिए अनुकूल है। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है अतः परिवार से जुड़े हर

मामलों में आपको सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ है।

9 मई से घरेलू वातावरण के लिए समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान होगा क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। 15 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा किन्तु आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं रहेंगी। 18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। यह समय आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की लिहाज से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक क्लेश के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आपके जीवन में इस साल खुशी के पल भी आएंगे। स्वस्थ्य रहने के लिए आपको चाहिए कि आप योग और ध्यान का सहारा लें। प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे।

15 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी और आप पूर्णरूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष अनुकूल बना रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत बढ़िया है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

15 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती

रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के शुरु में आपके धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 18 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढेगी। 14 जूल के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा कर पुण्यरर्जन भी करेंगे।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन दीपक जलाएं और महालक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं दशम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुपंचम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भश्रेष्ठतम रहेगा। बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे।

23 अक्तूबर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से अपना विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। गुरु के गोचर के बाद क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहें। खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

12 अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलने की सम्भावना है। लॉटरी, शेयर इत्यादि से भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। कर्जे से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि से घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में वैचारिक मतभेद से आप मानसिक अशान्ति महसूस सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 5 मार्च के बाद परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफीअनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मेंबच्चों का प्रवेश हो जाएगा।

5 मार्च से गुरु का गोचरप्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकीशिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। बच्चोंके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपको छोटी-मोटी बीमारियां हो सकती हैं। मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को उत्तमबनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यवसायी इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें सफलता भी होंगे।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 5 मार्च से समय आपके लिए काफीशुभ हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के कारण वर्षारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राओं के भी प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

गुरु के गोचर के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। यात्रा के दौरान किसी से बहुत अच्छी मित्रता होगी। 12 अगस्त के बाद धार्मिकयात्रा का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक धार्मिक कार्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना, तीर्थ स्थलों की यात्रा इत्यादि करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय अति उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। अष्टम स्थान के केतु आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। अपने कार्य व्यवसाय में रिश्तेदारों के साथ साझेदारी न करें। नहीं तो उनके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण बीमारी दूर करने में संचित धन का व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह का गोचर अशुभ होने से धनागम में रुकावट व आर्थिक तंगी का योग बना हुआ है। परन्तु 18 मार्च के बाद अचानक व्यापारिक उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी व तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ें या विवाद में न उलझें और अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय धर्म पत्नी के

साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। प्रेम संबंध बहुत ही मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस समय के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लपरवाही न करें। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी ग्रस्त होंगे। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। यदि पहले आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित करने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष की शुरुआत करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगी। परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको 18 मार्च के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

शिक्षार्थी इस समय योग्यता के अनुसार सफलता पाने में सफल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बड़ी कोई अड़चन नहीं आयेगी। अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि रहेगी। विदेशी भाषा सीखने की ओर आकर्षित होंगे। आपका उत्साह व साहस बना रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 18 मार्च से आप अपनी पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्राओं से आपको लाभ होगा।

वर्षान्त में नौकरी करने वाले व्यक्तियों के स्थानान्तरण के योग बन रहे हैं। परन्तु यह बदलाव आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 18 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो आपके लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगो को अच्छा लाभ मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

जुलाई के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी प्रकार का जोखिम मोल न लें नहीं तो व्यापार में हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम भाग आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। एकादशस्थ शनि के कारण आर्थिक स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है, परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक कुछ व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वर्ष का पूर्वार्द्ध सम्पन्नता से गुजरेगा।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। धोखा या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध सामान्य रहने वाला है। द्वितीय स्थान का राहु प्रतिकूल होने के कारण आपको घरेलू मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर

झगड़ा या विवाद में नही पड़ना चाहिए। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए आपको अपने जीवन साथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। एकादशस्थ शनि के कारण बड़े भाइ-बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मदभेद होने की संभावना बन रही है। पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है परन्तु माता के लिए शुभ है। आपका एवं आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने सेघरेलू माहौल ठीक नहीं सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण यह समय आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। दूसरे संतान के लिए भी यह वर्ष ज्यादा अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़िया रहेगा। आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान का शनि धीरे-धीरे आपकी शारीरिक ऊर्जा कम कर सकता है, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। अतः राहु ग्रह की शान्ति स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

यदि आप नौकरी करते हैं तो साल का उत्तरार्द्ध कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। लोग आपके विरूद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाये जा सकते हैं,

जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है और आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का पूर्वार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। मार्च के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश के शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा और नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वादश भाव में और सिंह राशि का राहु लग्न स्थान में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें वरना कानूनी वाद-विवाद में फंस सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं, सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उस में आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से अनुभवी लोगों का सफलता मिलेगी। जो लोग शेयर बाजार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा बहुत लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। यदि वह आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। अप्रैल के बाद आपके छोटे भाई बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। आपके माता पिता

जी के लिए यह समय काफी शुभ है। परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़ी सावधानी से से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। 6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रहेगी।

अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या में भी सुधार करना होगा। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नम्बर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजसता की स्थिति बनी रहेगी। विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको अत्यधिक परिश्रक करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। अष्टम स्थान का गुरु प्राचीन दर्शनीय स्थलों या सामुद्रिक स्थलों की यात्रा करा सकता है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगे।

नवमस्थ गुरु के कारण आप धार्मिक यात्रा भी अधिक करेंगें। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके समस्त धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को खाना खिलाने या उनकी सहायता करने में आपको संतुष्टि मिलेगी।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान करें जिसके प्रभाव से शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। जिससे राहु ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु नवम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं। आपके कार्यों में अचानक हानि या कोई बड़ी समस्या आ सकती है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु नवमस्थ गुरु के कारण आपका भाग्य साथ देगा और आप सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे।

अप्रैल के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। व्यापार में किसी पर अवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें नही तो हानि हो सकती है। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह तबादला आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वादश स्थान का शनि अनावश्यक खर्च भी बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चे पर अंकुश लगाएं।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तता के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए आप

अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकास करें। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय काफी अनुकूल हो जाएगा। आपको परिवार के बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। उनके साथ आपके संबंध भी खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। उनके उन्नति के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रही है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश मिल सकता है।

अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। 27 अगस्त के बाद शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। इस यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके घर के पास हो सकता है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी, जिससे परमात्मा के प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं व हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- दुर्गा बीसा व आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बना रहा है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अप्रैल के बाद गुरु का गोचर किंचित शुभ हो रहा है। अतः व्यापार व नौकरी में कुछ सुधार होगा। शेयर बजार से जुड़े जोगो को लाभ मिलेगा। क्रय विक्रय, व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियो को सावधान रहना चाहिए नही तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे।

16 सितम्बर से आप का समय प्रभावित हो रहा है। मुख्यतः ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बन रहा है। इस समय आपको खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर

शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी ख्याति समाज में और बढ़ेगी।

16 सितम्बर से आपका पारिवारिक माहौल प्रभावित हो सकता है। अचानक आपकी धर्म पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कुछ लोगों का व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी आपको उन लोगों के साथ स्नेह व प्रेम बनाए रखना पड़ेगा। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु सितम्बर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको अपने अन्दर कमजोरी जैसा अनुभव होगा।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय के सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। सितम्बर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं प्रभावित होंगी। परन्तु द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अप्रैल के बाद जन्म भूमि की यात्रा होगी।

26 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि व्यवसाय संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 26 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान का गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहा है। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी लोगों व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मई के बाद समय कुछ प्रभावित होगा। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई गुप्त शत्रु आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और अक्टूबर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपके कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेन देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोगों की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। अक्टूबर के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका पारिवारिक माहौल ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आप बड़े ही विवेक से काम लें और सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। आप मानसिक रूप से परेशान भी रह सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। अक्टूबर के बाद जीवनसाथी के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

11 मई के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी अनुशासनहीन हो सकती है, जिससे उनकी उन्नति में किंचित व्यवधान आ सकता है, परन्तु अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। 11 मई के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी ही भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें। 7 अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे

शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

मई के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी-मोटी यात्रा कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप दुखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि मई के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना ही आप अपना धर्म समझेंगे। अक्टूबर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे।

- वीरवार के दिन केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में धारण करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर नित्य उसका पूजन करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करने की काशिश करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। हालांकि अप्रैल से समय काफी शुभ हो रहा है। कार्य व्ययवाय में सुधार होगा। वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे।

आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधी में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो अच्छी सफलता मिलेगी। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। 4 नवम्बर के बाद समय नौकरी करने वालों के लिए शुभ नहीं है। आपके वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेत उत्पन्न हो सकते हैं तथा कार्य स्थल का वातावरण खराब हो सकता है।

धन संपत्ति

द्वितीय स्थान के शनि कुछ अनावश्यक खर्चे ला सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाने की जरूरत है तथा जोखिम भरे कार्यो में धन निवेश करने से बचें।

5 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होते ही धनागम के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे तथा आपका चौमुखी विकास होगा। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च होगा। मित्र या भाइयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। अतः आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आपकी पत्नी के साथ समन्वय मधूर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

आपके भाइयों की उन्नति होगी। पिता जी के लिए भी यह समय शुभ है। 2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। आप उच्च मान संमान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके सामाजिक प्रभाव व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्र में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। परन्तु 4 नवम्बर से समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं। पंचमस्थ केतु पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। अतः आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उनकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

3 मार्च के बाद समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु 2 जून के बाद समय फिर से अच्छा हो जाएगा तथा उसके बाद पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। उस समय के अंतराल में बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे जिससे आप उनसे प्रसन्न रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है, नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हालांकि 2 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना प्रारम्भ हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन की ग्रहण करेंगे। अर्थात् सादा खाना उच्च विचार वाली युक्ति आप पर पुर्ण रूप से चरितार्थ होगी। 4 नवम्बर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है उसके बाद आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को ज्यादा सफलता नहीं मिलेगा।

यात्रा-तबादला

3 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होंगी। 4 नवम्बर से सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होने का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गौशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान करेंगे। 2 जून के बाद आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

- सोमवार के दिन शिव जी पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- वीरवार के दिन केला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं प्रथम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कई कार्यों में सफल होंगे। व्यापार में बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही कदम बढ़ाएं। कानूनी मामलों से बचें क्योंकि वर्षारम्भ में शनि एवं गुरु की युति अच्छी नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। अधिक आत्मविश्वास आपको मुश्किल में डाल सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। आप अपने मनपसंद क्षेत्र में अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

अप्रैल से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें नहीं तो कार्य व्यवसाय में नुकसान हो सकता है। परन्तु जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आप प्रसन्न रहेंगे व अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। 11 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

आमदनी में बढ़ोत्तरी होने के कारण आप बचत करने में भी सफल रहेंगे। किसी वसीयत के माध्यम से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप धन को धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद धन हानि के योग हैं अतः कोई जोखिम भरा निवेश करने से बचें साथ ही पैसों की सुरक्षा को लेकर चिंतन करें। जून के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। वर्षान्त निवेश के लिए बहुत ही शुभ है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य

आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद अचानक आपकी माताजी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसके नकारात्मक प्रभाव से पूरा परिवार प्रभावित हो सकता है। चतुर्थ स्थान का केतु वैचारिक मतभेद भी करा सकता है। आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक शान्ति एवं सामाजिक उन्नति के लिए उत्तम है। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में और अधिक वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। वर्षान्त आपकी दूसरी संतान के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। आप रोग व्याधियों से दूर होंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा।

खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा। अधिक खान-पान व बाहर का खाना खाने से फूड पॉइजनिंग की सम्भावना है। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें। व्यवहारिक बने रहें। व्यर्थ के कार्यों में समय खराब न करें, इसके फलस्वरूप आप परेशान रह सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें एवं अधिक आत्मविश्वासी न बनें वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह साल मिला जुला रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है। विदेश में वांछित उन्नति के लिए वर्षान्त श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय से संबंधित यात्राओं की अधिकता होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थानान्तरण होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। साल के मध्य में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। कुछ गलत फहमियों से भी आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि 6 मई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेगा।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारू रूप से चलाते रहें। यदि साझेदारी में कार्य कर करे हैं तो 26 सितम्बर के बाद आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। लाभ के साथ-साथ चुनौतियां भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेन-देन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरे निवेश करने से बचें। राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को आर्थिक हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके छोटे

भाई बहनों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

6 मई के बाद पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। लेकिन आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में कुछ कमी आ सकती है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा रहने वाला है। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। 6 मई से जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। उसके बाद पूरा वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

पहले से चली आ रही बीमारी उग्र रूप ले सकती है इसलिए सावधानी बरतें। 26 सितम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। अतः शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन व महामृत्यंजय का जाप कराएं जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। 6 मई के बाद आपको वांछित सफलता मिलेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा रहने वाला है। 26 सितम्बर के बाद नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी।

सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि 26 सितम्बर के बाद दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य पर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे।

- प्रत्येक सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं तृतीर्य भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्य स्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। 10 जून से अगस्त तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आजीविका के क्षेत्र में कुछ कमी आ सकती है, जिससे आय के स्रोत प्रभावित होंगे। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियो को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज भी लेने पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। 22 जून के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन को निवेश न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेशी धन व वसीयत की प्राप्ति होगी। गुप्त रूप से भी आपको धन लाभ होगा। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए श्रेष्ठ है। वर्षान्त में आपके कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। अतः उस समय अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण रहेगा। आपकी माता के लिए यह समय शुभ है। जून के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से नाराज हो सकता है। राहु के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दे सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आपके प्रति बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आएगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों को किसी नौकरी या रिसर्च के कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेते हैं तो सफलता सम्भव है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह बहुत शुभ समय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप कुछ चिन्ता का अनुभव करेंगे। अकारण चिंता करने से कुछ हासिल नहीं होगा। आप चिंताओं से उबरने की कोशिश करें वरना आपको किसी मानसिक रोग अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी विकार का सामना करना पड़ सकता है। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियां हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शिक्षा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला फल देने वाला है। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय काफी श्रेष्ठ है। आपका नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान रहेगा।

राहु के कारण याद करके भूलने की प्रवृति बनेगी। अष्टम स्थान का राहु मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। आपका रुझाान राजनैतिक, तंत्र-मंत्र, विद्या सिद्धि रोमांचकारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे है। 10 जून के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थान की यात्रा होगी। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राएं करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का आरम्भ अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगा। आप चाह कर भी पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। मानसिक अशान्ति के कारण ध्यान योग व मन्त्रोच्चारण में आपका मन नहीं लगेगा। परन्तु काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके भी मिल सकते हैं। व्यापार में पूंजी लगाने वाले नए लोग भी मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम मिलेंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी इच्छाएं पूरी होंगी।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के बाधित मार्ग खुलेंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन लगातार होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी। आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा।

30 जुलाई के बाद किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। अतः पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें, नहीं तो अष्टम स्थान का राहु अचानक धन हानि करा सकता है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपने खर्चों पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस वर्ष आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। समाज में आपका दबदबा बना रहेगा। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही शुभ है। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं, तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से उत्तम हो जाएगा। आपके बच्चे धर्म कार्य व अच्छे कार्यों में समय ज्यादा व्यतीत करेंगे। आपकी आज्ञा के पालन में सदैव तत्पर्य रहेंगे। सितम्बर के बाद नवविवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक रूप से आरोग्य रखने में सहायता करेगी तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करेंगे। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। अष्टम स्थान का राहु जल तत्व राशि होने के कारण कफ, सर्दी तथा जुखाम इत्यादि बीमारियों से पीड़ित कर सकता है। मोटापा तथा पेट संबंधित बीमारी भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तला हुई वस्तु का सेवन कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहने वाला है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वाले के लिए बहुत ही शुभ है। इन लोगों को वांछित उन्नति मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने

लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी छोटी बड़ी यात्राएं खूब होंगी। धार्मिक यात्रा का अधिक आनन्द लेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राएं प्रभावित होंगी।

नौकरी करने वालों के लिए मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग बने हुए हैं। आप अपने जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अनुकूल है। विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा नीली वस्तु का दान करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में बुधवार के दिन श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें, क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ नहीं है। गैरकानूनी क्रिया-कलापों में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि होने की संभावना हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।

नौकरी करने वाले जातकों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बना कर रखने चाहिए। फरवरी के बाद व्यवसाय करने वालों को अपनी व्यावसायिक प्रगति में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। बिजनेस में धीमी चाल से प्रगति होगी। शेयर बाजार एवं सट्टेबाजी आधारित गतिविधियों में किस्मत अजमाने का प्रयास न करें अन्यथा आपका धन लंबे समय के लिए फँस सकता है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय आपको आर्थिक हानि पहुँचा सकते हैं। किसी भी बिजनेस के लिए सोच समझकर ही साझेदार शामिल करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए उत्तम रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

आर्थिक मोर्चे पर आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा तथा दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापिस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। मंहगी व सुख सुविधा वाली वस्तुओं में धन लगा सकते हैं जो आपके लिए धन का अपव्यय ही होगा इसके परिणामस्वरूप आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपके पत्नी के साथ संबंध खराब हो सकते हैं। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के

लिए अच्छा नहीं होता, अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड़वाहट आने की संभावना है।

माता व बड़े-बुजुर्गों का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है। किसी करीबी व्यक्ति के साथ आपकी कहा-सुनी हो सकती है। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। आपके साथ विश्वासघात हो सकता है यानी आप जिन लोगों पर भरोसा करते हैं वे धोखा दे सकते हैं।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है, परन्तु 16 फरवरी के बार समय सामान्य हो जाएगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का पूरा फल मिलेगा।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं तथा उनकी उन्नति में व्यावधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखो का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मवश्वास में कमी आ सकती है।

लंबे समय से चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा। उसके उपचार में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। आक्स्मिक चोट लगने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। अनिद्रा की शिकायत आपको परेशान कर सकती है। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें नहीं तो मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से सम्बन्धित कार्य करते समय सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएँ। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो के लिए यह साल सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी भी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। दी गई परीक्षाओं का परिणाम

हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में धार्मिक यात्राएं करने का अवसर प्राप्त होगा। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ेगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(07/01/2013 - 08/01/2032)

शनि की महादशा आपकी कुण्डली में 07/01/2013 को आरम्भ और 08/01/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में शनि षष्ठम भाव में अवस्थित है। इसे एक खतरनाक ग्रह माना जाता है। यह निश्चित रूप से एक अशुभ ग्रह है और परिश्रम के फल की प्राप्ति में विलम्ब करता है, किन्तु उससे वंचित नहीं करता। यह जातक के धर्य की परीक्षा लेने के लिए विभिन्न बाधाएं उत्पन्न करता है और उसे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में षष्ठम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि अष्टम, द्वादश और तृतीय भाव पर है और यह इन ग्रहों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। षष्ठम भाव बीमारी, रोग, भोजन, रोजगार, सहायकों या नौकरों, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी और तीव्र दुःख का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

षष्ठम भाव में अपनी ही राशि में स्थित महादशा स्वामी शनि भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। इसलिए आप लापरवाही के कारण बीमार हो सकते हैं। लापरवाही के कारण रोग जटिल हो सकते हैं और गंभीरता की सम्भावना है। स्थिति अन्ततः असाध्य हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

शनि की षष्ठम भाव में स्थिति अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए अनुकूल योग नहीं है। आपकी अपने सगे-संबंधियों के साथ-साथ अनेक लोगों से शत्रुता हो सकती है और आप लोगों के मातहत रहेंगे जो आपकी अर्थ तथा सम्पत्ति में वृद्धि के लिए शुभ नहीं है।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप दूसरों के अधीनस्थ होंगे। किन्तु ठेकेदारी, खनन, राजगीरी आदि में लाभ की सम्भावना है। आप इन क्षेत्रों में साहसी होंगे किन्तु झगड़ालू भी होंगे जो आपको हठी और अतिभोजी बनाएगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका विवाह आपके जान पहचान के जातक से हो सकता है। पारिवारिक जीवन ईर्ष्या और विवाद से भरा रहेगा क्योंकि आपके जीवन साथी आपको कुछ विशेषाधिकार से वंचित रखेंगे और कर्त्तव्य पालन नहीं करेंगे। उनका यह आचरण आपके जीवन को प्रभावित और पारिवारिक जीवन को दुःखमय बनाएगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा या ज्ञान वर्द्धन अथवा बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के लिए समय बहुत अनुकूल नहीं है।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(12/12/2023 - 12/07/2025)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 07/01/2013 को प्रारंभ होकर 08/01/2032 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। चंद्रमा मन और माता का कारक है।

इस अवधि में आप बाधाओं के बावजूद कार्यक्षेत्र में दक्षता और सफलता प्राप्त करेंगे। समान में लोकप्रिय होंगे; उच्चपद प्राप्त होगा। घरेलू जीवन भी सुखी रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(12/07/2025 - 21/08/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 07/01/2013 को प्रारंभ होकर 08/01/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 12/07/2025 को प्रारंभ होकर 21/08/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

द्वितीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 5, 8, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको लक्ष्य की प्राप्ति में बाधाएं आ सकती हैं मगर आय अच्छी होगी, धनी बनेंगे। इसके बावजूद आप कंजूस हो सकते हैं। परिवार में अशांति हो सकती है। कटु वचन बोलने से बचें अन्यथा परिवार और समाज में परेशानियां आ सकती हैं। नेत्र रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। ऊर्जा का दुरुपयोग न करें। इसका सही दिशा में उपयोग लाभकारी होगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

महादशा :- बुध
(08/01/2032 - 07/01/2049)

बुध की महादशा 08/01/2032 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 07/01/2049 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके

पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हें। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा। आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्भ कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को

हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(08/01/2032 - 06/06/2034)

आपके लिए बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 08/01/2032 को प्रारंभ होकर 06/06/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। ध्यान, तंत्र-मंत्र आदि में रुचि होगी। अंतर्ज्ञान शक्ति का विकास हो सकता है। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। प्रगति में बाधा आ सकती है। मामा पक्ष से लाभ होगा। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी, संपत्ति से आय उत्तम होगी, घरेलू सुख रहेगा। माता धनी होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, प्रसिद्धि, उच्चाधिकारियों से सहयोग, धनलाभ, घरेलू सुख, उत्तम शिक्षा का संकेत है। आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, शिक्षा पूर्ण हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो किसी परिवर्तन के बाद प्रगति हो सकती है; अचानक लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से सहयोग करने पर लाभ होगा। व्यापारियों को स्पर्धा का सामना करना होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। नेत्रों और त्वचा के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को हरी घास और सब्जी खिलाएं।

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(06/06/2034 - 03/06/2035)

आपके लिए बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 06/06/2034 को प्रारंभ होकर 03/06/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपको निवेश या सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। कार्य में कर्मठ होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। संतान के मामलों में रुचि होगी, उनसे खुशी मिलेगी। मंत्र-यंत्र में रुचि लेंगे। सफलता और धन का योग है। जीवन में सब सुख-सुविधाएं रहेंगी। कार्य पूर्ण होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, सम्मान में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि

होगी। माता को धनलाभ होगा, रिश्तेदार सहयोग करेंगे, सुख-सुविधाएं रहेंगी, धन का संचय होगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, साझेदारी से लाभ, व्यापार में लाभ, विरोधियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान का आत्मविश्वास उत्तम रहेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्राएं हो सकती हैं; विरोधियों पर विजय होगी। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परितर्वन हो सकता है, अप्रत्याशित लाभ होगा। व्यापारी धनी बनेंगे।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(03/06/2035 - 03/04/2038)

आपके लिए बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 03/06/2035 को प्रारंभ होकर 03/04/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। सट्टेबाजी या निवेश से लाभ हो सकता है। आप धनी बनेंगे, खुद का मकान और वाहन हो सकते हैं। किस्मत साथ देगी। सुअवसर खूब मिलेंगे। कला में रुचि होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। घरेलू सुख होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे, खुश रहेंगे और उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता प्रसन्न और समृद्ध होंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचानक धनागम होगा, सुख के साधन क्रय करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से मधुर संबंध, खुशी, धन, कला में रुचि, सौभाग्य, घर और कार्यालय में सुखद वातावरण और सुखी जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी, परिश्रम से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में फ़ायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(03/04/2038 - 07/02/2039)

आपके लिए बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/04/2038

को प्रारंभ होकर 07/02/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप अध्यात्म और दर्शन में रुचि लेंगे। स्पर्धी आपको परेशान करने की कोशिश करेंगे मगर आप विजयी रहेंगे। कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। शत्रु परास्त होंगे; उत्तम स्वास्थ्य, धन, उच्च पद, प्रसन्नता, सफलता और लाभ का संकेत है। मुकदमे में जीत होगी। मातहत सहयोग करेंगे; कार्यालय में सुविधाएं उत्तम होंगी।

आपके जीवनसाथी को धन, उच्चपद, विरोधियों पर विजय का संकेत है। आपके पिता के लिए अचल संपत्ति, सरकार से लाभ और सब सुखों का योग है। माता को अध्यात्म में रुचि होगी, भाग्य साथ देगा, यात्रा होगी।

आपके भाई-बहनों की साख अच्छी होगी, कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, धनलाभ, उत्तम शिक्षा और खुशी का संकेत है। आपकी संतान के वातावरण में परिवर्तन हो सकता है, शिक्षा पूर्ण होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक प्रयास से सफल हो सकते हैं। परामर्शदाता प्रगति करेंगे। व्यापारियों को लाभ होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(07/02/2039 - 09/07/2040)

आपकी बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 07/02/2039 को प्रारंभ होकर 09/07/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। शिक्षा उत्तम रहेगी। उपलब्धियों द्वारा प्रसिद्धि मिलेगी। उपहार प्राप्त हो सकते हैं, खुशियों और घरेलू सुख का संकेत है। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। साहित्यिक प्रतिभा और बारीकी से काम करने के लिए प्रशंसा मिलेगी। अचल संपत्ति और खेती से लाभ हो सकता है। वाहनसुख रहेगा। जीवन में खुशियां और सुख-सुविधाएं मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी की परिवार से घनिष्ठता बढ़ेगी । आपके पिता के धन में वृद्धि होगी; परिवार से खुशियां मिलेंगी। माता को साझेदारी से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है, खुशियां मिलेंगी, उपहार-वसीयत आदि से लाभ होगा, साझेदार से लाभ होगा, व्यर्थ की यात्रा संभव है, खर्चे बढ़ेंगे, कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आपकी संतान परीक्षा और स्पर्धा में

सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(09/07/2040 - 06/07/2041)

आपके लिए बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 09/07/2040 को प्रारंभ होकर 06/07/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धन कमाएंगे। कटु वचन बोलने से बचें। घरेलू सुख उत्तम रहेगा। कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। विरासत द्वारा या साझेदार से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यात्रा, सफलता, प्रसिद्धि, उत्साह द्वारा लक्ष्य प्राप्ति का संकेत है। जायदाद के मालिक बन सकते हैं।

अध्यात्म क्षेत्र में उत्तम, सकारात्मक कार्य कर सकते हैं। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। प्रोन्नति और वांछित स्थान पर तबादला संभव है। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता शक्तिशाली और सफल बनेंगे। माता धनी और सफल होंगी, निवेश से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के खर्चे बढ़ सकते हैं, सफलता में बाधा, अचल संपत्ति की खरीद, उत्तम शिक्षा के संकेत हैं। आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसिद्धि, सफलता और उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(06/07/2041 - 23/01/2044)

आपके लिए बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 06/07/2041 को प्रारंभ होकर 23/01/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके धन में वृद्धि होगी। आर्थिक प्रगति के लिए बहुत से अवसर मिलेंगे। चाचा से संबंध उत्तम रहेंगे। व्यापार में विस्तार होगा, उत्तम लाभ होगा। कार्य पूर्ण होंगे, प्रसिद्धि मिलेगी। दूसरे लोगों से सहायता मिलती रहेगी। निवेश या सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। संतान का जन्म हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। धन का संचय होगा।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को कार्यों में सफलता मिलेगी। माता को अचानक लाभ हो सकता है, अचानक कोई घटना घट सकती है, यात्रा संभव है। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, भौतिक सुख, उच्चपद, सौभाग्य, आत्म-विश्वास, आर्थिक उन्नति, दूसरों से सहायता का संकेत है।

आपकी संतान को सहकर्मियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापार में विस्तार होगा, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। परामर्शदाताओं को हर प्रकार से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनजा और तिल दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(23/01/2044 - 30/04/2046)

आपके लिए बुध की महादशा 08/01/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 23/01/2044 को प्रारंभ होकर 30/04/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपको अचानक धनलाभ हो सकता है। जायदाद प्राप्त हो सकती है। साझेदार के माध्यम से या विरासत से धनलाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, धनलाभ होगा। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध रहेंगे। मधुर वाणी के कारण प्रशंसा होगी। शिक्षा उत्तम होगी; धन का संचय होगा। माता से संबंध मधुर रहेंगे। अचल संपत्ति, वाहन और भोग-विलास के साधन प्राप्त होंगे। शिक्षा उत्तम होगी। अध्यात्म में रुचि होगी। शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे, यात्रा होगी।

आपके जीवनसाथी धन का संचय करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता भाग्यशाली रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम स्वास्थ्य, शत्रुओं पर विजय, रोज़गार, कार्यक्षेत्र में सफलता, धन और सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, बहुत से मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति ओर सुख के साधन क्रय कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। शुभत्व में

वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

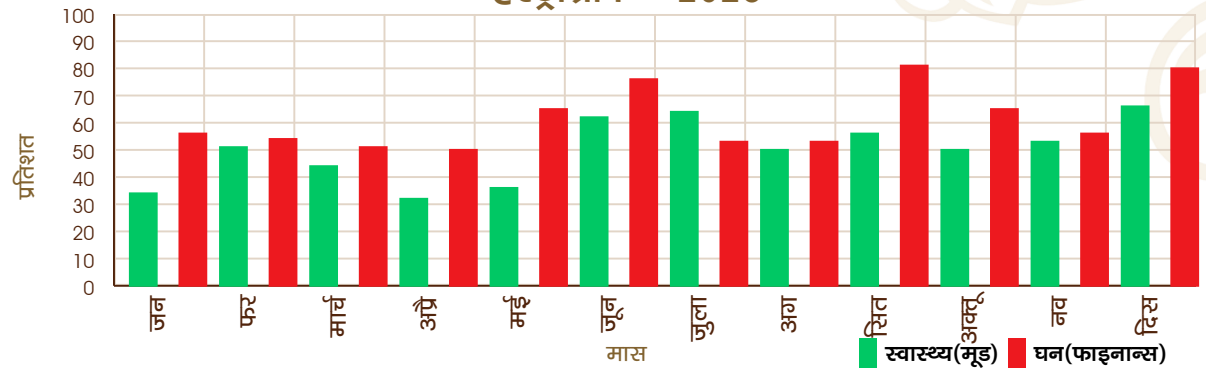

एस्ट्रोग्राफ - 2026

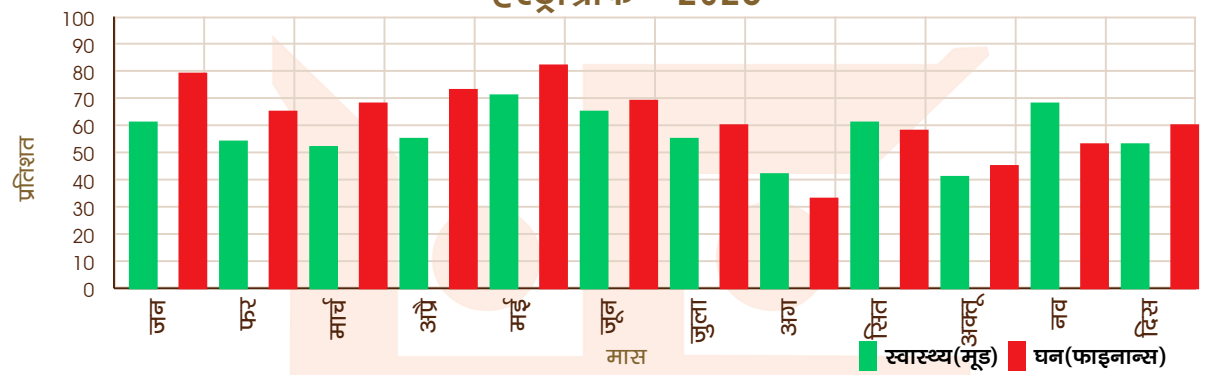

एस्ट्रोग्राफ - 2027

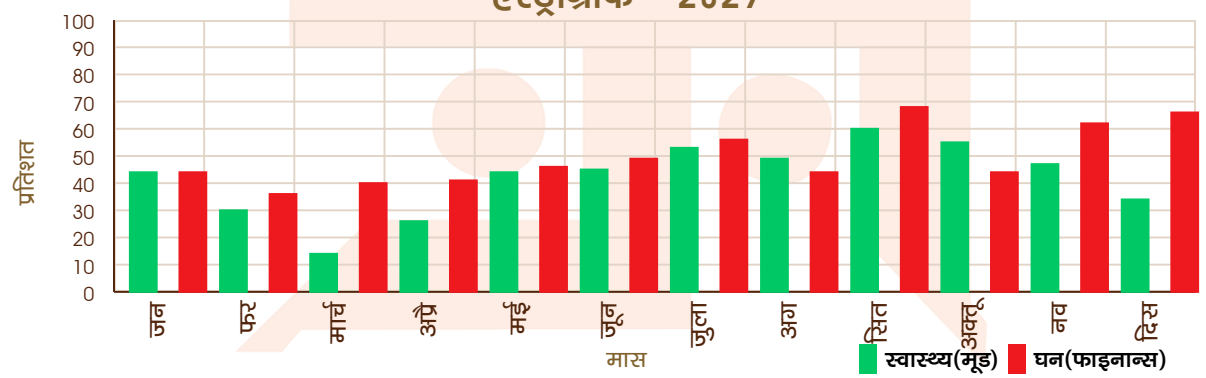

एस्ट्रोग्राफ - 2028

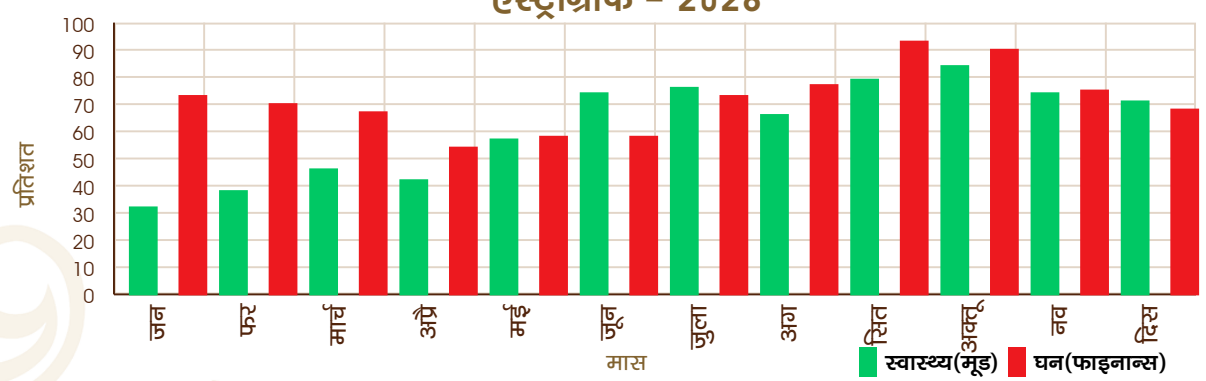

एस्ट्रोग्राफ - 2029

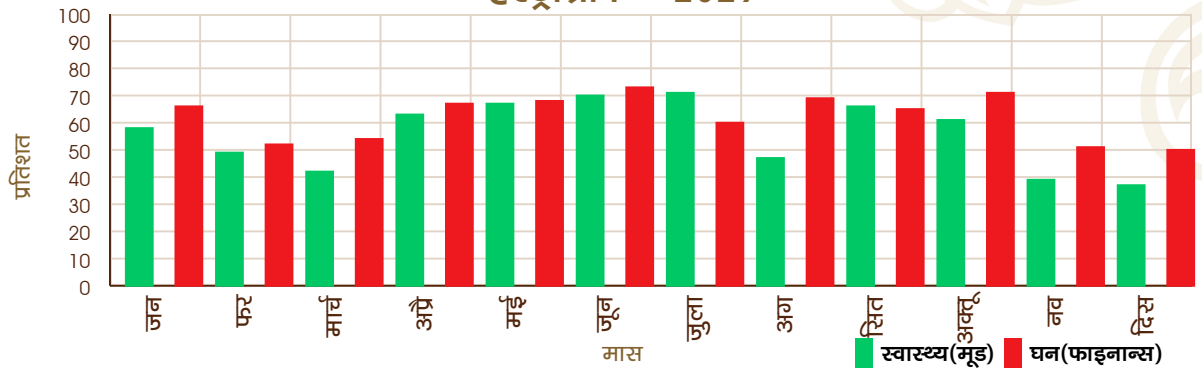

एस्ट्रोग्राफ - 2030

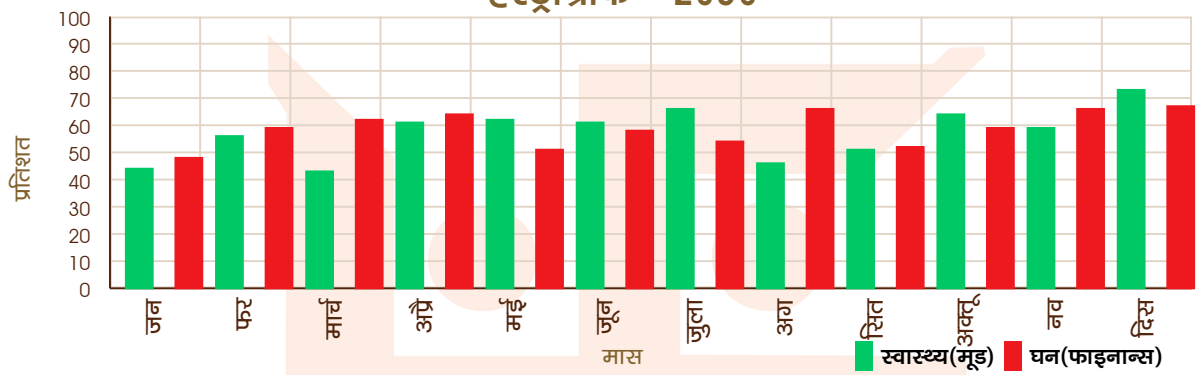

एस्ट्रोग्राफ - 2031

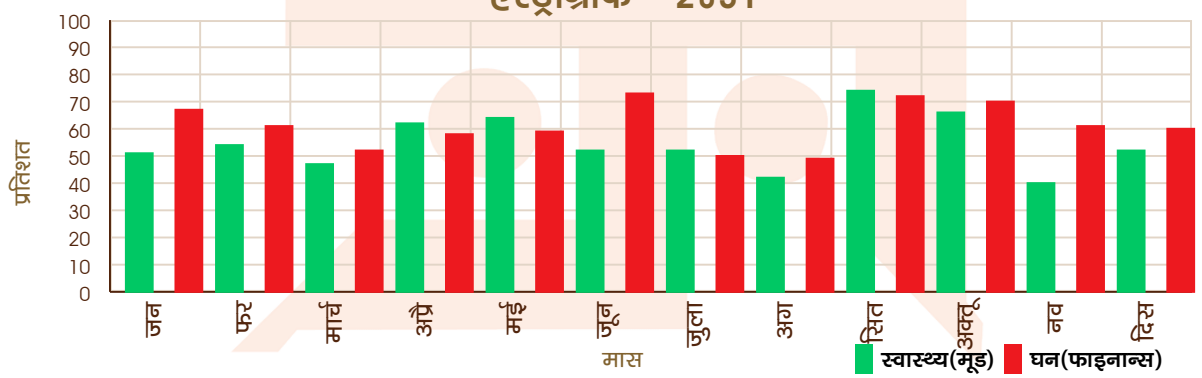

एस्ट्रोग्राफ - 2032

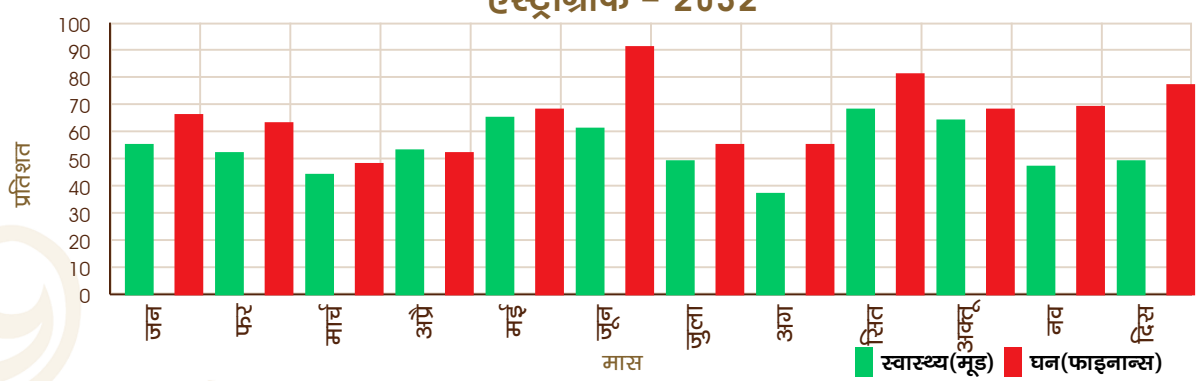

एस्ट्रोग्राफ - 2033

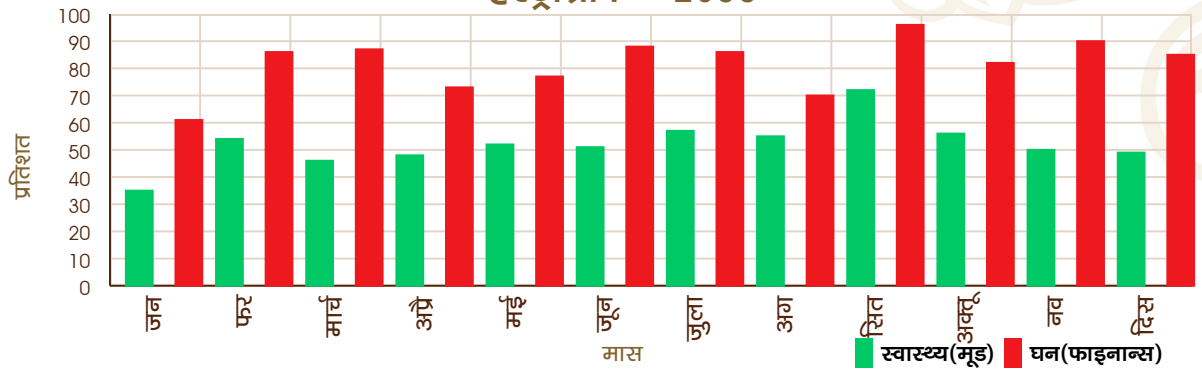

एस्ट्रोग्राफ - 2034

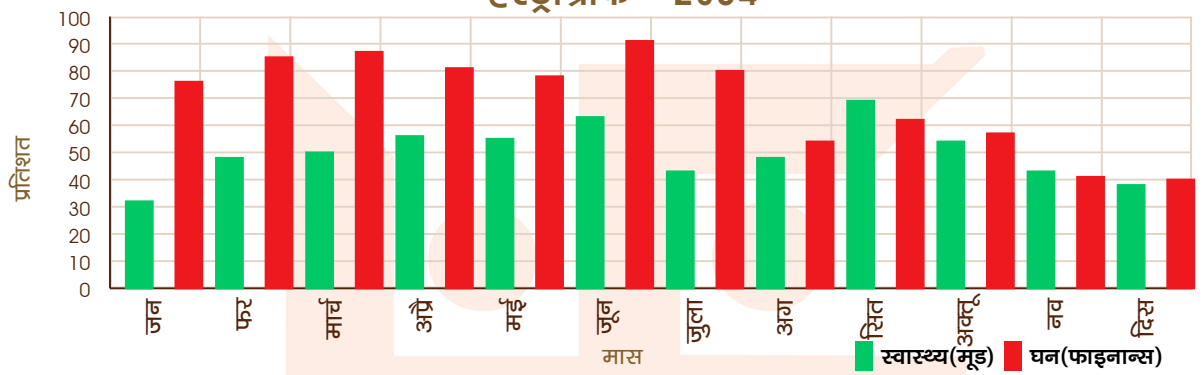

एस्ट्रोग्राफ - 2035

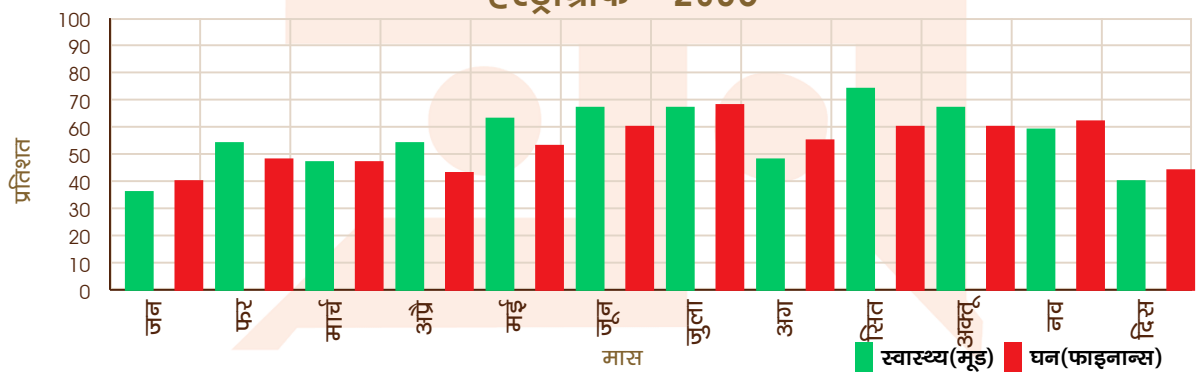

एस्ट्रोग्राफ - 2036

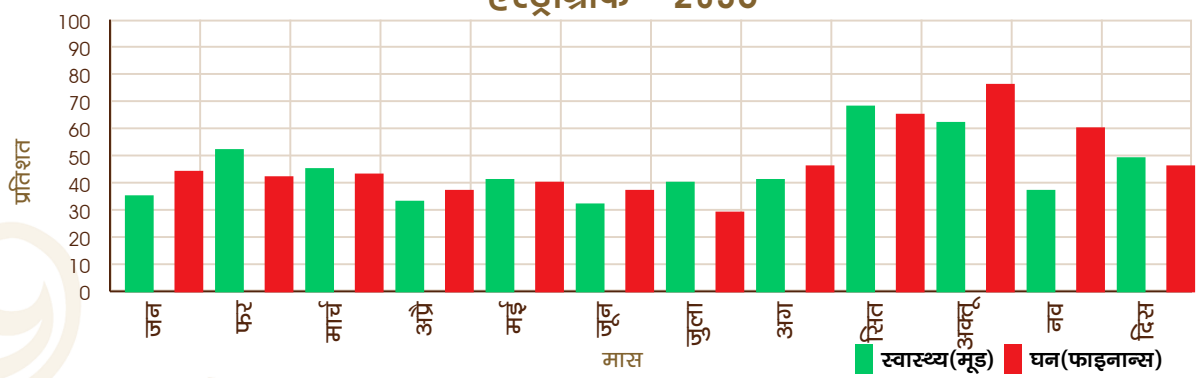

एस्ट्रोग्राफ - 2037

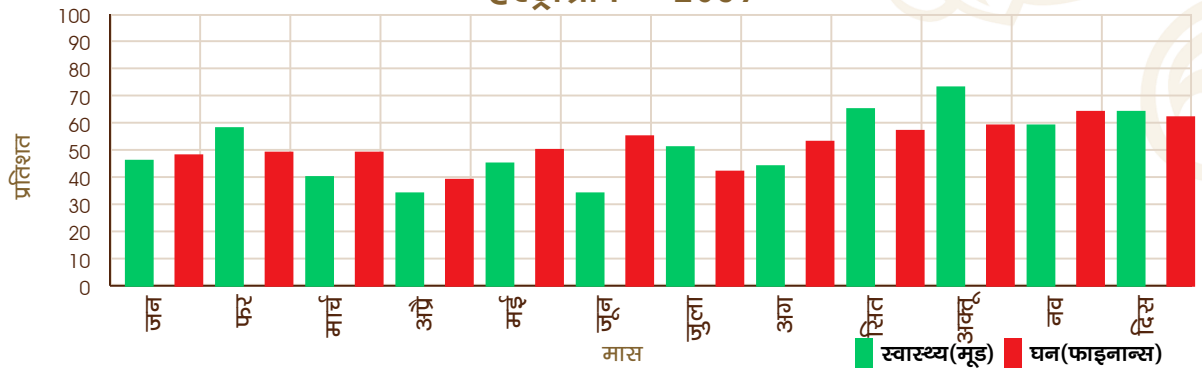

एस्ट्रोग्राफ - 2038

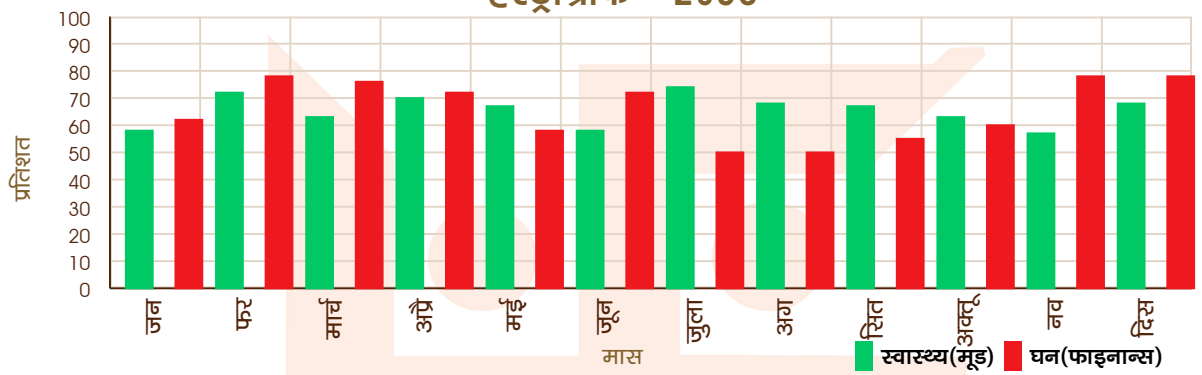

एस्ट्रोग्राफ - 2039

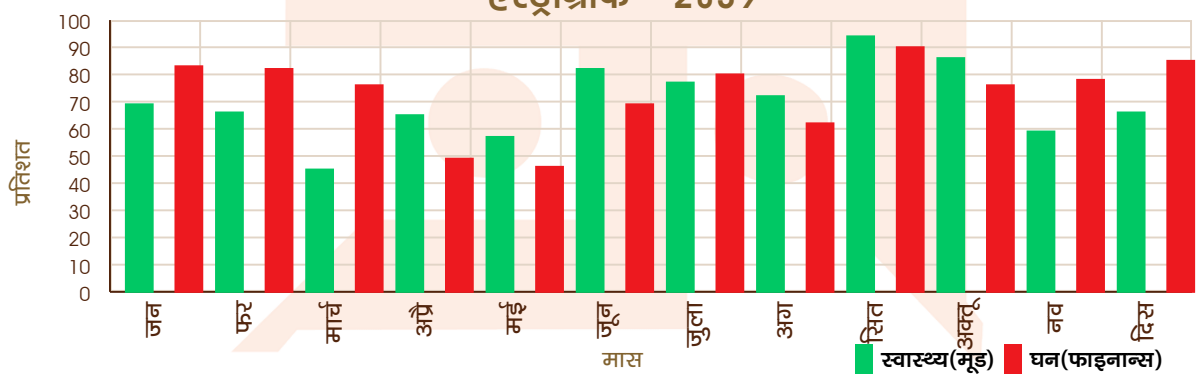

एस्ट्रोग्राफ - 2040

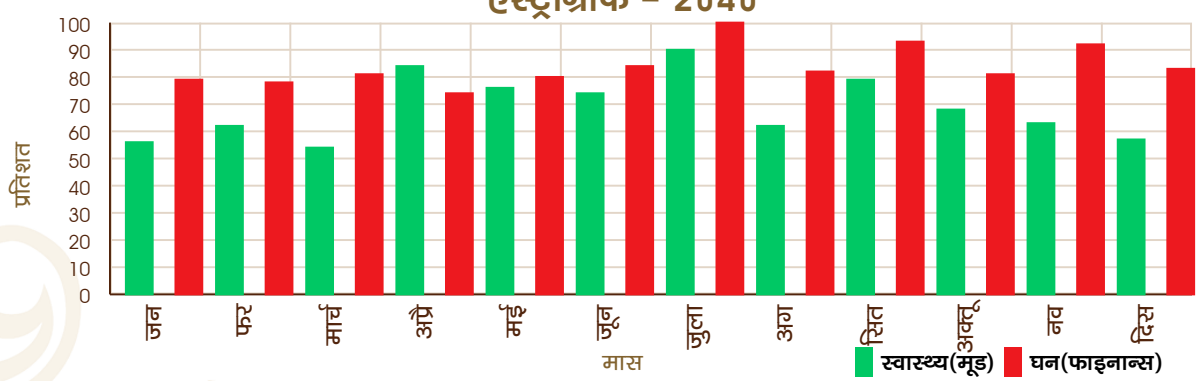

एस्ट्रोग्राफ - 2041

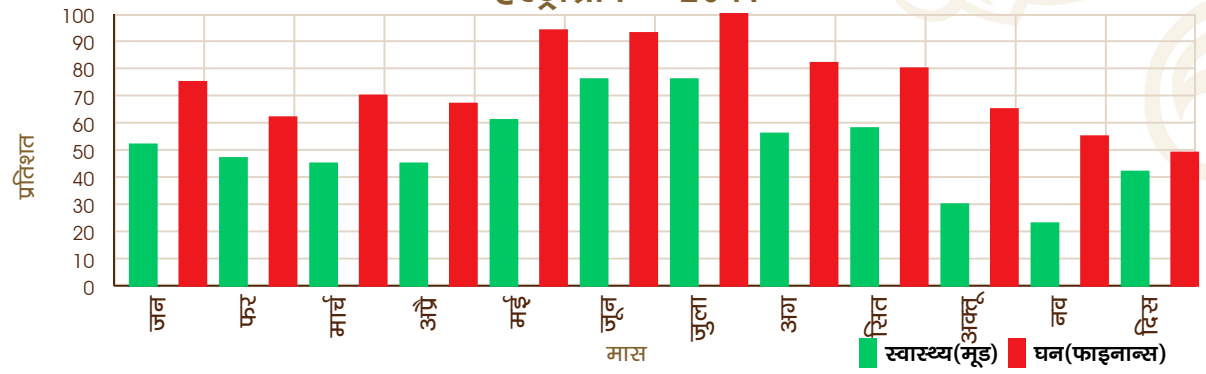

एस्ट्रोग्राफ - 2042

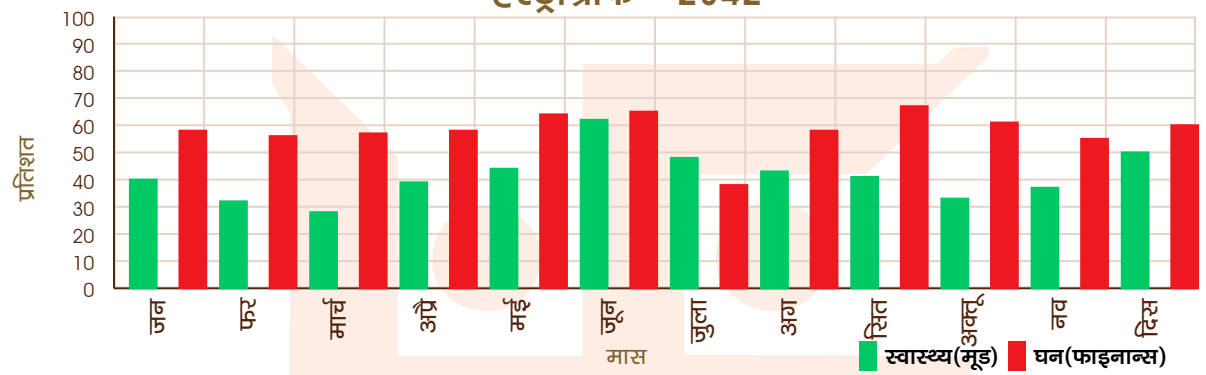

एस्ट्रोग्राफ - 2043

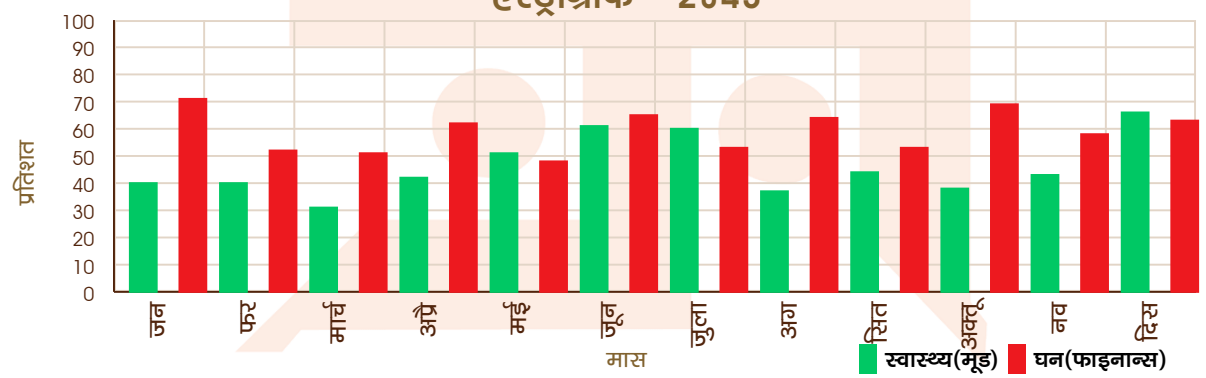

एस्ट्रोग्राफ - 2044

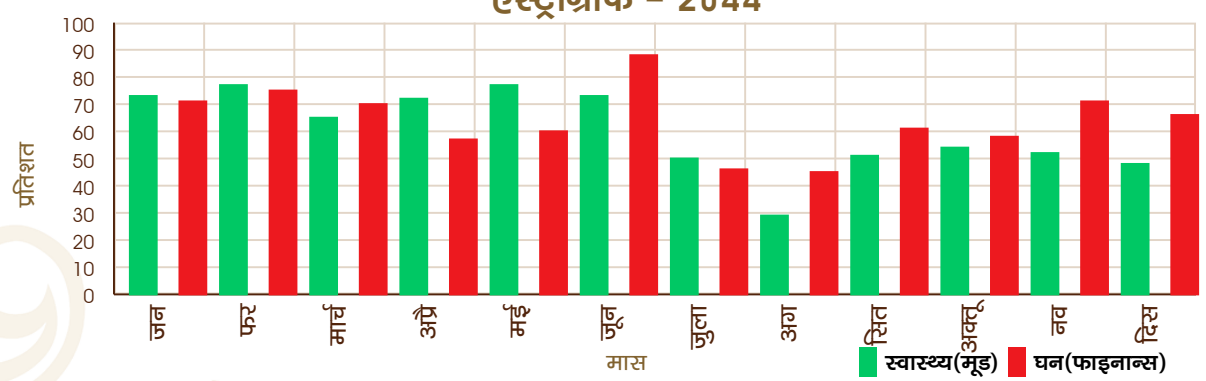

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,राहु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्र्याद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे।

नीचकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
पंचादिभिर्जनपदप्रभवोऽपि सिद्धो
हीनैः क्षितीश्वरसमो न तु भूमिपालः।।
।। सारावली ।। अ. 35/श्लोक 2।।

यदि जन्म के समय में पांच या उससे अधिक ग्रह स्वराशि, उच्चराशि, मूल त्रिकोण में हो, तो ऐसा व्यक्ति सामान्य कुल में उत्पन्न होकर भी राजा के समान सुखों का उपभोग

करता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 242 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह राजयोग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। ज्योतिष शास्त्र में यह सर्वश्रेष्ठ राजयोग माना जाता है। इसके प्रभाव से जीवन में आप उच्च श्रेणी के सुखों का उपभोग करेंगे। समाज में आप प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे। अपने परिश्रम, योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से आप सामान्य स्तर से उच्चस्तर प्राप्त करने में सफल होंगे। देश-विदेश में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा होगी।

अमलयोग

चन्द्राद्व्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो

सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,केतु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।
शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठस्थान में शनि षष्ठेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक को विशेषकर गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,सूर्य योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको गुल्मरोग (त्वचा रोग) होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के

मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।